मिथिलाक बेटी

मिथिलाक बेटी

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

MITHILAK BETI (मिथिलाक बेटी)
A Play in Maithili Language by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-87675-37-7
दाम: 200/- (भा.रु.)

चारिम संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2009, श्रुति प्रकाशन, दिल्ली)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल

फुलवाड़ी लगौनिहार एवम्

नव विहान अननिहारकेँ

समरपित

❑

अनुक्रम

आमुख

1.

मिथिलाक बेटी नामसँ ई जगदीश प्रसाद मण्डल जीक पहिल नाट्य रचना छी। प्रस्तुत नाटक समस्या प्रधान अछि। मैथिल समाज आ वृहत रूपमे भारतीय समाजमे जाति-पाति तँ छइहे, निष्ठावान कर्मनाथ अपन बेटीक बिआह बिनु दहेजक करता तइ क्रममे दीर्घ कथोपकथनक माध्यमसँ ई देखौल गेल अछि। ई नाटक पठनीय भऽ सकै छइ। विशेषता ई छै जे ई नाटक अपन समाजमे पसरल कुरीतिपर आँगुर रखैत अछि। कर्मनाथ विशेष रूपसँ आदर्श चरित्रक रूपमे उभरल मुदा आशा करै छी जे मंडलजी ग्राम्य जीवनमे रहि कऽ अनेक समस्यासँ ग्रसित आ अनेक भाव स्तरपर जीवित लोक-समाजकेँ अप्पन रचना सभमे अहिना रेखांकित करैत रहता।

रामेश्वर प्रेम, निर्मली, जिला सुपौल।

2.

श्री जगदीश प्रसाद मंडलजीक मिथिलाक बेटी नाटक पढ़ल, ऐमे आधुनिक सामाजिक समस्याक श्री मंडलजी द्वारा नीक चित्रण भेल अछि। आइ समाज दहेजक बिमारीसँ ग्रस्त अछि। एकरा नव जीवन प्रदान केनाइ सभ व्यक्तिक दायित्व अछि। मात्र कर्मनाथे नहि, ऐ समस्यासँ लड़बाक काज सभ लोकक सामाजिक धर्म अछि। लेखक अपन भावनाकेँ अभिव्यक्ति मात्र केने छैथ। दिशा स्वयं समाजकेँ तकबाक अछि।

कथा मूलतः मिथिलाक धरतीक उपज अछि। आ ई खाली मिथिलाक नहि, भारतवर्षक समस्या अछि। नाटक विधामे ई कमजोर भलेँ देखा पड़ए मुदा कथोपकथन सामाजिक विरुपताकेँ निरुपित करबामे सक्षम अछि। नाटक लेल कहल गेल अछि- नाटक जीवनक अनुकृतिकेँ शब्दगत संकेतमे संकुचित कऽ तकरा सजीव पात्र द्वारा एकटा चलैत-फिरैत सप्राण रुपमे अंकित कएल जाइत अछि। नाटक जीवनक सांकेतिक अनुकृति नहि, सजीव प्रतिलिपि छी।

मण्डलजी मैथिली साहित्यमे सशक्त उपन्यासकार आ कथाकारक रुपमे नवोन्मेष प्राप्त कऽ रहल छैथ। हुनकामे भाव, भाषा, शैली आ मोहाबराक जबर्दस्त जमघट अछि। हमर आकांक्षा अछि जे ओ ऐ तथ्य सभकेँ समन्वित रूप दऽ मैथिली साहित्यक श्री वृद्धिमे सहयोग करैथ।

रामजी प्रसाद मंडल, निर्मली, जिला सुपौल।

अप्पन बात

पहिल पुष्प रहने सफलताक आशा तँ नहि मुदा प्रेरणा आ प्रोत्साहनक तँ अछिए। मैथिलीक फुलवाड़ीकेँ पटबैले मालीक जरूरत तँ अछिए, ऐ आशाक संग मिथिलाक प्रसिद्ध नाटककार श्री रामेश्वर प्रेमजी, अपन अमूल्य समय दए मिथिलाक बेटी नाटक पढ़ि हर्षसँ भूमिका लिखबाक कष्ट केलैन, तइले आभारी छी।

श्रुति प्रकाशन–दिल्ली–क सहयोग एहेन उर्जा हृदैमे भरि देलैन जइसँ फुलवाड़ीमे फूल लगबैक उत्साह दिनानुदिन बढ़ले जा रहल अछि। श्रुति प्रकाशनक टीमक संग श्री गजेन्द्र ठाकुरजीक हंस दृष्टि लेल कोनो शब्द शब्दाकोषमे नहि अछि।

सहयोगी सभकेँ साधुवाद।

जगदीश प्रसाद मण्डल

पहिल अंक

(कर्मनाथक डेरा। बहराक कोठरीमे कर्मनाथ)

कर्मनाथ : (घड़ी देख) पौने पाँच बजि रहल अछि, किएक ने अखन धरि बच्चा सभ पढ़ि कऽ आएल। भऽ सकैए जे बाटमे किछु देखए लगल हुअए। ओना हमहूँ आन दिन पाँच बजेक बादे ऑफिससँ अबै छेलौं, मुदा आइ किछु पहिनहि आबि गेलौं। केना ने अबितौं, आन दिन तेते काज रहै छेलए जे ओकरे निपटबैमे अबेर भऽ जाइ छल, मुदा आइ तँ महगीक विरोधमे कर्मचारी सबहक हड़ताल ऑफिसे बन्न कऽ देलक। खाएर जे हौउ, किछुकालमे तँ सभ आबिये जाएत।

(कहि कुरसीपर बैस अखबार पढ़ए लगैत)

(चम्पा आ चमेलीक आगमन। दुनूकेँ हाथमे झोरा। एकटा झोरामे चाउर, दालि, तरकारी आ दोसरमे दूधक डिब्बा, चाह पत्तीक डिब्बा, छोट-छोट पुड़ियामे मसाला, नूनक एकटा पैकेट आ शीशीमे करूतेल।)

चमेली : बजारमे आगि लगि गेल अछि। बाप रे बाप, एना केतौ महगी आबए! (दूधक डिब्बा निकालि) जे वौस कीनैले

जाउ, अग्गहसँ बिग्गह दाम। केना लोक कोनो चीज खाएत? जे दूधक डिब्बा बीस रुपैआमे कीनै छेलौं, आइ अट्ठाइस रुपैआमे देलक। जे चाहपत्तीक डिब्बा (डिब्बा देखबैत) दस रुपैआमे दइ छल ओकर दाम बारह रुपैआ लेलक। कोनो की एक्के-दुइए-टा चीजक दाम बढ़ल, सभ चीजक दाम अकास ठेकल जाइए। तहूमे नोकरिया जिनगी, सभ चीज पाइये हाथे हएत। सालमे एक्को दिन एहेन अवंच नै रहैए जइ दिन केकरो-ने-केकरो तगेदा नहि सुनै छी।

कर्मनाथ : केते अनघोल केने छी। बजैत-बजैत होइए जे बताहि भऽ जाइ। जेतै देखू तेतै महगीक चर्चा! बजैत तँ सभ अछि जे देशव्यापी महगी भऽ गेल। मुदा एकटा बात कहू जे महगी केतए-सँ आएल। ओकरा अबैत कियो ने देखलक। अगर जँ अकासक रस्तासँ हवाइ जहाजपर आएल तँ ओकरा हवाइये फिल्डपर किए ने रोकल गेल। जँ से नहि, पानिक रस्तासँ आएल तँ पनियाँ-जहाजक बन्दरगाहमे ढुकैये किए देल गेल। जँ सेहो नहि, माटियेक रस्तासँ आएल तँ ओकरा सिमानेपर ने किए रोकल गेल। मुदा से तँ किछु नइ भेल, तखन कोन दोग देने चोर जकाँ महगी चलि आएल, जे एते नमहर देशमे, एते लोककेँ एक्केबेर चद्दैर जकाँ, ओढ़ा देलक..?

चमेली : अहाँ अहिना नून-तेल मिला बातकेँ बतंगर बना बजैत रहै छी। एतबो ने बुझै छिऐ जे बड़का-बड़का लोकक कहब छै जे अधिक उपजाबाड़ी भेलासँ चीजक दाम कम होइ छै आ कम भेने दाम बेसी होइ छइ। जइसँ दामक घटती-बढ़ती होइ छइ। हरिदम रेडियोओ मे कहै छै आ

अखबारोमे लिखै छै जे खेतो आ करखन्नोमे बेसी पैदावार भेल हेन।

कर्मनाथ : तखन ई महगी किए भेल?

(माइक बाँहि पकैड़, डोलबैत चम्पा)

चम्पा : गे माए, तूँ जे कहलीही उ सोझका बात कहलीही जे हमहूँ हाइये स्कूलसँ पढ़ैत एलौं। मुदा अइकेँ तरमे असल बात अछि। बड़का-बड़का पाइबला वेपारी सभ जे अछि ओ खेतोक उपजाकेँ आ करखन्नोक वौसकेँ कीनि लइए आ ओकरा नमहर-नमहर गोदाममे जे माटिक ऊपरो आ माटिक तरोमे बनौने अछि तइमे डिक दइए। जइसँ वौस घेरा जाइए। घेरेलासँ जखन वौस निंग्हैट जाइ छै, तखन जा कऽ ओ सभ-वेपारी कनी-कनी करि कऽ निकालि-निकालि महग करि कऽ बेचैए।

चमेली : (मुँह चमकबैत) गोदाममे जे वौस नुकबैए ओकरा जनता आ सरकार नै देखै छइ?

चम्पा : ऊँह! गे तेहेन ठीम रखै छै जे लोकक कोन बात जे कानूनो ने देखै छइ। ओ सभ करैत कि अछि जे बड़का-बड़का पनियाँ-जहाजमे समान लादि कऽ समुद्रमे ठाढ़ कऽ दइए। तेतबे नहि, जे वौस माटिक ऊपरको गोदाममे रहै छै, ओकरा तेहेन कानूनी पेंच लगा दइए जे ओ देशक छी आकि विदेशक से बुझबे ने करबीही।

चमेली : (पतिसँ, कर्मनाथ दिस देख) अहाँ हाकिम छिऐ कि माटिक मुरूत। मोटका-मोटका जे कानूनक किताब सभ रखने छिऐ ओ झींगुर खाइ-ले। जखन कानून हाथमे अछि, पुलिस अछि, जहल अछि तखन ओकरा सभकेँ छुट्टा खेलाइले किए छोड़ि देने छिऐ। पैछला खेप–सात

दिन पहिने–अढ़ाइ साएमे जेते समान भेल रहए ओतबे समान कीनैमे आइ तीन साए लागल! अहाँ नोकरिया छी, अहूँक दरमाहा अहिना बढ़ैए?

कर्मनाथ : केते खापैड़क मक्कै जकाँ, भरभड़ाइ छी। होइए जे हम खूब बजन्ता छी।

चमेली : उलटे चोर कोतबालकेँ डाँटए! अहीं हमरापर आँखि लाल-पीअर करै छी। एतबो आँखि उठा कऽ नै देखै छिऐ जे अहाँकेँ जखन एतेक दरमाहा अछि तखन ई रामा-कठोला अछि जे बेटी बिआह करै-जोकर भेल जाइए मुदा हाथमे एकोटा फुटल कौरियो ने अछि। अहींक आँफिसमे जे कम महिना पबैबला संगी सभ छैथ, हुनका सभकेँ की दशा होइत हेतैन। तहूमे कम महिना पौनिहारकेँ धियो-पुतो बेसी होइए। जइसँ परिवारो नमहर रहै छइ।

(चमेलीक बातक गम्भीरताकेँ आँकैत कर्मनाथ तीन बेर चमेलीकेँ ऊपरसँ निच्चाँ धरि देख, नमहर साँस छोड़ैत।)

कर्मनाथ : बड़ सुन्नर बात अहाँ बजलौं मुदा हम तँ पढ़बे केलौं नोकरीए करैले। जे आइ बुझै छी, भूल भेल। जेना हम जमीनबला परिवारक छी तेना हमरा खेतीक सम्बन्धमे पढ़क चाही छल। जेतेक धन माटिक तरमे साले-साल बिला जाइए ओकर चौथाइयो नोकरीमे नइ कमाइ छी। तेतबे नहि, जाधैर सभ अपन-अपन गामक सम्पैतकेँ नहि जगौत ताधैर आन ठामसँ जे सम्पैत औत ओ या तँ भीख बनि कऽ औत वा कर्जा बनि कऽ। खाएर जे हौउ। हँ, तँ कहै छेलौं जे लगले तँ हम्मर दरमाहा बढ़त नहि। तखन तँ दुइए-टा उपाय दिवस गुजारैले अछि। पहिल अछि जे

जेहेन चीज-वौस कीनै छेलौं, तइसँ कनी झूस माने दब कीनू चाहे जेहेन कीनै छेलौं तेहने कनी कम करि कऽ कीनू। जँ से नइ करब तँ पाओल जाएब। कर्जा तरमे पड़ब। अइले एते आमील किए पीबै छी। महगी कि कोनो हमरे-अहाँटा-ले भेल हेन, जे एते आफन तोड़ै छी। आकि सभले भेलैए। जहाँ धरि हाकिमक बात अछि, हाकिमक मतलब ई नहि ने अछि जे जे मन फुरत से कऽ देबइ। महगी रोकब हमरा सबहक बुत्ताक बात छी जे रोकि देबइ। जेकर हम नोकरी करै छिऐ ओकरे काज छिऐ महगी आनब।

चमेली : तरवन झुठे एते लाम-काफ किए देखबै छिऐ?

कर्मनाथ : (मुस्कियाइत) दरमाहा तरे देखबै छिऐ। जे होइ छै ओ देखियौ। जखन अकासे फाटल अछि तँ केते सीबै। तरवन तँ मेघ तरकै छै तँ कियो अपना माथपर हाथ दऽ 'साहोर-साहोर' करैए। (चम्पासँ) बुच्ची, चीज-वौस घरमे रक्खू। (दुनू झोरा उठा चम्पा जाइए) अच्छा एकटा बात कहू जे आन दिन बजारसँ सबेरे अबै छेलौं , आइ किएक एते अबेर भेल?

चमेली : (अकचकाइत) से नइ बुझलिऐ।

कर्मनाथ : कहबै तब ने बुझबै। हम कि कोनो भगवान छी जे बिनु सुननौं सुनि जाएब।

चमेली : परसूका गप छिऐ। बजारमे एक गोरेक बेटीक बिआह छेलइ। बनारससँ बरियाती आएल छेलइ। बरियातियो लाजवाब छेलइ। बरियातीमे मौगी-मरद सभ रहइ। खूब निम्मन बैण्डपार्टी सेहो छेलइ। बैण्ड-पार्टीमे छौड़हरे

कौरनेटिया रहइ। कहाँदन ओकरा मोछक पम्ह अबिते छेलइ।
(बिच्चेमे कर्मनाथ)

कर्मनाथ : कोन खेरहा पसारि देलिऐ!

चमेली : एँह, एतबेमे औगताइ छी। अस्सल बात तँ आब अछि। खाली सुनैत रहियौ। बड़ी बजंत्री ओ छौड़ा छेलइ। बैण्ड-पार्टीक संग बरियातियोक मौगी-मरद आ बजारोक छौड़ा-छौड़ी सभ खूब नाचल। ओही कौरनेटियाक संग बजारमे रस्ताक पछबारि भाग जे बड़का गद्दी छै, ओकर बेटी चलि गेलइ।

कर्मनाथ : तब तँ ओकरा बापकेँ बेटीक बिआहमे एक्को-पाइ खरचो ने पड़लै!

चमेली : अहाँ तँ अहिना आगुए-सँ लोइक लइ छिऐ। सुनियौ, कहाँदन ओ छौड़ा नोकरी करैए। ओइ छौड़ीकेँ माए-बाप केतबो रोकलकै मुदा ओ किन्नौं नहि मानलक। ओकरे संगे चलि गेल।

कर्मनाथ : ओ लड़की केहेन छेलइ?

चमेली : वएह सभ बजै छेलै जे ओ-लड़की कौलेजोमे पढ़ै छेलै आ नाचो सिखै छेलइ। (अपशोच करैत) से देखियो जे ओइ छौड़ीक गुजर ओइ कौरनेटियाक संग केना चलतै! कहाँ ओ धनी-मनीक बेटी आ कहाँ ओ गरीब घरक कौरनेटिया...।

कर्मनाथ : (मुस्कियाइत) गुजर किए ने चलतै। एकटा बजंत्री अछि दोसर नचनियाँ। दुनू मिलि कऽ एकटा पार्टी ठाढ़ कऽ लेत आ गामे-गाम नाचत।

(तैबीच फुलेसर आ जुहीक आगमन। दुनूक हाथमे किताब) (बेटासँ) बौआ, आइ बीस तारीक भऽ गेल। एक तारीककेँ गाम चलब। तैबीच तूँ दुनू भाए-बहिन अपन-अपन स्कूल कौलेजमे दरखास्त दऽ कऽ दू मासक छुट्टी लऽ लिहह।

फुलेसर : बाबू, ऐगला माससँ एक घन्टाक स्पेशल क्लास चलत। ओ तँ छुटि जाएत। तँए, मन होइए जे हम एतै रहि जैतौं।

कर्मनाथ : विचार तँ बड़ सुन्नर छह, मुदा असगर रहब नीक हेतह (बिच्चेमे चमेली पतिसँ)

चमेली : अहाँ तँ दोसर गप करए लगलौं। एकटा गप सठबे ने कएल आ दोसर लाधि देलिऐ।

कर्मनाथ : अहाँ अपना बातकेँ थोड़े पछुआए देबइ। हमहीं अपना बातकेँ पाछू कऽ लइ छी। बाजू...।

चमेली : हँ तँ बरियातीक गप कहै छेलौं ने। उ तँ कौरनेटियाक कहलौं। अहूसँ चोरवगर गप आब सुनू।

कर्मनाथ : (मुस्कियाइत) ओइमे कनी तेतरिक रस मिला देबइ।

चमेली : अहूँ तँ हद छी। स्त्रीगणक बातकेँ कोनो मोजरे ने दइ छिऐ।

कर्मनाथ : छुच्छे मोजर देने की हएत। फड़बो करए तब ने।

चमेली : बुझैमे अहूँ बिहाड़िये छी। नट्ठा होइए पुरुख आ कहियौ मौगीकेँ। अनरनेबा गाछ देखलिऐ हेन। मरदनमा गाछ खाली फुलेबे करैए, फड़ै नइए। मुदा मौगियाही गाछ जेते फुलाइए तेते फड़बो करैए। हँ, तँ सुनू बरियातीक दोसर गप। बरियाती आबि दुआर लगलै। दुआर लागि जखन बैसकीमे बरियाती बैसल तँ बरक बाप कहलकै जे पहिने दारू पीब डान्स करब तेकर बाद बिआहक कोनो विधि-

बेवहार हएत। मुदा घरवारी ओ बात मानैले तैयारे नइ भेल। दुनूक (बरियाती आ घरवारीक) बीच रक्का -टोकी शुरू भेल। दुनूमे सँ कियो पाछू हटैले तैयारे नहि। ओमहर बैण्ड बाजा गड़गड़ाइते रहए। दुनूक बीच कहा-कही होइत-होइत पकड़ा-पकड़ी भऽ गेल। पकड़ा-पकड़ी होइते पटको-पटकी आ मुक्को-मुक्की शुरू भेल।

कर्मनाथ : (हँसैत) बाह-बाह, तखन तँ कुरथी दौन हुअ लगल हएत।

चमेली : अहाँ तँ बाजै ने दइ छी, बिच्चेमे लोइक लइ छिऐ। पटका-पटकी करिते टेन्टक बाँस घीचि-घीचि एक-दोसरकेँ मारए लगल। केतेकेँ कपार फुटलै। तैबीच हड़हड़ा कऽ टेन्ट खसल। सभ ओइ तरेमे झँपा गेल। केकरो निकलिये ने होइ। जहिना महजालमे माछ फँसैए, तहिना।

कर्मनाथ : मरदे-मरदी सभ रहै आकि मौगियो सभ रहइ?

चमेली : सभ रहै की। केतए के ओंघराएल रहै से कोइ देखै। बड़ीकालक पछाइत गौंआँ सभ समियाना हटौलक। समियानाक तरमे जेते गोरे रहै सभ गरदासँ नहा कऽ गरदे-रंगमे रंगि गेल। पी कऽ सभ बुत्त रहबे करए। टगैत-टुगैत सभटा बरियाती निफाहेमे जा-जा बैसल। थोड़े खान जब हवा लगलै तब बारह गोरे (बरियाती) अपन-अपन बैग-एटैची लऽ-लऽ जाइले तैयार भऽ गेल। घरवारी सभ गोढ़ियाबए लगलै। मुदा कियो मानैले तैयारे नहि भेल।

कर्मनाथ : तब तँ वेचारे बरियाती सभकेँ नै सुतरलै।

चमेली : एँह, एतबे भेलइ। जेते बजरूआ पौकेटमार सभ रहै सभ सबहक (बरियातीक) रुपैयो, मोबाइलो आ आनो-आनो चीज छीनि कऽ निकैल गेल। रौतुका मौसिम रहबै करइ।

कर्मनाथ : बरियातीक सोंखैर ओराएल कि आरो अछि।

चमेली : एतबेमे औगता गेलौं। अच्छा, एकटा आरो कहि दइ छी। बरियाती सभ तेते छुड़छुड़ी आ फटाका अनने रहै जे दुआरपर पहुँचते, गदमिशान उठा देलक। लड़कीक नन्ना ओहीकाल पैखाना गेल रहैथ। एकटा बड़का फटाका ओइ पैखाना कोठरीक देबालमे एकटा बरियाती मारलक। से कहाँदन ओ फटाका (बम) गुंगुंआ कऽ तेते जोरसँ अवाज केलकै जे ओ वेचारे धड़फड़ा कऽ भागए लगला। केबाड़ बन्न रहइ। वेचारेक होश तँ उड़ि गेल रहैन, देबालेमे टकरा गेला। कपारो फुटि गेलैन आ चोटसँ चोन्ह आबि गेलैन। चोन्ह अबिते तिलमिला कऽ खसला कि दहिना पएर पैखानाक नालीमे फँसि गेलैन बड़ीकालक पछाइत जखन दोसर गोरे पैखाना जाए लगला कि केबाड़ बन्न देखलखिन। थोड़ैकाल ओतै ठाढ़ रहैथ, मुदा कोनो सुनि-गुनि नै बुझि हल्ला केलखिन। तखन केबाड़क छिटकिल्ली अलगौल गेल। केबाड़क छिटकिल्ली अलगैबते, बुढ़ाकेँ अचेत-भेल पड़ल देखलखिन।

कर्मनाथ : (हँसैत) तब तँ बिआहक संग सराधोक जोगार लागि गेलैन।

चमेली : अहाँ तँ अहिना अनका दुखकेँ दुख ने बुझै छिऐ।

कर्मनाथ : हम की अहाँ जकाँ अनकर सुख देखि कऽ नाचै थोड़े छी। सुख-दुखक बीच जिनगीक रस्ता छै, तँए जिनगी

जीबैले सुख-दुख अँगेज कऽ चलए पड़ै छइ। जे यात्री सुखमे मगन भऽ जाएत आ दुखमे विचलित ओ जिनगीक यात्रा केना सफर कऽ सकैए। छोड़ू दुनियाँदारीक गप। अपन जिनगीक गप करू। (चम्पाक आगमन) भने चम्पो आबिये गेल।

फुलेसर : दू मासक छुट्टी लऽ कऽ की करबै, बाबूजी?

कर्मनाथ : चम्पाक बिआह करैक विचारसँ गाम जाएब। मुदा तूँ जे कहने छेलह जे स्पेशल क्लास चलत तँए रहि जाइक विचार होइए। बड़ सुन्नर विचार छह, मुदा ई बात बुझए पड़तह जे हर मनुक्खकेँ पहिल कर्तव्य होइत जिनगीक रक्षा। जीबैत रहबह तखने बुझि पड़तह जे दुनियाँ छै, नइ तँ किछु नहि। पढ़ैक खियालसँ तोहर विचार नीक छह। मुदा एकटा बात कहि दइ छिअ। हम अफसर छी तँए विशेष अनुभव अछि। अखन अपन परिवारक बीच छी तँए बजैत एक्को पाइ असोकर्ज नै भऽ रहल अछि। जँ अखन सरकारक कुरसीपर रहितौं वा लोकक बीच तँ नइ बजितौं।

जुही : बाबूजी, केतेकाल सरकारी आदमी रहै छिऐ?

कर्मनाथ : बाउ, जे सवाल पुछलह, ओकर उत्तर साधारण नै अछि। अखन परिवारक काजक विचार करैक अछि, तँए तोरा सवालक जवाब नीक नहाँति नै दऽ सकबह। निचेनमे दोसर दिन बुझा देबह। अखन थोड़ेक इशारामे कहि दइ छिअ। अखन जे अपना देशक स्थिति अछि, ऐमे कियो सुरक्षित नै अछि। जेना सभ दिन अपहरणक घटना सुनै छहक। घटनामे की सुनै छहक जे पाइक दुआरे अपहरण (फिरौती) होइ छइ। ईहो होइ छइ। मुदा एतबे नहि होइ

छइ। आँखि उठा कऽ देखबहक तँ बुझि पड़तह जे बिनु पाइयोबलाक अपहरण होइ छइ। तेतबे नहि, पाइबला तँ पाइ दऽ कऽ जानो बँचा लइए मुदा बिनु पाइबलाकेँ जानक अपहरण होइ छइ।

जुही : ई बात लोक कहाँ बजैए।

कर्मनाथ : लोककेँ अखबार आ रेडियो पढ़बै छइ। तँए जे अखबारमे पढ़ैए से दोसरकेँ पढ़बैए। मुदा अस्सल बात ऐसँ आगू अछि। जे थोड़-थाड़ कहियोकाल रेडियोओ आ अखबारो कहियो दइए आ बेसी नहियेँ कहैए। हँ, तँ कहै छेलियह जे अपहरण भेलापर बिनु पाइबलाक जान नहियेँ बँचैए। तँए, ई बात बुझए पड़तह जे के केकर जान लइले, खून पीबैले तैयार अछि से कहब कठिन। (बेटासँ) तूँ कहबह जे अहाँ तँ गलत काज कहियो ने केलौं आ ने करै छी, तखन हमरा किएक किछु हएत। मुदा ऐ सवालक जवाब बुझैले ऐ बातपर नजैर देबए पड़तह जे जहिना दिनक विपरीत राति होइए, धनिकक गरीब आ सुखक विपरीत दुख होइए, तहिना जखन एकरे उलटा कऽ देखबहक तँ बुझि पड़तह जे जहिना दिनक विपरीत राति होइए तहिना रातियोक विपरीत दिन होइए। तहिना धनिको आ सुखोक होइ छइ।

जुही : बाबूजी, हम ई बात नै बुझि सकलौं जे विपरीतक माने की?

कर्मनाथ : बाउ, अखन हम दोसर काजक गप करए चाहै छी, तँए अखन तोरा प्रश्नक उत्तर नीक जकाँति नै दऽ सकबह। मुदा तोरा जे शंका भऽ रहल छह, ओ हमहूँ बुझि रहल छी। अखन एतबे बुझह जे दिन-राति प्रकृतिसँ जुड़ल

अछि, तँए ओ हेबे करत। एक-दोसरक विपरीत रहबे करत। मुदा धनीक-गरीब आ सुख-दुख से नहि छी।

जुही : बाबूजी, अहाँ जे कहलिऐ तइसँ हमर मन नै मानलक।

कर्मनाथ : (जुहीक बात सुनि कर्मनाथ मने-मन सोचए लगला जे जखन हाइ स्कूलक बच्चाकेँ हम सन्तुष्ट नै कऽ सकलौं, तखन परिवार आ समाज तँ बड़ नमहर होइए। सोचि-विचारि) बाउ, एकठाम भोज भेलइ। भोज नै भेलै, पाँच गोरे आन मुलुकसँ एक गोरे ऐठाम एलखिन। आन मुलुकक रहने नमहर पाहुन भेलखिन। ओ घरवारी (जिनका ऐठाम आएल रहैन) खाइ-पीबैक नीक ओरियान केलैन। आन मुलुकक पाहुन बुझि अपनो दस समांगकेँ खाइक नोत देलखिन। खाइक सभ बरतन (थारी, लोटा, गिलास, बाटी, चम्मच) सोनाक रहइ। खेला-पीलाक पछाइत घरवारीक अपन एकटा समांग एकटा चम्मच चोरा कऽ जेबीमे रखि लेलक। घरवारी देखि लेलखिन। देखला पछाइत घरवारीक मनमे हुअ लगलैन जे जँ कहीं पाहुनो सभ देखि नेने होथि। मुदा दोसर दिस अपन मुलुक आ समांगक प्रश्न छेलैन। असमंजसमे वेचारे पड़ि गेला। तत्-मत् करैत ओ घरवारी एकटा मैजिक केलैन।

जुही : खाइये कालमे मैजिक केलैन।

कर्मनाथ : हँ। आगू सुनह। मैजिक ई केलैन जे कहलखिन- जिनका जेबीमे जे वस्तु अछि से हम देखै छी। सभकेँ आश्चर्य भेलैन। अपन समांग दिस इशारा करैत कहलखिन जे हुनका जेबीमे एकटा चम्मच अछि। जइ समांगक नाओं कहलखिन, ओ भड़ैक उठला। दोसर गोरे, जेबीमे हाथ

दऽ चम्मच निकालि टेबुलपर रखि देलखिन। तँए बाउ, तूँ जे प्रश्न केलह ओ अहूसँ नमहर मैजिक अछि। आब तूँ चुप रहह। आगूक गप बढ़बए दएह।

जुही : भैयाक सवालक जवाब अधखड़ुऐ रहि गेल छैन।

कर्मनाथ : बौआ, समय एहेन परिस्थिति पैदा कऽ देलक अछि जे कियो अपनाकेँ सुरक्षित नै बुझैए। सचमुच ऐछो नहि। अखन एकटा अपहरणक चरचा केलियह। एहेन-एहेन अनेको अछि। एक राज्यक लोक दोसर राज्यबलाकेँ दुश्मन बुझैए। आ दुश्मनक संग जेहेन बेवहार होइ छै, से करबो करैए। तेतबे नहि, एक सम्प्रदायबला दोसरकेँ दुश्मन बुझैए। तहिना एक जातिक लोक दोसर जातिकेँ बुझैए।

जुही : तेना ओझरा-पोझरा कऽ कहलिऐ जे हम किछु बुझबे ने केलौं।

कर्मनाथ : अपन देश विभिन्न राज्य, विभिन्न सम्प्रदाय आ सैकड़ो जातिमे बँटल अछि। ऊपरसँ सभ कहैए जे हम सभ एक देशक बासी छी। तँए, मिलि-जुलि कऽ रहक अछि। मुदा से थोड़े अछि। एक राज्यबला दोसर राज्यबलाकेँ मारै-पीटै, बहु-बेटीक इज्जत लुटै, कमाएल पाइ छीनैक पाछू लागल रहैए। तहिना आरो सभ अछि।

जुही : तैयो अहाँ ओझराइले बात कहलिऐ।

(एक टकसँ जुहीपर नजैर राखि कर्मनाथ कनीकाल गुम्म रहि)

कर्मनाथ : बाउ, अखन धरि तूँ सभ शहर-बजारमे रहलह, तँए नै देखै छहक। हमरा तँ गमैया लोक सभसँ गप-सप्प होइए किने। सुनह, गाम सभमे की होइ छै; एक जातिक लोक

जे बुतगर अछि, दोसर जातिक लोकक–जे अब्बल अछि–बहु-बेटीकेँ दिन-देखार इज्जत लुटैए। तहिना एक सम्प्रदायबला दोसर सम्प्रदायबलाकेँ करैए।

फुलेसर : (नमहर साँस छोड़ैत) बाबूजी, जे बात अहाँ आइ बिकछा कऽ कहलिऐ, ओइ बात दिस हम्मर नजैर आइ धरि नै गेल छल।

कर्मनाथ : अगर जँ अखन धरि तोहर नजैर ऐ बात दिस नहियेँ गेल छेलह तँ ओहो कोनो बड़ भारी गलती नहियेँ भेल। किएक तँ अखन धरि तूँ किताबक बीच रहलह, दुनियाँ दारीक बात थोड़े बुझै छहक। मुदा एकटा बातपर हरिदम आँखि-कान ठाढ़ करि कऽ राखए पड़तह जे सिरिफ किताबेक ज्ञानसँ जिनगी नै चलैए। जिनगी-ले दुनू ज्ञानक–किताबो आ बाहरियो–जरूरत होइए।

फुलेसर : बाबूजी, अखन देखै छिऐ जे छोटका स्कूलक विद्यार्थीसँ लऽ कऽ कौलेज धरिक विद्यार्थी, सिनेमा आ खेल-कूदक सभ बात जनैए मुदा अपन परिवार, समाज आ वंशक विषयमे किछु ने जनैए। बहुत दिनसँ मनमे अबैए जे अपन परिवारक सम्बन्धमे अहाँसँ पुछी। मुदा समैयक एहेन उटपटांग रूटिंग बनि गेल अछि जे पुछैक गरे ने लगैए।

कर्मनाथ : (मुस्कियाइत) अपनो ई इच्छा दस बरख पहिनेसँ मनमे अछि, किएक तँ ऐ शरीरक कोनो ठेकान नै अछि। कुम्हारक बनौल माटिक काँच बरतन जकाँ मनुक्खोक शरीर अछि।

(बिच्चेमे)

चमेली : बेटा फुल, एकटा बात आरो जोड़ि दहक जे दू परिवार , दू समाज आ दू वंशक योगसँ नव परिवारक उदय होइए। तँए, दुनूकें जानब जरूरी अछि।

कर्मनाथ : (हँसैत) हँ तँ पहिने अहीं परिवारक खेरहा कहै छी। पुरुष-नारीक संयोगसँ नव मनुक्खक जन्म होइए। एकर अतिरिक्त जे सभ अछि ओ बाहरी छिऐ, ऊपरी छिऐ। तँए, अखन एतबे कहब। मुदा हमरा संग जे अहाँक बिआह भेल, ओ बच्चा सभकें जरूर कहि देबइ।

जुही : (थोपड़ी बजबैत) पहिने यएह कहियौ बाबूजी। तखन आन बात कहबै।

कर्मनाथ : (मुस्कियाइत पत्नीसँ) हम अहाँ छोड़ि बच्चा सभकें कहै छिऐ। तँए, बीचमे रगगड़ नइ ने ठाढ़ कऽ देबइ?

चमेली : (मुँह चमकबैत) हम बड़ रगड़ी छी किने!

कर्मनाथ : अपना की बुझि पड़ैए। अहीं सन लोकक सम्बन्धमे कहल गेल अछि जे नाक नै रहैत तँ की सभ ने खेइतौं तेकर कोनो ठीक नहि।

चमेली : छुछुनैर होइए पुरुख आ दुसि यौ मौगीकें।

कर्मनाथ : पुरुष की छुछुनैर होइए?

चमेली : बजार जाइ छी तँ देखै छिऐ जे जहाँ पुरुख कोनो स्त्रीगणकें देखत कि अनेरे ओकर जाँघक दिनाइ चुलचुलाए लगै छइ।

कर्मनाथ : अहाँ कोनो डाक्टर छी जे दिनाए देखि दबाइ सोचए लगै छी। अहाँ दिनाए देखै छिऐ केना?

चमेली : आँखि छी। ओकरा पकैड़ कऽ रखबै से हएत।

कर्मनाथ : अच्छा बुझि गेलौं। अहूँकें अपन बिआहक बात सुनैक मन अछि, तँ सुनै जाउ। जखन हम बी.ए. पास केलौं,

तखन बाबूजी बिआह करैक चर्च चला देलैन। सभ दिन दू-चारि कन्यागत आबए लगला। ता हम दरभंगेमे रहैत रही। एमहर बाबूजी एकठाम बिआहक बात पक्का कऽ लेलैन। जे हम पछाइत बुझलिऐ। कहाँदन ओ कन्यागत भरिपोख द्रव्य आ कन्याक खोंछिमे बीस बीघा जमीन दइले तैयार रहथिन। मुदा अन्तिम बात हमरेपर अँटकल रहए। जेठ मास। गोटे-गोटे गाछमे गोटि-पँगरा आम फड़ल रहै नहि तँ नहियेँ जकाँ फड़ल रहए। दस बजेक पछाइत बाधमे लू चलए लगइ। जेना बुझि पड़ै जे खेत सभमे आगिक चिनगारी जकाँ नाचि रहल अछि। हम खा कऽ दरबज्जेक ओसारक कोठरीमे रही। ओसारक दुनू भाग–उत्तरो आ दछिनो–दूटा कोठरी बनल रहै आ बीचमे खाली रहइ। ओइ खाली ओसारमे एकटा मोथीक सोंफ माने नमहरका बिछान बिछौल रहै छेलइ। सतासीक बाढ़िमे ओ दरबज्जा खसि पड़ल। करीब बारह बजे तोहर नन्ना आबि कऽ, ओइ सोंफपर चारूनाल चीत भऽ कऽ ओंघरा गेला। ओंघरेलापर जे बिछान खड़बड़ेलै तँ हमहूँ कोठरीसँ बहरेलौं, तँ देखलिऐ जे एक गोरे दुनू बाँहिकेँ मोड़ि माथ तरमे नेने आँखि मूनि कऽ पड़ल छैथ आ कनी हटा कऽ मत्थे सोझे एकटा बटुआ सेहो रखने छैथ।

जुही : बटुआ केहेन होइ छै, बाबूजी?

कर्मनाथ : (मुस्कियाइत) बटुआ कपड़ाक बनै छइ। दरजी सभ बनबैए। कोठरीनुमा ओइमे हन्ना सभ बनल रहै छइ। जेकरा लोक डाँरक डोराडोरिमे बान्हि कऽ रखैए। ओइमे अमलोक वस्तु आ पाइयो-कौरी रखैए। हमरो हरल ने फुरल, ओतै बैस कऽ बटुआ उठा देखए लगलिऐ। एँह,

की कहबह अजीव खजाना बटुओ होइए। जहिना लोक पीढ़ी, केबाड़ आ सन्दूक सभमे रंग -बिरंगक चित्र बनबैए तहिना ओइ बटुआक ऊपरमे एकटा इनार बनौल रहए। ओइ इनारपर पाँचटा जनिजातिक चित्र बनौल रहए। एक गोरे इनारमे डोल खसबैत रहए। दोसर उग्हैन पकैड़ डोल ऊपर करैत रहए। तेसर काँखतरमे घैल रखने छल। आ बाँकी दुनू इनारक दुनू भाग ठाढ़ भऽ कऽ बाँहि फरका-फरका झगड़ा करै छल।

फुलेसर : इनारो-पोखैरमे लोक झगड़ा करैए?

कर्मनाथ : (ठहाका मारि) हौ, इनार-पोखैर तँ स्त्रीगणक लड़ैक अखड़ेहे छी (पत्नी दिस देख, मुड़ी डोला हँसि) उठा-पटक तँ स्त्रीगण कम करैए मुदा गरिखर बेसी होइए। सात पुरखाक नाओं आ सातो पुरखाकेँ कोन गारि केकरा लगतै, से सभकेँ बुझल रहै छइ।

चमेली : (मुँह चमकबैत) इनार-पोखैर ढाठैए पुरुख आ झगड़ाउ होइए मौगी! (मुड़ी डोलबैत) निरलजकेँ ने लाज पेट भरला से काज! पुरुख नीक रहतै तँ मौगी अधला भऽ जेतै की!

फुलेसर : बटुआ जे उठौलिऐ से ओ नै बुझलैन?

कर्मनाथ : (उदास होइत) ओ केना बुझितैथ। ओ कोनो रौदक जरल रहैथ, ओ तँ जिनगीक ठोकरसँ घाइल बटोही रहैथ। चिन्ता आ दुखक अथाह समुद्रमे डुमल छला। जइसँ निकलैक कोनो रस्ते ने देखैथ।

जुही : बटुआमे की सभ रहैन?

कर्मनाथ : (मुस्कियाइत) जखन बटुआक डोरा दुनू हाथे पकैड़ खोललिऐ कि भक-दे एक्केबेर नअटा मुँह बाबि देलक।

नबो हन्नामे नअ रंगक वौस छल। पहिल हन्नामे नोइसिक डिब्बा रहइ। नोइसिक डिब्बाकेँ उठबिते गमैक उठल। गमक देखि हमरो मन भेल जे कनी निकालि कऽ नाकमे लगा ली मुदा फेर मनमे आएल जे नाकमे नोइस लगाएब तँ छींक हेबे करत। जँ कहीं जोरसँ छिक्का भेल आ ओ आँखि खोललैन तँ देखिये जेता, तँए नोइस नै लगेलौं।

फुलेसर : नोइस नै लगेलिऐ?

कर्मनाथ : हँ, लगौलिऐ। पाछू। दोसर हन्नामे छलिया सुपारी रहइ। शुद्ध कालापानी, चारिटा। खूब नमहर-नमहर। तेसर हन्नामे पानक पनबट्टी। चारिममे दूटा जरदाक डिब्बा। एकटा हरिशंकर काली-पत्ती आ दोसर पान साए नम्बर-पीली पत्ती। पाँचममे चानीक रुपैआ रहइ। ओ नीक जकाँति नै देखलिऐ। मुदा कम्मे बुझि पड़ल। छठममे लंग-इलायची छेलइ। सातममे बिलैंती तमाकुल, आठममे एकटा चुनौटीमे चून आ दोसर शीशीमे बुकल खएर आ नवममे रामपट्टीक बनौल एकटा सरोता रहइ। नबो हन्नाकेँ देखि कऽ नोइसिक डिब्बासँ कनी नोइस निकालि, चुटकीमे रखलौं। बटुआ बन्न करि कऽ रखि नाकमे नोइस लगेलौं। नोइस लगैबते खूब जोरसँ छिक्का भेल। जहाँ छिकलौं आकि ओ फुर-फुरा कऽ उठि बैस रहला। हमरा नाकमे सुरसुरी लगल छल तँए नाक मलैत रही।

फुलेसर : नाना किछु बजला नहि?

कर्मनाथ : ने ओ किछु बाजैथ आ ने हम किछु पुछिऐन। हुनक बगए आ शरीरक रूप देखि हम्मर बोली बन्न रहए। मनमे ढेरो रंगक सवाल सभ उठैत रहए। जहिना कोनो राही-

बटोही बिनु खेने-पीने रस्ता-बाट चलैत रहैए, मुदा रूकैक नाओं नै लइए तहिना बुझि पड़ल। बड़ीकालक पछाइत, मनकेँ असथिर करैत पुछलयैन, अपने केतए रहै छी, नीक जकाँति नै चीन्हि रहल छी? आँखिक नोर पोछैत ओ बजला- बौआ, अहाँ अखन बच्चा छी, तँए हम अपन सभ बात तँ नहियेँ कहब मुदा एते जरूर कहब जे जइ धनुषकेँ तोड़ि राम वीर भेला, ओइ धनुषकेँ मिथिलाक बेटी-सीता बामा हाथे उठा बहारै-नीपै छेली। ओइ मिथिलाक आइ एते पतन भऽ गेल अछि जे बेटीक हाथ पकड़निहार, बिना रुपैआ नेने कियो ने अछि।

फुलेसर : (चौंक कऽ) बड़ भारी बात कहलैन, बाबूजी?

(चमेली, चम्पा आ जुहीक आँखिमे नोर आबि गेल)

कर्मनाथ : हमर करेज दहैल गेल। आँखि भारी भऽ गेल। मुँहक बकार बन्न भऽ गेल। हम्मर आँखि कखनो हुनक मुँह देखैत तँ कखनो बगए। तखने पितोजी एला। पिताजीकेँ तोहर नन्ना कहलखिन जे एकटा कूल-शील कन्याक भार उतारि देल जाए। जैपर पिताजी तुरूछ भऽ कऽ जवाब देलखिन जे कूल-शील लऽ कऽ हम धो-धो चाटब। द्रव्यक जुग छी। टका धरम टका करम छी। अहाँ अपन बेटीक प्रति केते खरच करए चाहै छी से बाजू। ..जहिना पानि बरफ बनैत, तहिना हम्मर कोमल हृदए कठोर बनए लगल। मनमे अन्हर-बिहाड़ि उठए लगल। मुदा चुप रही। तोहर नन्ना कहलखिन, हम्मर हालत पाइ-कौरी खरच करै-जोकर नइ अछि। अपनेक पएर पकैड़ कहै छी जे एकटा मुइल बापक बेटीक भार उतारि देल जाए। द्रव्यसँ तँ अपनेक इच्छापूर्ति हम नहियेँ कऽ सकब, तखन

एकटा नोकरनी परिवारमे जरूर देब। हुनकर बात सुनि पिताजी उठि कऽ बाड़ी दिस विदा भऽ गेलखिन। हमरा हुअए जे बोम फारि कानए लागी। मनमे विचित्र स्थिति पैदा लऽ लेलक। एक दिस पिता, दोसर दिस निरीह कन्याँ...।

फुलेसर : नाना बैसले रहलैथ कि उठि कऽ चलि गेला?

कर्मनाथ : बैसले रहलैथ। उठैक साहसे ने होइन। मुँह करिछौन भेल जाइत रहैन। लगले-लगले हाफी करैथ। मिरमिराइते हम पुछलयैन- अपने केते खरच करए चाहै छिऐ? ओ बजला- बौआ, जखन अहाँ पुछलौं तँ हम अपन दुख कहै छी। हम दू भाँइ छी। हमराँ जेठ भाय छैथ। हम पढ़लौं-लिखलौं तँ बेसी नहि, मुदा अखड़ाहापर जरूर जाइ छेलौं। दुनू भाँइक बीच ज खन बँटवारा हुअ लगल तखन ओ खेत-पथार तँ बाँटि देलैन, मुदा घरक बरतन-बासन, गहना-जेबर आ नगद-नारायण किछु ने देलैन। एक दिन हम खिसिया कऽ कहलयैन। हुनको दाँव-पेंचक दाबी। ओहो ओहिना जोरसँ कहलैन जे जे बँटैबला छेलह से बाँटि देलियह आब किछु ने देबह। हमरो अखड़ाहा परहक ताउ रहबे करए। दरबज्जेपर उठा कऽ पटैक पान-सात थापर मुँहमे लगा देलिऐन...। कहि दुनू हाथ माथपर लऽ चुप भऽ गेला।

फुलेसर : किए चुप भऽ गेला?

कर्मनाथ : थोड़ेकालक पछाइत फेर कहए लगला। हौ बाउ, पेंच-पाँच तँ हम जिनगीमे कहियो सिखलौं नहि। कोटमे केसो कऽ देलक आ गौओं सभकेँ मिला लेलक। दुनू दिस हम फँसि गेलौं। बलजोरी लोक सभ जजातो काटि लिअए,

बाँसो-गाछ काटि लिअए आ आमो तोड़ि लिअए। तारीकपर जाइ तँ एककेँ तीन ओकिलो-मुन्सी ठकि लिअए। केस हारि गेलौं। जेकरा चलैत छह मास जहलोमे रहलौं। कोनो करम बाँकी नै रहल। सभ सम्पै त नष्ट भऽ गेल। हारि कऽ बेटा पड़ा कऽ दिल्ली चलि गेल। एहेन स्थितिमे बेटी बिआह करै-जोकर भऽ गेल अछि।

चमेली : (नोर पोछैत) हे भगवान, एहेन दिन केकरो नै दिहक। (चम्पा आ चमेली माइक मुँह तकैत आ फुलेसर पिताक मुँह)

फुलेसर : बाबा घुमि कऽ एलखिन कि नहि?

कर्मनाथ : ने घुमि कऽ एलखिन आ ने केतौ गेलखिन। अँगनाक पछुआरक रस्ता देने आबि कऽ अढ़मे बैस गेला।

फुलेसर : सोझामे किए ने एलखिन?

कर्मनाथ : से तँ ओ जानैथ। मुदा हम्मर मन हुनकासँ हटए लगल आ हिनका (ससुर) दिस झुकए लगल। मने-मन सोचए लगलौं जे अखन जँ हम बलजोरी (पिताक बिना विचारे) बिआह कऽ लइ छी तँ परिवारमे जबरदस विवाद ठाढ़ हएत। जँ बिआह करैसँ इनकार करै छी तँ दरबज्जाक इज्जत चौपट हएत।

जुही : दरबज्जाक इज्जत की छिऐ?

कर्मनाथ : बाउ, दरबज्जा अँगनाक नाक होइत अछि। आँगन बेकती-विशेषक बुझल जाइत, जबकि दरबज्जा दसगरदामे बदैल जाइए। आँगन आँगनवालीक (पत्नीक) बुझल जाइत जबकि दरबज्जा दुआर होइत अछि। केकरो आँगनमे पुरुखक आगमन आँगनवालीक आदेशसँ होइत जबकि दरबज्जा-ले आदेशक जरूरत

नहि। सबहक-ले हरिदम खुजले रहैत अछि। पुरुखक परीक्षाक केन्द्र दरबज्जा छी। परिवारमे जेहेन पुरुख रहत दरबज्जाक इज्जत ओइ रूपक हएत। हमर-अहाँक पुरुखा ऐ इज्जतकेँ बुझै छला, तँए, बहुतो गोरे ऐ प्रतिष्ठाकेँ उच्च सीढ़ी धरि मर्यादित बना कऽ रखलैन। एहेन-एहेन हजारो पुरुख भेल छैथ जे कानैत आएल मनुक्खकेँ दरबज्जापर सँ हँसा कऽ विदा केलैन। यएह विचार हमरो मनमे आएल।

जुही : ई विचार बाबामे किएक ने एलैन?

कर्मनाथ : ई तँ ओ जानैथ। मुदा हमरा मनमे जरूर भेल जे जहिना तोहर नन्ना कानैत एला तहिना हम हँसा कऽ विदा करबैन। चाहे परिवारमे जे होइ। फेर मनमे आएल जे जाधैर परिवारसँ नीच विचार हटत नहि, ताधैर उच्च विचार आबि केना सकैए। ई तँ कोनो जादू-टोना छी नहि, छी तँ बेवहार। जे सोझे काज-करमसँ जोड़ल अछि।

फुलेसर : तेकर बाद की केलिऐ?

कर्मनाथ : (गम्भीर होइत) थोड़ेकाल मने-मन विचार केलौं जे अखन तँ हमरो स्थिति काटल गाछक छाहैरे जकाँ अछि। तँए बिआह करैसँ पहिने अपन अस्तित्व काइम करी। अगर जँ से नहि कऽ पहिने बिआहे कऽ लेब आ कनियाँ घर लऽ आनब तँ ओहने दशा कनियाँक संग हेतैन जहिना अनभुआर चिड़ैक दशा चिड़ैक जेरमे भऽ जाइ छइ। तँए जरूरी अछि जे पहिने अपन जिनगीकेँ अपना हाथमे लऽ कऽ चली। मुदा ई हएत केना। सोचैत-विचारैत तँइ केलौं जे आब ऐ घरकेँ छोड़ि केतौ नोकरी करी। नोकरी करैक

विचार मनमे अबिते हम कहलयैन जे ऐठाम अपनेक जे नोर खसल ओ उद्धार जरूर करत।

जुही : (हँसैत) तब तँ नानाक मन खूब खुशी भेल हेतैन?

कर्मनाथ : ओ बड़ पारखी रहैथ। किछु बाजैथ नहि, हमरे मुँहक बात सुनए चाहैथ। जबकि हमरा मनमे भीतरसँ समुद्रक लहैर जकाँ उठए। हुअए जे की कहिऐन- केते कहिऐन जे ओ ठहाका मारि हँसैथ। हम कहलयैन- अपने भोजन कए लेल जाउ। ओ कहलैन, बौआ अहाँ अखन बच्चा छी तँए अपना ऐठामक विधि-बेवहार नइ बुझै छिऐ। अखन हम कन्यागत छी, केना भोजन करब। मनमे भेल जे कहि दिऐन- जौर जरि गेल मुदा अँइठन नै गेल। हम भुखल बुझि कऽ कहलयैन आ ओ शास्त्र पढ़बए लगलैथ। मुदा हम चुप्पे रहलौं। फेर कहलयैन जे कम-सँ-कम एक गिलास पानि पीब लेल जाउ। पानिक नाओं सुनि धड़फड़ा कऽ बजला- हँ, ई भऽ सकैए!

जुही : चाह-ताह पीबैले नै कहलयैन?

कर्मनाथ : अपना ऐठाम (इलाका) तँ चाहक चलैन–1935 ई.क पछाइत–आब भेल हेन। जखन पानि पीबैले राजी भऽ गेला, तखन सोचलौं जे भरि मन शरबत पीआ देबैन। बाउ, अपना ऐठाम गिलासमे पानि बच्चा पीबै छल चेतन लोटामे पीबै छल। एकटा बड़का लोटा अपना घरमे अछि, जइमे तीन किलोसँ बेसीए पानि अँटैए। ओहीमे भरि लोटा शरबत बना कऽ अनलौं आ आगूमे रखि देलिऐन। लोटा देखिते ओ हँसए लगला।

जुही : शरबत देखि कऽ हँसलैथ आकि मने खुशी भऽ गेल रहैन?

कर्मनाथ : से तँ ओ जानैथ। मुदा तखनसँ हँसी मेटेलैन नहि। लोटो भरि शरबत पीब लेलैन। शरबत पीब, बटुआ खोलि पान निकालि मस्तगर खिल्ली लगा, मुँहमे लैत बजला- आब मन हल्लुक भऽ गेल। जेते हुनकर मन हल्लुक होइत जाइन तेते हमरो मनमे शान्ति अबैत गेल। मुदा करेज सक्कत हुअ लगल। ..कहलयैन- किछु दिन अपनेकेँ प्रतीक्षा करए पड़त। मुदा एते अखन जरूर कहि दइ छी जे जइ काज-ले अपने परेशान छी ओ परेशानी जरूर मेटा जाएत। एते सुनिते ओ बाजए लगला जे हम सभ मिथिलाक बासी छी तँए मैथिल छी। हमरा सबहक पूर्वज नारीक जीबठकेँ जनै छला। किएक तँ जिनगी-जिनगी भरि नारी परपुरुषक मुँह नै देखलैन, भलेँ ओ बाल-विधवे किएक ने भऽ गेल होथि। जे हमर धरोहर सम्पैत छी। हँ, आइ भलेँ समाजक विकृतताक चलैत किछु अनुचित जकाँ जरूर भऽ गेल अछि। मुदा अस्सल तथ्य सभकेँ बुझक चाही। हम दुनू गोरे गप-सप्प करिते रही कि ओमहर पिताजी गरजैत अन्ट-सन्ट बाजए लगला।

फुलेसर : अढ़ेसँ बाबा बजैथ, सोझामे किए ने एला?

कर्मनाथ : से तँ ओ जानता। मुदा तोहर नाना उठि कऽ विदा हुअ लगला कि हम गोड़ लगलयैन। गोड़ लगिते ओ बटुआ खोलि पाँचटा रुपैआ हमरा हाथमे दैत कहलैन- बाउ मिथिला अखनो पुरुष-विहीन नै भेल अछि, आ ने हएत। आब अहीं सबहक (नव युवक) हाथमे सभ किछु अछि, तँए, जेना कऽ आगू लऽ चली...। कहि चलि गेला।

फुलेसर : अहाँ की केलिऐ?

कर्मनाथ : बी.ए. धरि हम कहियो, कोनो क्लासमे फेल नै केने छेलौं, तँए मनमे पढ़ैक उत्साह एक्को पाइ कमल नै छल। सोचलौं जे जखन नोकरी करबाक अछि तखन एकबेर प्रशासनिक परीक्षामे बैस कऽ देखिऐ। नै पास करब तँ नै करब। दू बरख मेहनत कऽ परीक्षामे बैसलौं। पास केलौं। पास केला पछाइत बिआह केलौं। आब पैछला खिस्सा-पिहानी छोड़ह। अखन परिवारक सभ कियो छी, तँए एकटा विचार काइये ली।

फुलेसर : (साकांच होइत) हम सभ तँ बच्चा छी, की विचार दऽ सकै छी। मुदा बुझि तँ सकै छी।

कर्मनाथ : बौआ, कोनो परिवारक बच्चा ने एक्केबेर सियान होइए आ ने एक्केरंग रहैए। किएक तँ सभ परिवारक वातावरण एक्केरंग नै होइ छइ। पढ़ल-लिखल परिवारक बच्चा आ बिनु पढ़ल-लिखल परिवारक बच्चामे बहुत अन्तर होइ छइ। तहिना अगुआएल परिवारक, माने सम्पन्न परिवारक बच्चा आ पछुआएल परिवारक माने गरीब परिवारक बच्चामे सेहो बहुत अन्तर होइए। एहेन- एहेन अनेको कारण अछि जइसँ दू परिवारक बच्चाकेँ दू रंगक वातावरण भेटै छइ। तँए दू रंगक होइए।

चमेली : जेकर माए-बाप खुट्टा सन-सन ठाढ़ रहत, अनेरे ओइ बच्चाकेँ परिवारक काज किए पुछबै?

कर्मनाथ : बिनु बुझने अहाँ किए सभ बातमे टाँग अड़ा दइ छिऐ। (भाव बदलैत) ओना अहूँक दोख बड़ बेसी नहियेँ अछि किएक तँ अहुँक विचार एक रस्तेक अछि। जे रस्ता बेवस्थासँ जुड़ल अछि। ऐ दुनियाँक अजीव बनाबट अछि। कनी नीक जकाँति बुझियौ। जहिना विष्वत रेखा,

बीच दुनियाँमे अछि। रेखासँ उतरो आ द च्छिनो, समान दूरीपर एक्केरंग मौसम होइए, मुदा विपरीत समयमे। तहिना विचारो आ जिनगियोक अछि। अखन चम्पाक बिआहक सम्बन्धमे विचार करैक अछि तँए बेसी नै कहब। कोनो परिवार, परिवारक सभ सदस्यक होइत, नहि कि परिवारक गारजने मात्रक। हँ, ई बात जरूर अछि जे परिवारक सभ काजक भार गारजनेपर रहैए एकर माने ई नहि जे बच्चा सभ बुझबे ने करए।

फुलेसर : बहिनक बिआहक चरचा करै छेलिऐ?

कर्मनाथ : जे बात बौआ तूँ पुछलह, सएह हमहूँ कहए चाहै छिअ। तीनू भाए-बहिनमे चम्पा जेठ छह। बी.ए.क रिजल्टो निकलिये गेलइ। अपना मनमे जे छल ओ भाइये गेल। उमेरोक हिसाबसँ अठारहम पूरि उनैसम चढ़लै, तँए आब बिआह कऽ लेब उचितो हएत। कथा-कुटुमैतीक सवाल अछि तँए किछु समैयो लगबे करत।

फुलेसर : किछु दिनक पछाइत चलितौं...।

कर्मनाथ : देखहक, ओना तँ हमहूँ नीक-नाहाँति नहियेँ बुझै छी किए तँ सभ दिन बाहरे रहलौं। मुदा देखै छिऐ जे किछु मास छोड़ि लोक बेटा-बेटीक बिआह सभ मास करैए। तखन तँ सभ मासक अपन-अपन गुण छइ। तइमे हमरा बुझैत फागुनक काज बढ़ियाँ होइए। जाड़क मासमे बेसी जाड़ आ गरमी मासमे हवा-बिहाड़िक संग रौद सेहो तीख होइ छै तँए फागुनक दिन सभसँ नीक।

(चम्पाक बिआहक चर्च सुनि सबहक मनमे सभ रंगक विचार उपकए लगलै। चमेलीक मनमे बेटी जमाए आ परिवार नाचए लगलैन। जबकि चम्पाक मनमे बदलैत

जिनगी। जुहीक मनमे बहिनक बिआहक आनन्द तँ फुलेसरक मनमे माए-बापक परेशानी। खुशीसँ जुही गीत गाबए लगली।)

चमेली : बेटी बिआहक चर्च, बेटीक सोझामे करैत लाज-धाक नै होइए?

कर्मनाथ : से की?

चमेली : आइ धरि एहेन केतौ देखने-सुनने छेलिऐ। आकि मनमे सनकी सवार भऽ गेल अछि। जे मनमे अबैए बकने जाइ छी!

कर्मनाथ : (मुस्कियाइत) जेकरा अहाँ नीक परम्परा बुझै छिऐ, भऽ सकैए, जखन समाजमे दहेज (खरीद-बिक्रीक) चलैन नै रहल हेतइ। पढ़लो-लिखल नहियेँ जकाँ छेलइ। मुदा आइक बेटी पढ़लक-लिखलक हेन। ओ अपन जिनगीक बात बुझए लगल हेन। तँए माए-बापक ओकाइत आ अपना प्रति माए-बापक सेवा ओकरा सोझामे अछि। तँए ओ खुद–अपन बिआहक विचार–कऽ सकैए। एहेन तँ नहि, जे बेटीक चलैत माए-बाप डुमि जाए वा माइए-बाप बेटीकेँ डुमा दइ। जहाँ धरि अनमेल बिआहक बात अछि ओ लेन-देनक चलैत रहल अछि। तँए बेटीकेँ अपनापर भरोस कऽ ऐगला जिनगी-ले डेग बढ़बए पड़तै। जइ समाजमे नारी शिक्षाकेँ अधला मानल गेल ओइ समाजमे लड़का-लड़की समान केना भऽ सकैए। तखन रहल रंग-रूपक समानता, रंग-रूपक समानता परिवारक रंगरूप समाप्त कऽ दइए। तहूसँ जुआएल गहुमन बिनु केंचुआ छोड़ने कातमे बैसल अछि। ओ छी जातिक भीतर जातिक कूल-मूल।

फुलेसर : बाप रे बाप, जइ समाजमे एते रंगक विषमता अछि ओ समाज एक रस्तासँ चलि केना सकैए! समाजक बात तँ कात रहह जे परिवारो केना चलि सकैए! मर्द-औरत माने पति-पत्नी परिवारक मुख्य अंग होइत, जहिना गाड़ीक पहिया। मुदा गाड़ीक एक पहिया मजगूत होइ आ दोसर कमजोर तँ समुचित भार लऽ गाड़ी केना चलि सकत! तहिना तँ परिवारो अछि।

कर्मनाथ : बौआ, समाज आ परिवार ऐ रूपे, पुरान कपड़ा जकाँ, चिरी-चोंत भऽ कऽ फाटि गेल अछि जेकरा सीलासँ काज नै चलि सकैए। जाधैर ओइमे पीओन-चेफड़ी लगा-लगा काज चलौल जाइए, जाइए। मुदा ऐसँ काज केते दिन चलत। अखन हम ऐसँ बेसी नै कहबह। किएक तँ अखन अपने सिरपर काज अछि जइले सोचबाक अछि।

चमेली : जखन चम्पाक बिआहक विचार करै छी तँ गहना जेबरक ओरियान कहिया करब?

कर्मनाथ : (चम्पा दिस देख) कहलौं तँ ठीके, मुदा जेकरा रुपैआ नै रहतै ओ की करत?

चमेली : छुच्छ देहे बेटी सासुर जाएत से अपना नीक लागत?

कर्मनाथ : कहलौं तँ ठीके, मुदा जेकरा अहाँ मान-मरजादा बुझै छिऐ ओ खाली गहने-जेबर छी। गरीब लोक जे गहना-जेबरक सेहन्ता करैए ओ ओकर मुरुखपना छिऐ। कनी आँखि उठा कऽ देखियौ जे कोन परिवारक माए-बाप अपना बेटीकेँ किछु-ने-किछु गहना नै देलक, मुदा केकरा घरमे एकटा कनौसियो छइ। तँए गरीब लोककेँ सेहन्ते नै करैक चाही।

फुलेसर : बाबूजी, जखन एहेन ओझरौठ काज अछि आ अखन धरि किछु केलौं नहि, तखन लगले केना काज निपटाएब?

कर्मनाथ : हम संकल्प करि कऽ गाम जा रहल छी, तँए बिआह हेबे करतै। काज केना हएत से हमरा मनमे अछि। हम्मर बेटी जुगक अनुकूल अछि, तँए बिआह नै होइक कोनो कारणे ने अछि। (चम्पा से) बाउ, तूँ हमर जेठ बेटी छिह। पढ़ल-लिखल सेहो छह। तँए तोरा किछु बात कहि दिअ चाहै छिअ। दुनियाँ दिस नै देखह अपना आ अपन माए-बापकेँ देखह। हम पढ़ि कऽ प्रशासनिक अफसर बनलौं मुदा तोहर माए केते पढ़ल छथुन? तँ किछु ने! फेर परिवार केना चलैए। तोरा हम बी.ए. पास करा देलियह। तोरामे ओते क्षमता आबि गेल छह जे स्कूल, ऑफिस, बैंक वा आन कोनो काज कऽ सकै छह, तखन तोहर जिनगी भारी किए हेतह। मनसँ ई हटा लएह जे हम उपार्जन नै कऽ सकै छी। जहिना पुरुख उपारजन करैए तहिना तहूँ कऽ सकै छह। हम तोहर बाप छिअ, तोहर अधला हुअ ई हमरा मनमे केना औत, कहियो ने औत।

चमेली : गाममे जे खेत-पथार अछि, जइसँ एक्को सेरक आशा कहियो ने होइए, भाय सभ बेच-बेच खाइए, ओ बेच कऽ बेटीक बिआह कऽ लिअ।

कर्मनाथ : कहलौं तँ ठीके मुदा जाधैर पिताजी जीबै छैथ ताधैर हम्मर बेचब उचित हएत? एक तँ ओहिना पिताजी हमरापर बिआहेसँ कड़ुआएल छैथ, तैपरसँ जँ एहेन काज करब तँ परिवारमे विस्फोट होइमे बाँकी रहत। हम बेटीक बिआह करैले गाम जाएब कि घरमे आगि लगबैले?

फुलेसर : (चिन्तित भऽ) बड़ भारी काज उपस्थिति भऽ गेल अछि, बाबूजी।

कर्मनाथ : (मुस्कियाइत) बौआ, अखन तूँ बच्चा छह; तँए नीक जकाँति परिवार आ समाजकेँ नै जनै छहक। जहिना फुलवाड़ीमे सैकड़ो रंगक फूल रहै छै, मुदा कातसँ देखनिहार तँ कातेक फूल देखैए। बीचमे कोन फूल केहेन छै, से थोड़े देखैए।

फूलेसर : अहाँक बात हम नै बुझि सकलौं, बाबूजी।

कर्मनाथ : फुलवाड़ीक उदाहरण देलियह। असल बात समाजक अछि। फुलवाड़ीए जकाँ समाजोमे अछि। हजारो रंगक मनुक्ख समाजमे रहैए। हर मनुक्खकेँ अपन-अपन जिनगी, अपन-अपन विचार होइ छइ। जइसँ अपन-अपन संकल्प आ उदेस सेहो होइ छइ। नीक-सँ-नीक आ अधला-सँ-अधला मनुक्ख समाजक पेटमे नुकाएल अछि। जेकरा मात्र देखनिहारे देखि पबैए। सभ नहि। मुदा एकटा बात कहि दइ छिअ- जखन कोनो काज करैले डेग उठाबी तँ देहक सभ अंगकेँ चौकन्ना करि कऽ राखी। जेकर सभ अंग क्रियाशील रहत ओ माटिक रस्ताक कोन बात जे पानियोँ आ हवोक रस्तासँ चलि सकैए। तँए हरिदम आशावान भऽ कऽ डेग उठबैत-बढ़बैत रहक चाही।

❑

शब्द संख्या : 6171

दोसर अंक

(सोमनाथक दरबज्जा। सोमनाथ मसलनपर ओंगठल ,
आशा आ नूनू दुनू भाग बैसल।

सोमनाथ : बाउ नूनू, आइ जे भाँग पिऔने छेलह से केतए-सँ अनने छेलहक? अपन घरक पत्ती तँ नै छेलह। बहुत दिन बाद एहेन मस्तगर भाँग पीलौं। आब कनी चाह पीआबह। तखन, परसू जे कर्मनाथक पत्र आएल छेलह, ओ पढ़ि कऽ सुना दिहह।
(नूनू चाह आनए जाइए)
(पत्नीसँ)
एकटा बात कहौं?

आशा : की?

सोमनाथ : कनी बिआह दिनक बात मन पाड़ियौ तँ। ओइ दिन ई बात कल्पनो केने रही जे एक दिन हमहूँ सभ अथबल हएब?

आशा : (खौंझा कऽ) मन वौआइए। जेते बुढ़ भेल जाइ छी तेते बुधियो टुटि-टुटि खसैए। एतबो ने बुझै छिऐ जे ऐ दुनियाँक नियमे छै जे जन्म लेब, जुआन हएब आ बुढ़ भऽ कऽ मरि जाएब। अगर जँ से नै होइत आ पहिलुको

लोक सभ जीविते रहितैथ तँ अहाँकेँ आकि हमरा के पुछितए?

(चाह लऽ कऽ नूनू अबैए। एकटा कप सोमनाथक हाथमे आ एकटा आशाक हाथमे दइए)

सोमनाथ : (चाहक चुस्की लैत) सात घर मुद्दैयो किए ने हुअए मुदा भगवान जँ ओकरो बेटा देथुन तँ नूनू सन देथुन। जे बेटा बाप-माइक सेवा नइ केलक ओहो कोनो बेटे भेल। करवनोकाल मनमे अबैए जे दूटा समाजोक लोककेँ आ अपनो दियादबादकेँ बैसा कहि दिऐ जे हमरा मुइलापर नूनूए आगि दिअए।

आशा : एना किए बजै छी। लोक सुनत तँ की कहत। जखन भगवान तीनटा बेटा देने छैथ तँ हमरा लिए सभ बरबैर। जेकरा हाथे आगि लिखल हएत, ओ देत। कोनो कि देखैले एबइ। माए-बापक अपन करतब छै, बेटा-बेटीक अपन करतब छइ। तइले अनेरे माथ किए धुनै छी।

सोमनाथ : (बिगैड़ कऽ) जे बेटा जीबैतमे कटहर लगा कऽ मोजर नहि दइए ओ मुइलापर सोनाक मन्दिर बना देत, अहाँ सएह बुझै छिऐ!

आशा : (झपटैत) जेना अहाँ अपना माए-बाबूकेँ सोनाक मन्दिर बना देने होइयैन तहिना बजै छी। जेहने किरिया-करम करि कऽ मरब तेहने ने फलो हएत। जँ अधला किरिया करि कऽ मरब तँ भूत-प्रेत बनि गाछी-बिरछीमे वौआएब, नहि जँ नीक किरिया करि कऽ मरब तँ स्वर्गमे जाएब। देखै नै छिऐ जे पपियाहा सभ जे मरैए तँ ओहिना वौआइत रहैए। पियास लगै छै तँ इनारपर जा-जा लोकक धैला फोड़ैए आ भूख लगै छै तँ बाट-बटोहीकेँ

पटैक-पटैक सनेस छीनि-छीनि खाइए। हमरा आकि अहाँकेँ आकि केकरो जे विधाता छठियारे राति लिखि देने छैथ, से तँ हेबे करत।

सोमनाथ : (पिनैक कऽ) ठीके मौगीक बातक कोनो ठीक नहि। लगले कहै छी जे जेहेन किरिया करब तेहेन फल हएत आ लगले कहै छी जे छठियारे राति जे विधाता लिखि देलैन से हएत। अच्छा, एकटा बात कहू तँ- जाबे जीबै छी ताबैये ने लिखलाहा हएत आकि मुइला पछातियो?

आशा : अहाँकेँ की होइए जे मुइला पछाइत फेरसँ लिखाएत। आकि छठियारे रातिक लिखल मुइला पछाइतो हएत।

(पनबट्टीसँ पान निकालि मुँहमे लैत सोमनाथ)

सोमनाथ : (मुँहक पान गाल तर दबैत) बेटा नूनू, अगर जँ भगवान गाहीक-गाही बेटा नहियोँ दैथ आ तोरा सन एकोटा रहए तँ ओइ गाहीक-गाहीसँ नीक। अपना सबहक जे बाप-दादा कहने छैथ जे माए-बापक सेवा करब बेटाक सभसँ पैघ धरम छी, से कोनो अधला कहने छैथ। अखनो जे ई दुनियाँ चलैए से तोरे सन-सन बेटाक धरमपर। नहि तँ ई दुनियाँ कहिया ने अलोपित भऽ गेल रहैत। किएक तँ तेते ने चोर-उचक्का, बेइमान-शैतान सभ फड़ि गेल अछि जे एक्को दिन ई धरती असथिर रहैत। अच्छा, एकटा बात कहह जे औझुका भाँग केतए-सँ अनने छेलह?

नूनू : औझुका कोन भाँग छेलए से नै बुझलिऐ। दछिनबा रि टोलमे जे दिनेश अछि वएह दरभंगासँ अनने अछि।

सोमनाथ : के दिनेश?

नूनू : हीरा कक्काक बेटा। दरभंगा कौलेजमे पढ़ैए।

सोमनाथ : (किछु मन पाड़ैत) हीरालाल! ओकरा तँ कहियो भाँग मुँहमे लैत नै देखलिऐ। तेकर बेटा एहेन ओसताज भऽ गेल!

नूनू : एँह, जेहने मजगर भाँग पीबैए तेहने टिपगर तमाकुलो खाइए। गाममे ओहन माल के देखत। अपना सभ तँ ओ भाँग पीबै छी जे बाड़ी-झाड़ीमे अनेरूआ जनमैए मुदा ओ शुद्ध कलमी भाँग पीबैए।

सोमनाथ : भाँगो कलमी होइ छै हौ?

नूनू : अहाँ तँ पुरना गीत गबै छी। विज्ञान केते आगू बढ़ि गेल अछि से नइ बुझै छिऐ। आकि सोझे हवाइये जहाज आ रौकेटेटा बुझै छिऐ। विज्ञान बढ़लासँ खैयो-पीबैक वस्तु बढ़ल किने। अहाँ ने हरिदम कहै छिऐ जे बासमती धानक चूड़ाक जोड़ा दोसर नइ अछि। मुदा आब जे चूड़ा बजारमे बिकाइए ओकर जोड़ा बासमतीक चूड़ा करतै।

सोमनाथ : चूड़ाक गप छोड़ह। देखिते छहक जे छह माससँ तेहेन रोग ने तरे-तर देहमे घोंसिया गेल अछि जे सभ खेलहा - पीलहा बिसैर गेलौं। जे ने करए बिमारी। नहि तँ जइ जअकेँ कहियो अन्नमे नै गनलौं, से भऽ गेल अछि अहार.! 'थाकल पाँउ पलंग भेल भारी, आब की लादब हौ वेपारी।' खाइक बात छोड़ह। कलमी भाँग केना होइ छै से कनी बुझा दएह।

नूनू : एकटा बड़ भारी कम्पनी अछि। जेकर अरबो-खरबोक कारोबार छइ। वएह भाँगोक कारोबार करैए। भाँगक जूस बनबैए, मोदक बनबैए, आरो विन्यास सभ बना-बना देश-विदेश सगतैर बेचैए। वएह कम्पनी भाँगक खेती करैले किसानकेँ अगुरबारे खरचो आ शंकर

किस्मक बीओ दइ छइ। किसानो सभकेँ आन फसिलसँ बेसी रुपैयो होइ छै आ मेहनतो कम होइ छइ। बाधक-बाध किसान सभ काते-कात मक्के रोपने अछि आ बीचमे बीधाक-बीघा भाँग लगौने अछि। ओही भाँगमे मसल्ला सभ मिला कऽ जूसो, मोदको आ आनो-आनो विन्यास सभ बनबैए।

सोमनाथ : अच्छा, आब दुनियाँदारीक बात छोड़ह, पत्र निकालि कऽ सुनाबअ।

(जेबीसँ चिट्ठी निकालि नूनू मने-मन पढ़ए लगैत)

नूनू : (चिट्ठी पढ़ि) सबतूर भैया नीके छैथ। चम्पा बी.ए.पास केलक। ओकरे बिआह-ले लड़का भँजियाबए लिखलैन हेन।

सोमनाथ : (उत्तेजित होइत) तोरा दुनू भाँइकेँ लिखने छौ आकि हमरा?

नूनू : अहींकेँ लिखने छैथ।

सोमनाथ : (आरो उत्तेजित होइत) पढ़ल-लिखल लोक केते बेसरमी होइए से देखही। तोरा मन हेतौ कि नहि, जखन उ बी.ए. पास केने रहए, तखन बिआहक चरचा उठौलिऐ।

(अपशोच करैत)

ओ-हो-हो, हूसि गेल! गरदैन कटि गेल! सम्पैत दोबर भऽ जइतौ। बीस बीघा खेत तँ बेटीक खोंइछमे दइले तैयार रहए। नगद आ जेबरक कोन ठेकान। कहह जे केते भारी नोकसान परिवारमे भेल?

आशा : अहाँ तँ तेना बताह जकाँ बजै छी जेना करमू ऐ घरक कियो छिहे नहि। ने अहाँ कियो छिऐ आ ने ओ कियो

छी। बाल-बच्चा जे कनी-मनी किछु काइये गेल तँ की हेतइ। तइले अहाँ किए एते आमील पीने छी।

सोमनाथ : हूँह! एते दिन बेटा सिखौलक आ आब अहाँ सिखाउ। गीदरक नाँगैर केमहर होइ छै से अहीं बुझबै। दिन -राति कमाइ छी, घर चलबै छी हम, आ अहाँकेँ बुझि पड़ैए जे अहिना दिन-दुनियाँ चलै छइ।

(चिन्तित होइत)

आब तँ सहजे अथबले भेलौं, अपनो जिनगी पहाड़ बुझि पड़ैए। मान-अपमान, इज्जत-आबरु सभ बिसैर गेलौं। जाबे जीबै छी ताबे कौआ जकाँ टाँहि-टाँहि करै छी।

(अपशोच करैत)

घरक की मान-प्रतिष्ठा छल, की रूआब छल, सभटा चलि गेल! भगवानो रच्छ रखलैन जे सभ सुख-भोग छोड़ा देलैन। जअकेँ फाँटीपर आनि कऽ रखि देलैन। नहि तँ हम्मर की दशा होइतए से तँ उगलेहे देखितैथ।

(गम्भीर होइत)

अच्छा अहीं कहू जे बेटा मनसम्फे कमाइए की नहि, मुदा माए-बापकेँ की दइए?

आशा : (मुँह बिजकबैत) अहाँकेँ कोनो गत्तर मे लाजे ने होइए। जखन करमू नोकरी शुरू केलक आ महिने-महिने पान साए रुपैआ पठबए लगल, तँ तीनियेँ मासक पछाइत लिखि पठौलिऐ जे पान साए रुपैआ लऽ कऽ चुट्टीक बिल गहब। आ आब निरलज भट्टा जकाँ कहै छिऐ जे रुपैये ने दइए। अगर पान साए रुपैआ झुझुआन बुझि पड़ल तँ कहितिऐ जे बौआ मासे-मास नहि, छह मासपर एक्के ठीन पठबिहह, जइसँ कोनो काज चलत।

सोमनाथ : बड़ बुधियारि छी अहाँ। एकटा बात कहू तँ, बेटा-बेटीक बिआह-दुरागमन करब माए-बापक मर्यादा छी की नहि? आकि अपने मने बिआह कऽ लिअए।

आशा : अगर जँ करमू अपने मने बिआह काइये लेलक तँ कोन भारी जुलुम कऽ लेलक। कोनो कि जाति गमा लेलक? खाली दहेज नै लेलक सएह ने। तँ की हेतइ। वएह कन्यागत अहाँक तिजोड़ी भरि दइतए तँ बड़ बढ़ियाँ आ नै भरलक तँ बड़ अधला!

सोमनाथ : की हौ बौआ नूनू। माइक बातकेँ तूँ नीक बुझै छहक कि अधला?

नूनू : बाबू, माए पुरना विचारक लोक छैथ तँए हिनको विचार बेजाए नहियेँ छैन। मुदा आब तँ जुग बदैल चुकल अछि। अर्थ जुग आबि गेल। जेकरे पाइ छै ओकरे लोक मनुक्खो बुझै छै आ समाजमे मानो-प्रतिष्ठा दइ छइ। तँए एते घाटा तँ परिवारमे जरूर भेल जे मोट रकम हाथसँ ससैर गेल। मुदा माए, आब परीक्षो बेर आबिये गेल अछि। करमू भैया दहेज नै लेलैन, बड़बढ़ियाँ। मुदा आब तँ अपनो बेटीक बिआह करबाके छैन किने?

सोमनाथ : (फरैक कऽ) हँ-हँ, बेस कहलहक बौआ। 'जनिहेँ मियाँ धुनै बेरिया।' भने तँ आबिये रहल अछि। भगवान नीक केलैन जे अथबल बना देलैन। ने किछु करब आ ने दोखी हएब।

आशा : बौआ नूनू, तूँ ने कहै छहक जे अर्थ जुग आबि गेल, तँए सभ काज पाइयेक हाथे हएत। मुदा एकटा बात बुझै छहक, मनुक्ख मनुक्खे रहत। जुग कोनो अबै आकि जाइ मुदा नीक करैबला नीके काज करत आ अधला

करैबला अधले करत। जइ बेटाक दोख तूँ दुनू बापूत लगबै छहक ओइ बेटाक गुणो बुझै छहक। अपन परिवारक कोन बात जे गामेमे अपन कर्मनाथक जोड़ा कएटा अछि। मनुक्ख तँ सौंसे गामे भरल अछि।

सोमनाथ : अहाँ हाकिम बेटा लऽ कऽ नाचू मुदा हम तँ सोमनाथे छेलौं आ रहबो करब। हमरा नूनू सन बेटा रहक चाही। जखन जे कहै छिऐ, दासो-दास रहैए।

आशा : अहीं सन हमहूँ नइ ने छी जे कर्मनाथ सन बेटापर ओंगरी उठाएब। अपनो तँ दूटा बेटी आ (कर्मनाथ छोड़ि) दूटा बेटो अछिए, किए ने एकोटा हाइयो स्कूल धरि देखलक। बेटेक चलैत पोती बी.ए. पास केलक। तेकरा अहाँ मनुक्खे ने बुझै छिऐ। जेकरा अहाँ नै मनुक्ख बुझबै ओ अहाँकेँ मनुक्ख बुझत?

सोमनाथ : (शान्त होइत) आब हमरा कोन मनुक्ख बनैक काज अछि, मृत्युक रस्तामे अँटकल छी। जखन रसीद कटि जाएत, राम-राम करैत विदा भऽ जाएब।

(लालबाबूक आगमन)

सोमनाथ : भरि दिन तूँ केतए निपत्ता रहै छह लालबाबू?

लालबाबू : एँह, की कहब बाबू! केकर मुँह देखि कऽ आइ उठलौं जे समैपर अनजलो ने भेल। सबेरे चौक दिस गेलौं तँ देखलिऐ जे मारे-लोक घोल-फचक्का कऽ रहल अछि। अनगौंवो आ गौंवो थाहा-थही कऽ रहल अछि। ससैर कऽ हमहूँ गेलौं, तँ देखलिऐ जे अनगौंआँ सभ शन-शन कऽ रहल अछि, गौंआँ सभ मुड़ियारी दऽ दऽ खाली सुनैए। मन असथिर भेल। एक गोरेकेँ पुछलिऐ जे भाय की बात छिऐ जे अहाँ सभ एना शन-शन करै छी? एना

हेँड़ बान्हि कऽ केतए जा रहल छी? ओ कहलक- हमरा गामक–माने खरबोनीक–एकटा विद्यार्थी दरभंगामे पढ़ैए। लॉजमे रहैए। ओही लॉजमे पिपराघाटक सेहो पान-सात गोरे रहैए। एकठाम रहने सभकेँ-सभसँ चिन्हारे छइ। पिपराघाटक विद्यार्थी सभ हमरा गामक विद्यार्थीकेँ फुसला कऽ अपना गाम लऽ गेल आ एकटा लड़कीक संग बलजोरी बिआह करा देलकै।

सोमनाथ : लड़िकाक बापकेँ बिना पुछिनहि?

लालबाबू : हँ, तँए ने लड़काक समांग सभ जुटि कऽ पिपराघाट जाइए। लड़काक पितियौत भाए कहलक जे दस लाख रुपैआपर लड़काक बिआह सत-गछिया ठीक भेल छइ। जइमे एक लाख रुपैआ अगुरवारे देनौं अछि आ बाँकी रुपैआ बिआहसँ चारि दिन पहिने देबाक बात पक्का भऽ गेल अछि।

सोमनाथ : जखन लड़का-लड़कीक बिआह भऽ गेलै, तखन लड़काबला सभ जा कऽ की करतै?

लालबाबू : की करतै! तेहेन गरमाएल लोक सभकेँ देखलिऐ जे बुझि पड़ल जेना बेटीबलाकेँ घरक कोरो घीच लेतइ। आ अहाँ कहै छिऐ की करतै।

सोमनाथ : केते गोरे खरबोनीबला सभ छेलइ?

लालबाबू : कोनो की गनलिऐ मुदा चालीस-पचासक धत-पत तँ बुझिये पड़ल।

नूनू : आइये खरबोनीबला सबहक दालक छुटतै। तेहेन शैतानक चरखी पिपराधाटबला सभ अछि जे आइये बुझि पड़तै। तहूमे एकटा तेहेन खूंखार नेताक धसना पार्टी अछि जे काजे यएह करैए।

सोमनाथ : (दुनू हाथ माथपर लऽ) कोन जुग-जमाना चलि आएल से नहि जाइन।

नूनू : बाबू, भगवानकेँ कहियौन जे दस बरख आरो औरदा दैथ। तखन देखबै जे की सभ होइ छइ।

सोमनाथ : तेकर बाद की भेलइ?

लालबाबू : सभ कियो चाह-पान खा उत्तर-मुहेँ सनकल विदा भेल। चौकसँ जखन ओ सभ कनी आगू बढ़ल आकि हमहूँ ससैर कऽ रतनाक चाहक दोकानपर आबि गेलौं। चाहक देकानपर नीक-नहाँति बैसलो ने रही कि सुरजा आएल। तामसे ओकर मुँह तुरुछ जकाँ भेल देखलिऐ मुदा बाजए किछु नहि। पुछलिऐ जे सुरुज मन बड़ खिसियाएल छह? ओ कहलक- 'लालबाबू की कहब! दुनियाँमे सभ बेइमान भऽ गेल! केकरा के अपन बुझत।' पुछलिऐ- 'से की?' कहलक- 'हमरा सारकेँ बेटीक बिआहमे करजा भऽ गेलइ। ने रुपैआ होइ छेलै आ ने महाजनकेँ दइ छेलइ। खिसिया कऽ महाजन लालीस कऽ देलकै। हमर सारो चलाकी केलक। ओ अपन सभ जमीन ममियौत भायक नामसँ फरजी कऽ देलक। ओहो साला तेहेन नेतघट्ट जे सभ जमीन बेइमानी कऽ दफानि लेलक। सएह, ओतैसँ समाद आएल हेन जे कनी आबि कऽ फरिया दिअ।'

नूनू : के केकरापर बिसवास करत। एक तँ ओ वेचारा अपन बुझि जमीन फरजी केलक आ ओ साला केहेन गैखौक भऽ गेल जे सभटा बेइमानी करै छइ!

लालबाबू : अखन तँ अनकर बात सुनलिऐ। आब अपन बात सुनू; चाह पीब कऽ जहाँ घर दिस विदा भेलौं कि आगूऐसँ गंगाइ घेर कऽ कहए लगल।

सोमनाथ : (उत्सुक भऽ) की, की गंगाइ कहए लगलह?

लालबाबू : कहए लगल जे अहाँक मोहन हमर गरदैन काटि लेलैन। गरदैन काटैक नाओं सुनि हम चौंकलौं। मनमे रंग-बिरंगक बात आबए लगल। पुछलिऐ जे कनी सेरिया कऽ कहह। ओ कानैत कहए लगल जे पनरह कट्ठा खेत हुनकासँ नेने छेलौं। दस हजार रुपैये कट्ठा देने रहैथ। जेकरा तीन-चारि मास भेल हएत। खेत जोइत कऽ मक्के केने छी। परसू खन मुनेसरा आबि कऽ कहलक जे गंगा भाइ मक्के हमरा बाँटि दिहह। हम चौंक गेलौं कहलिऐ जे जखन हम खेत किनने छी तँ तोरा किए बाँटि दिअ। एते सुनिते ओ जेबीसँ दस्तावेज निकालि कऽ देखा देलक। ओकर रजिष्ट्री हमरासँ दू मास पहिलुके छइ।

सोमनाथ : (अकचकाइत) मोहनक तँ चालि-परकित एहेन नइ छइ।

नूनू : लोकक किरदानी मुँह-कान देखने बुझबै। बेटीक बिआह जे ओते ताम-झामसँ केने छला से केतए-सँ। एक लाख रुपैआमे पटनासँ खाली टेन्टे अनने छला। कहाँदन पच्चीस हजार भनसिया नेने छेलै, तैपरसँ चारि साए बरियातीक खेनाइ-पिनाइ। तहूमे जेते बरियाती खेलक तइसँ बेसी समान उगरिये गेलैन।

लालबाबू : सात लाख रुपैयो गनने छला?

सोमनाथ : जे सात लाख रुपैआ गनत ओ ओहने लड़का आनत?

नूनू : लड़का अनलैन कि धन। डेढ़ साए बीघा जमीन लड़का माथपर पड़ै छइ।

सोमनाथ : अच्छा, छोड़ह दुनियाँदारीक गप। लालबाबूकेँ कर्मनाथक पत्र देखए देलहक?

नूनू : कहाँ। नहि!

(नूनू लालबाबूक हाथमे चिट्ठी दइत। लालबाबू चिट्ठी पढ़ए लगैत)

लालबाबू : दिन पनरहम छिऐ। हम चौकेपर गुलटेनक पानक दोकानपर रही। वएह कहैत रहए जे मालिक आइसँ पानक खिल्लीमे एक रुपैआ बढ़ा देलिऐ। किएक तँ पानक सभ मसल्ला महग भऽ गेल। तैबीच एक गोरे साइकिलसँ आएल। साइकिल दोकानेक आगूमे ठाढ़ कऽ गुलटेनकेँ पुछलकै, प्लोथीन अछि। गुलटेन मुस्कियाएल। तैपर ओ कम्पनीक नाम पुछलकै। पानोबला मुड़ी डोला देलकै। किलो भरिक एकटा प्लोथिन बढ़ा देलकै। ओहो बटोही एकटा पचसटकही निकालि दोकानबलाकेँ दऽ देलकै। ठाढ़े-ठाढ़ ओ बटोही गट-दे प्लोथिन पीब गेल। पीला पछाइत दोकानदारकेँ पुछलकै, कर्मनाथ बाबूक घर ऐठामसँ केमहर छैन। हमरो कान ठाढ़ भेल।

सोमनाथ : ओकरा किछु पुछबो केलहक?

लालबाबू : नहि। अपने मने बाजए लगल जे कर्मनाथ बाबू आ हम्मर भाय साहैब एक्के ठीन रहै छैथ। कमा कऽ हम्मर भाय साहैब अमार लगा देलखिन। हमरा गाममे एक्को गोरे नै अछि जे बेटी बिआहमे एते खरच केने हएत।

नूनू : अपन कर्मनाथ भैया कि रुपैआ नै रखने छैथ। तखन तँ हम सभ दियाद छिऐन तँए छिपौने छैथ। पाइ रखैक लूरि सभकेँ होइ छइ। कियो ढोल जकाँ ढनढनाइत रहत आ कियो चुपचाप दबने रहत।

सोमनाथ : पत्रक बात तँ सभ बुझबे केलहक। आब, अपना सभ चारू गोरे विचारि लएह जे की करब?

नूनू : जखन अहाँ दुनू गोरे (बाप-माए) छिहे तखन हम सभ की कहब।

सोमनाथ : हमरा तँ साँप-छुछुनैरक पड़ि भऽ गेल अछि। ने 'हँ' कहैत बनैए आ ने 'नइ' कहैत। 'हँ' कहैत ऐ दुआरे नै बनैए जे सत पुछह तँ हमर मन कर्मनाथपर सँ ओही दिन हटि गेल जइ दिन ओ अपना मने बिआह कऽ लेलक। देखल लक्ष्मी घुमि गेली। खाएर, बिआहो केलक तँ केलक जे कमाइयो कऽ तँ एक्को पाइ कहियो नहियेँ देलक। मुदा छी तँ बेटे। तहूमे बेटीक बिआह करत। बेटी तँ सिरिफ माइए-बापक नै होइए ओ तँ सबहक होइ छइ।

आशा : अहाँकेँ अपने मन कखनो थीर नइ रहैए। कखनो किछु बजै छी तँ कखनो किछु। अहीं कहू जे ज खन करमू पान साए रुपैआ मनिआडर करैत रहए तखन चिट्ठीमे लिखि कऽ पठौलिऐ जे पान साए रुपैआसँ चुट्टीक बोहैर मुनब आ आइ कहै छिऐ जे एक्को पाइ नै कहियो देलक। वेचारा नोकरी करैए जएह दरमाहा रहतै तहीमे ने काज चलौत। अनका देखि कऽ करमूओकेँ ओहिना बुझबै से ओहिना ओहो घूस-पेंच लैत हुअए तखन ने। दुनियाँमे सबहक चालि एक्केरंग होइ छइ?

सोमनाथ : औझुका लोकक भाँज अहीं पेबै? केकरा रुपैआ बकछुहुल लगै छइ। एकबर लोककेँ दरमाहा रहै छै आ सातबर बाइली होइ छइ।

लालबाबू : माए गइ, भैयेक एकटा संगी कमा कऽ अमार लगा लेलक हेन। एक्के काज दुनू गोरेकेँ छैन।

आशा : बौआ, एकटा बात तोँही सभ कहह जे जइ सम्पैतक सुख तूँ सभ करै छहक ओइमे ओकर हिस्सा नइ छइ? ओकर

हिस्सा तँ अपने सभ खाइ छिऐ। ओ कहियो किछो पुछबो केलकह हेन। एतबो आँखिमे पानि नै छह। अगर जँ ओकरा बेटीक बिआहमे खरच नै जुमतै तँ की ओ ऐ सम्पैतमे सँ नइ लेत?

लालबाबू : हमरो रहत तब ने देबइ। तूँ नै देखै छीही जे साले-साल खेत बेचै छी तखन कहुना कऽ काज चलैए। ने एकोटा पुरना गाछ गाछीमे रहल आ ने बाधमे खेत। लऽ दऽ कऽ घराड़ी आ घरक आगूमे जे अछि तेतबे रहल हेँ, सेहो अपना बुते खेती कएल होइते ने अछि। बटेदारो सभ तेहेन अछि जे दूध महक डारही बाँटि कऽ दइए। मुदा ओहू वेचारा सभकेँ की कहबै, कोनो साल रौदी होइ छै तँ कोनो साल दाही। लगतौ बुड़ि जाइ छइ।

आशा : से तँ हमहूँ देखै छिऐ, मुदा रौदी-दाही दुआरे केकरो उचित कल्याण रूकि जेतइ? बेटा-बेटीक बिआह सभकेँ हेबे करतै। घर-दुआर बनबए पड़तै। धिया-पुताक पढ़ौनी, बर- बेमारीमे खरच हेबे करतै। तहूमे हम दस कुटुम-परिवारबला छी। एकरा सभकेँ छोड़बहक से बनतह। परिवार किए कहौलकै..!

सोमनाथ : एते राँउ-झाँउ करैक कोन काज छह, बौआ। अन्हार घर साँपे-साँप। जखन कर्मनाथ औत, बिआहक चरचा करत तखन ने पुछबै जे बौआ केना काज करबह? ऐठाम तँ देखिते छहक जे जेकरो ने किछु रहै छै, बोइन-बुत्ता करैए, ओहो एक-आध लाख रुपैआ बेटीक बिआहमे खरच करैए। जबकि अपन परिवार तँ से नै छह। केतबो काटि-छाँटि कऽ बिआह करबह, तैयो दस लाख खरच हेबे करतह। तहूमे अपना सबहक समाज तेहेन गँरिबोहू

अछि जे एतबो ने बुझैए जे जे माए-बाप अपना बेटीकेँ पढ़बैमे ओतेक खरच करैए ओकरासँ रुपैआ केना मंगबै? से लाज थोड़े केकरो होइ छइ। नमहर-नमहर भाषण कऽ लेत मुदा करैकाल छुतहरोसँ छुतहर भऽ जाइए। एहेन छुतहरक समाजमे लोक केना जीबत।

भीतरसँ : दादी, दादी, कर्मनाथ काका एलखिन।

(आशा उठि कऽ भीतर जाइत अछि। कर्मनाथक परिवार अबैक गल्ल-गुल भीतरमे होइत अछि।)

नूनू : बाबू, हम दुनू भाँइ तँ छोट छी, तहूमे अहाँ जीविते छी। तखन तँ भैया जे कहता से कऽ देबैन।

सोमनाथ : (मुड़ी डोलबैत) एकटा बात हमरा मनमे उपकैए।

नूनू : से की?

सोमनाथ : कहीं एहेन ने हुअए जे कर्मनाथ अपन रुपैआ दाबि लिअए आ खेत बेचैले कहथुन। जँ से हेतह तँ हाथो तरक जेतह आ पएरो तरक।

लालबाबू : तखन की करबै?

सोमनाथ : की करबहक से हमहीं कहबह। आब तहूँ दुनू भाँइ धीगर-पुतगर भेलह, आबो जे नै सोचबहक तँ कहिया सोचबहक। हम तँ सहजहि अथबल भेलियह, चलन-पियारा छिअ। हम्मर आशा केते दिन करबह। जाधैर दाना-पानी लिखल अछि ताधैर मुँह देखै छह। जहिया उठि जाएत तहिया चलि जाएब।

(कर्मनाथक प्रवेश। पिताकेँ प्रणाम करैत। लालबाबू आ नूनू कर्मनाथकेँ प्रणाम करैत)

सोमनाथ : (असिरवाद दैत) कल्याण हुअ। बौआ, आब तँ हम्मर हालत एते रद्दी भऽ गेल जे मुइले बुझह। छह माससँ

डाक्टर सभ किछु बरा देलक। जअक फाँटी खाइ छी, तँए अखनो ठाढ़ छी। नहि तँ कहिया ने चलि गेल रहितौं। सौंसे देह जाँचि कऽ डाक्टर कहलक जे रोग जड़िसँ नहि मेटाएत, तखन तँ पथ-पानि करैत रहू। मन भेल जे सवा लाख महादेवक पूजा करा कऽ सेहो देखिऐ। मुदा आइ-काल्हि करै छी, ओहो अखैन धरि नहियेँ केलौं हेन। सभ परिवार आनन्दसँ छह किने?

कर्मनाथ : हँ। सभ आनन्दसँ छी। दू मास पहिने हमरो परमोशन भेल। चम्पो बी.ए. कऽ लेलक। बड़बढ़ियाँ नम्बर एलइ। फुलेसर बी.ए. मे आ जुही मैट्रिकमे पढ़ैए।

सोमनाथ : (हँसैत) परमोशन भेलह तँ दरमहो बढ़ल हेतह किने?

कर्मनाथ : हँ। अढ़ाइ साए टाका महिना बढ़ल। मुदा तइसँ की जिनगीमे कोनो बदलाव औत।

सोमनाथ : (अकचकाइत) से की?

कर्मनाथ : दरमाहा जे बनल छै ओ परिवार आ पदक स्तरक हिसाबसँ बनल छइ। तहूमे इनकम-टेक्स ओकरा नियंत्रित केने रहै छइ। जहिना दरमाहा बढ़ै छै तहिना इनकम-टैक्स सेहो बढ़ि जाइ छइ। तेतबे नहि, मकानक भाड़ा, पानि आ बिजलीक खरच सभ बढ़ि जाइ छइ। घुमा-फिड़ा कऽ कहुना परिवार चलबैत जीब लइ छी। तीन-तीनटा विद्यार्थीक खरच शुरूहेसँ रहल, अपनो पढ़ै-लिखैक अभ्यास बनि गेल अछि, तहूमे खरच होइते अछि। तैपरसँ जइ समाजमे रहै छी ओहूमे खरच होइते अछि। ई सभ खरच तँ दरमहेमे से होइए। महिना लगैत-लगैत हाथ साफ भऽ जाइए। साल कहियौ कि मास, एक्को दिन ओहन नै बँचैए जइ दिन केकरो-ने-केकरो,

किछु ने किछु बाँकी नै रहैए। तखन तँ कहुना जीब लइ छी।

सोमनाथ : तोरोसँ छोट-छोट नोकरी करैबला सबकेँ देखै छिऐ जे कमा कऽ बुर्ज कऽ लइए, से केना कऽ लइए?

कर्मनाथ : (मुस्कियाइत) जहिना शरीरमे रोग होइए तहिना मनोमे रोग होइ छइ। जे बात अहाँ कहलौं ओ मनक रोग छी। मुदा सबहक शरीर वा मन रोगाएले होइए एहनो बात तँ नै अछि।

लालबाबू : भैया, पछबारि गामक एक गोरे छैथ, भरिसक अहाँ चिन्हतो हेबैन, जे कमा कऽ अमार लगा लेलैन अछि।

कर्मनाथ : हुनका हमहूँ चिन्है छिऐन। हमरासँ एक बैच पाछू छैथ। पहिने बेसीकाल डेरापर अबै छला आ हमहूँ हुनका ऐठाम जाइ छेलौं मुदा धीरे-धीरे सम्बन्ध कमैत गेल। आब ने हम हुनका ऐठाम जाइ छी आ ने ओ हमरा ऐठाम अबै छैथ। रस्ते-पेरे जँ केतौ भेँट भऽ गेला तँ भऽ गेला।

लालबाबू : भैया, अहाँ जे चम्पाक बिआहक सम्बन्धमे चिट्ठी लिखने छेलौं से तँ आब अपनौं आबिये गेलौं। जहिना चम्पा अहाँक बेटी छी तहिना तँ हमरो भतिजीए छी। जेना जे करब तइमे हम सभ कोनो अरंगा करब।

कर्मनाथ : अखन तँ हमहूँ बिआहेक उदेसे एलौं, तँए दोसर तेसर गप करब नीक नहि, मुदा एकटा बात जरूर कहबह जे समय बहुत तेजीसँ बदैल रहल अछि, तँए समैयक संग अपनोकेँ बदलए पड़तह। जँ से नै बदलबह तँ पाओल जेबह। बाबू बुढ़ भेलखुन, केते दिन छथुन तेकर कोनो ठीक नहि। मुदा तूँ दुनू भाँइ तँ जवान छह। परिवार बढ़बे करतह, घटतह तँ नहि। तँए खरचो बढ़बे करतह। ई तँ

तोरा अपने पुरबए पड़तह। अखन छोट परिवार छह तखन तँ खेत बिकाइ छह आ जखन खर्चा बढ़तह तखन केना पुरेबहक।

लालबाबू : हँ, ई तँ ठीके कहलौं। मुदा नोक रियो तँ अपना हाथमे नै अछि। तखन की करबै?

कर्मनाथ : नोकरीएकेँ सीमा-नॉगैर छै जे जे करत ओकर गुजर चलतै आ जे नै करत ओकर गुजर नै चलतै। बहुत रास काज सभ अछि, जेकरा केलासँ धनक उपारजन होइए। जे करैबला अछि ओ तँ नोकरियो छोड़ि अपन काज ठाढ़ कऽ करैए।

लालबाबू : (मुड़ी डोलबैत) ठीके कहै छी भैया, पाछू घुमि कऽ तकै छी तँ बुझि पड़ैए जे अखन धरिक समय फुर्र-फाँइमे बीति गेल। आब बुझि पड़ैए जे जीबैले सभकेँ मेहनत करैये पड़त।

कर्मनाथ : निचेनमे कोनो दिन नीक जकाँति बुझा देबह। अखन हमहूँ काजेमे पड़ल छी तँए पहिने ऐ काजकेँ निपटबैक अछि।

नूनू : भैया, बेटीक बिआह परिवारक सभसँ भारी काज भऽ गेल अछि। तहूमे जेकरा पाइ-कौरीक अभाव छै ओकर तँ इज्जत-आबरू बँचब कठिन भऽ गेल अछि। सभसँ आश्चर्यक बात समाजमे ई अछि जे बेटी केहनो पढ़ल-लिखल हुअए, शील, गुण, सौन्दर्यसँ पूर्ण किएक ने हुअए मुदा आइ ओकर कोनो मोल नहि अछि।

कर्मनाथ : (दृढ़तासँ) बौआ, चम्पाक बिआह हेबे करतै। ई हमरा अपन ब्रह्म कहि रहल अछि। जहाँ धरि दहेजक सवाल

अछि, ओ हम एक्को पाइ नै देबइ। हँ, जे बेवहारिक चलैन अछि ओ तँ पुरबए पड़त।

नूनू : दहेज नै देबै तँ काज हएब कठिन अछि।

कर्मनाथ : जइ समाजमे तूँ दहेजक चलैन देखै छहक ओ चुतिया समाज छी। ओइ समाजपर हम थूक फेकै छी। मुदा वएह टा समाज नै छिऐ। ओइ समाजसँ हटि दोसरो समाज अछि जे मनुक्खक समाज छी। जइ समाजमे कियो केकरो अधला नै करैए आ ने केकरो अधला हौउ ई मनमे अनैए। चम्पाक बिआह ओही समाजमे हेतै तँए, हमरा दहेजक चिन्ता नै अछि। तखन तँ सभ दिन समाजसँ हटि कऽ रहलौं, जइसँ अनभुआर थोड़ेक जरूर छी।

❑

शब्द संख्या : 3851

तेसर अंक

(विकास दरबज्जापर प्लास्टिकक डोरीसँ कुरसी बीनैत)

श्रीचन : (भीतरसँ) विकास भाय? यौ, विकास भाय?
(कुरसी बीनब छोड़ि। चकोना होइत, चारूभाग विकास ताकए लगैत)

विकास : के छिअ हौ? (फेर चारूभर चकोना होइत)

श्रीचन : (प्रवेश करैत। कान्हपर कोदाइर, हाथमे खुरपी) विकास भाय। यौ विकास भाय?

विकास : श्रीचन। किए एना अपसियाँत होइ छह, की भेलह?

श्रीचन : नाश भऽ गेल! गरदैन कटि गेल..!

विकास : (अकचकाइत) की नाश भेलह? मन असथिर कऽ कऽ बाजह।

श्रीचन : ऐसँ एकटा बेटा मरि जाइतए से नीक। मुदा भरल-पुरल चास नाश भेने तँ दू मासक मेहन त बुड़ि गेल।

विकास : एना किए मुहसँ अधला बात निकालै छह?
(कोदाइर, खुरपी रखि, दुनू हाथ माथपर लैत, कानैक मुद्रामे श्रीचन)

श्रीचन : भाय की कहब! भगवानो बड़ धड़कट-बेइमान छैथ। किए लोक अपनाकेँ हुनकर सन्तान बुझैए। जखन ओ भगवान छैथ तँ सभपर एकरंग नजैर राखैथ। से कहाँ रखै

छैथ। हुनकोमे दूजा-भाव छैन! केकरोपर खुशी भऽ कऽ खूब दइ छथिन आ केकरो भोतहा हाँसूसँ गरदैन हलालि दइ छथिन!

विकास : तेना ने तूँ बजै छह जे हम किछु बुझबे ने करै छी! कनी खोलि कऽ साफ-साफ बाजह।

श्रीचन : की खोलि कऽ कहब भाय! अहाँ तँ सभटा बुझिते छी, तैयो अनठा कऽ पुछै छी।

विकास : अनठा कऽ कहाँ पुछै छिअ। तेना ने तूँ बजै छह जे हम अखनो धरि वौआइते छी। उनटे तोंहि कहै छह जे सभटा अहाँ बुझिते छिऐ। कनी फरिछा कऽ कहह ने।

श्रीचन : अहाँ तँ जनिते छी जे हम ने गिरहत छी आ ने बोनिहार। चौदह-पनरह कट्ठा खेत अछि, तहीमे खेतियो करै छी आ जखन अपना काज नै रहैए तँ बोइनो करए जाइ छी। पान-सात कट्ठा तरकारी खेती करै छी जइसँ अपनो खाइ छी आ दू-चारि पाइक बेचियो लइ छी। चारि कट्ठा टमाटरक खेती केने छेलौं से सभटा गलि गेल! जेना कियो चोरा कऽ नून छीटि देने हुअए तहिना भऽ गेल।

विकास : टमाटर गलि गेलह तँ हमरा की कहै छह?

श्रीचन : चलु, कनी मधमन्नी।

विकास : किए?

श्रीचन : ओइ बीआबला कम्पनीपर लालीस करबै। अपने तँ कोट-कचहरीक पेंच-पाँच बुझै नइ छी, तँए अहाँकेँ संगे लऽ जाएब। ओइ बीआबलाकेँ सिखा देबै जे मर्दक पाला केहेन होइ छइ। जाबे ओकरा जहल नइ ढुकाएब ताबे हमर मन असथिर नहि हएत। जँए चारि कट्ठा टमाटर गेल तँए दू हजार आरो जा..!

विकास : कनी सेरिया कऽ सभ बात कहह।

श्रीचन : दू मास पहिलुका गप छी। जतरा क परात झंझारपुर हाट बीआ कीनैले गेलौं। ओना, अपन चिन्हरबो दोकान अछि। मुदा कोन दुरमतिया कपारपर चढ़ि गेल जे ओइ दोकान नै जा हाटे दिस बढ़ि गेलौं।

विकास : अपन चिन्हरबा दोकान किए ने गेलह?

श्रीचन : की कहब भाइ, हाटसँ कनी पाछुए रही कि बड़का भोमहा-हौरनसँ बीआ-बालिक प्रचार होइत सुनलिऐ। खूब जोर-जोरसँ अमेरिकन कम्पनीक प्रचार करैत रहए। हमरो जेना डोरी लगि गेल। जहिना अजगर साँपक आँखिपर आँखि पड़लासँ होइ छै तहिना ओइ भोमहाक अवाज हमरा मनकेँ पकैड़ लेलक! आन कोनो चीज देखबे ने करिऐ। जाइत-जाइत हमहूँ ओतए पहुँच गेलौं। एकटा खूब नमहर मोटर गाड़ीक ऊपरमे दूटा भोमहा, दुनू भाग घुमा कऽ लगौने रहए। गाड़ीक बगलमे बीआ-बाइलिक खूब नमहर दोकान सेहो लगौने रहए। ओइ दोकानक चारूभर लोक सभ बैस कऽ बीआक पौकेट सभ देखैत रहइ। दू गोरे दुनू भाग बैस कऽ बीआ बेचैत रहइ। पाँच ग्रामसँ लऽ कऽ किलो भरिक पौकेट सभ रहइ। पौकेट सभपर, जइ चीजक बीआ रहै तेकर खूब रंगर फोटो सभ छापल रहइ।

विकास : अमेरिकन कम्पनी रहै से तूँ केना बुझलहक?

श्रीचन : भोमहोसँ प्रचार करै छेलै आ दोकानदारो कहैत रहइ।

विकास : देखैमे दोकानदार केहेन छेलइ?

श्रीचन : एँह, की कहब भाइ; तीनू गोरे एक्केरंग देखैमे लगइ। घोरहा रंग, पितरिया आँखि आ मक्कैया केश तीनूक रहइ।

विकास : (छुब्ध होइत) घोरहा रंग, पितरिया आँखि आ मक्कैया केश..!

श्रीचन : अहाँ नै बुझलिऐ भाय। तीनू गोरेक एक्केरंग घोर जकाँ छेलै, छालही मोहि कऽ जे घोर बनैए तेहने उज्जर दप-दप! तँए कहलौं घोरहा रंग। अपना सबहक आँखि , केहेन सुन्नर कारी अछि आ ओइ तीनूक आँखि पित्तैर जकाँ देखैमे लगइ। तँए कहलौं पितरिया आँखि। आ जहिना मक्कै बालिक ऊपरमे जे रूइयाँ जकाँ रहै छै तहिना तीनूक केश देखैमे लगइ। अपना सबहक केश केहेन सुन्नर कारी अछि से ओकरा सबहक नइ रहइ।

विकास : (हँसैत) तीनू मौगी रहए कि पुरुख?

श्रीचन : यौ भाय, ई हम ठीक-ठीक नइ कहब। किएक तँ तीनूक मुहोँ-कान आ उमेरो एक्केरंग बुझि पड़इ। मोछ-दाढ़ी रहितै तखन ने बुझितिऐ। से तीनूमे केकरो ने रहइ। रहबे ने करै आकि कटौने रहए, से नै कहि।

विकास : मोछ-दाढ़ी नइ रहै, मुदा माथोक केशसँ नै बुझलहक?

श्रीचन : की कहब भाइ! अपना सबहक केश केहेन मरदनमा अछि। स्त्रीगणक केश नमहर होइ छै, से ओकरा सबहक नइ रहइ।

विकास : तब केहेन छेलइ?

श्रीचन : ने मौगियाही केश रहै आ ने मरदनमा। ने बाबरी सीटे जोगर रहै आ ने जुट्टी गुहै-जोकर। खोपाक तँ कोनो बाते नहि। ओहिना, माने सोझे पाछू-मुहेँ उनटौने रहए। जे लटैक कऽ गरदैने धरि रहइ।

विकास : सिनुरो लगौने रहए की?

श्रीचन : ओह! एक्को गोरे सिनुर नइ लगौने रहए।

विकास : आँखि केहेन रहइ?

श्रीचन : कहलौं तँ पित्तैर जकाँ बुझि पड़इ। मुदा तइमे एक गोरेक आँखि बिलाइ जकाँ चारूभर चकोना होइत रहइ।

विकास : (मुस्कियाइत) आँइ हौ श्रीचन, तोँहू जीवनी भऽ कऽ अनाड़ी भऽ गेलह, जे मौगी रहै कि पुरुख सेहो ने बुझि सकलह।

श्रीचन : यौ भाइ की कहब! तीनू गोरे एक्केरंगक पेन्टो आ एक्के रंगक अंगो पहिरने रहए। खाली बोलीक अवाजमे कनी फरक बुझि पड़इ। दू गोरेक अवाज कनी मोट बुझि पड़इ आ एक गोरेक मेही।

विकास : जेकर अवाज मेही रहै, ओ केहेन रहए?

श्रीचन : अरे बाप रे! बिलाइक आँखि जकाँ ओकर आँखि चमकबो करै आ नचबो करइ। मुदा तेते हबर-हबर बजै जे बुझैक कोन बात, सेरिया कऽ सुनबो ने करिऐ। हम तँ खाली ओकरे-मुहेँ दिस ताकै छेलौं।

विकास : (हँसैत) उ तोरा दिस देखह कि अनका दिस?

श्रीचन : ऐ भागसँ ओइ भाग जे आँखि नचबै, तरवन हमरो देखए मुदा बेसी ओ पाइयेबला सभ दिस देखै। हम तँ तीनियेँ साए रुपैआ लऽ कऽ गेल रही। सेहो ढट्ठामे रखने रही। सोचने रही जे एक साएक बीआ कीनि लेब आ दू साएक घरक चीज-वौस कीनि लेब। किए तँ लोक थोड़े सभ दिन हाट-बजार जाइए।

विकास : बीआ जे किनलहक तेकर रसीदो देलकह?

श्रीचन : हँ। (जेबीसँ रसीद आ बीआक खाली डिब्बा निकालि विकास दिस बढ़बैत) हे, यएह दुनू छी।

विकास : (रसीदो आ पैकेटोमे लिखल मिलबैत) एँह, ओ तँ सोलहन्नी ठकि लेलकह! रसीदमे किछु लिखल छह आ पैकेटमे किछु। तहूमे तूँ कहै छह जे अमेरिकन कम्पनीक प्रचार करै छेलइ। तीनू तीन रंगक भऽ जाइ छह।

श्रीचन : (निराश होइत) तब तँ लालीस नै हेतइ?

विकास : नहि। अगर ऐ सबूतपर केस करबहक तँ अपने फँसि जेबह। उनटे जहल जाए पड़तह।

श्रीचन : हमरे तीन साए रुपैयो ठकि लेलक आ हमहीं जहलो जाएब..!

विकास : कानूनक अपन रस्ता छइ श्रीचन। जेना कहै छह तेना जे तीनूक मिलान रहितह तँ केसो होइतह। से तँ नै छह।

श्रीचन : तब की करब?

विकास : नीक हेतह जे भरमे-सरम चुपे रहि जाह। नहि तँ अनेरे खरचो हेतह, खेतियो बुड़लह आ जहलो जेबह।

श्रीचन : (गुम्म भऽ मुड़ी डोलबैत) भाइ अहाँक बात तँ हम सभ दिन मानैत एलौं, तँए मानि लइ छी। मुदा हमर मन जरल अछि, जाबे ओकरा या तँ दसटा गारि नै पढ़बै वा दस थापर मारबै नइ वा जहल नै ढुकेबै ताबे हमर मन नहि शान्त हएत।

विकास : अपना गलतीसँ सभ किछु भेलह। कान पकैड़ लएह जे केकरो लल्लो-चप्पोमे नै पड़ब। एकपर एक ठक दुनियाँमे अछि। अच्छा, एकटा बात कहह तँ एना अल्लग-बल्लगमे ठका केना गेलह?

श्रीचन : (कानै-कानै सन मुँह करैत) भाय, बेगरताक मारल मन वौआ गेल। ओना तँ दूटा बेटी अछि , मुदा जेठकी बेटीक बिआह तेसरे सालसँ करैक विचार अछि। तेसराँ बाढ़िमे

सभ दहा गेल, तँए नै कए भेल। पौरुकाँ रौदीए भऽ गेल, तँए ने सम्हरल। ऐबेर सोचने छेलौं जे जेना-तेना बेटीक बिआह काइये लेब, मुदा सेहो आशा टुटि गेल। देखिते छिऐ जे हमरा सभकेँ बैंकसँ करजो ने भेटैए आ गामक महाजनो सभ हाथ-पएर समेट लेलक। तँए सोचने छेलौं जे जेना-तेना खेतेमे खूब मेहनत कऽ बेटीक बिआह कऽ लेब। से नै भेल। आब किछु फुरबे ने करैए जे की करब।

विकास : श्रीचन, आशा नै तोड़ह। जखने गरीब भेलह तखने चारू दिससँ बेगरता खिहारबे करतह। मुदा की करबहक। नइ ऐ साल बेटीक बिआह हेतह तँ ऐगला साल करिहह।

श्रीचन : भाय, हएत तँ सएह। मुदा गामक स्त्रीगण सभ कुट्टी-चौल करैत रहैए!

विकास : ओहिना स्त्रीगण सभ बजै छइ। केकरो बजैमे किछु लगै छइ। साहस करह।

श्रीचन : भाय, अपन मन तँ, समय-साल देखि कऽ मानि जाइए मुदा घरवाली हरिदम कनिते रहैए। ओकरा जे कानैत देखै छिऐ तँ अपनो छाती दहैल जाइए।

विकास : से तँ होइते हेतह। एकबेर तमाकू खाह।

श्रीचन : (जेबीसँ तमाकुल-चुन निकालि, तमाकुल चुनबए लगैत) एकटा बात तँ पुछबे ने केलौं। आब मन पड़ल। ओ बीआबला सभ जे ओहन उज्जर दप-दप लगै छेलै से ओकरा सबहक रंगे ओहिना होइ छै कि चरक फुटल छेलइ? किएक तँ अपनो गाममे एक गोरे ओहने अछि। जेकरा नै सभ चरकाहा कहै छइ।

विकास : जइ मुलुकमे ओ सभ रहैए, ओइठाम बारहो मास ठंढे रहै छइ। अपना सभ जकाँ गरमी नै होइ छै ओतए, तँए ओकरा सबहक रंगे ओहेन भऽ जाइ छइ।

(तमाकुल खा कऽ श्रीचन विदा हुअ लगैत)

विकास : एकटा बात सुनि लएह श्रीचन। जाबे तक अपना ऐठामक किसान नीक बीआ, नीक खाद आ कीटनाशक नीक दबाइ बनबैक लूरि अपने नहि सीखि लेत, ताबे तक अहिना ठक सभ आबि-आबि ठकैत रहतै। बजैत दुख होइए जे अपन देश किसानक देश छी। मुदा किसानक जिनगी मुरदोसँ बत्तर अछि। ने खेती करैक लूरि किसानकेँ छै, ने खेतीक उपकरण छै आ ने पटबैक कोनो जोगार छइ। धार-धुरक अपन इलाका रहने खेत चौरसो ने अछि। एहेन स्थितिमे लोक केना जीवित रहत?

(श्रीचन जाइए। कर्मनाथक प्रवेश। विकासकेँ प्रणाम करैत)

विकास : आ-हा-हा, बाउ कर्मनाथ! बहुत दिनक पछाइत तोरासँ भेँट भेल। कहिया गाम एलह। सपरिवार आनन्दसँ रहै छह किने। बच्चा सबहक कुशल कहह...।

कर्मनाथ : सभ आनन्दसँ छी। जेठकी बच्चिया बी.ए. पास केलक। बचबा कौलेजमे आ छोटकी बच्चिया हाइ स्कूलमे पढ़ैए। परसू गाम एलौं।

विकास : बेटी तँ बिआहै-जोकर भऽ गेल हेतह?

कर्मनाथ : हँ। वएह सोचि दू मासक छुट्टी लऽ कऽ एलौं। मुदा ऐठाम जे हवा-बिहाड़ि देखै छी तइसँ मने घबराइए। आन नोकरिया जकाँ तँ हम्मर जिनगी नै अछि।

विकास : बाउ कर्मनाथ, अखन धरि तोरा बच्चे जकाँ बुझैत एलियह आ आगूओ बुझैत रहबह। भने कहलह जे दहेजक बिहाड़ि समाजमे उठि गेल अछि। अखन धरि तँ कहियो कोनो काज केलह नहि, तँए मन घबराएब उचिते छह। मुदा एकटा बात बुझए पड़तह जे हवा-बिहाड़ि जहिना समाजमे उठैए तहिना समाजे ओकरा रोकबो करैए। अज्ञानी, लोभी आ समाज विरोधी लोक ओकरा बढ़बैए। मुदा ऐसँ समझदार लोक थोड़े घबराएत। जहिना एक्के खेतमे बगुरोक गाछ रहैए आ नीक-नीक फलोक गाछ रहैए तहिना समाजोमे होइ छइ। नीक-सँ-नीक लोक आ अधला-सँ-अधला लोक एक्के समाजमे अछि। हँ, ई बात जरूर अछि जे कखनो अधला लोक नीक लोककेँ पछाड़ैए तँ कखनो नीक लोक अधला लोककेँ पछाड़ैए।

कर्मनाथ : जँ अहिना होइत रहत तँ समाज नीक केना बनत?

विकास : अखन धरिक जे इतिहास अछि ओइ आधारपर नीक लोक पछड़ैत रहल अछि। किएक तँ जइ शक्तिक हाथमे समाज सत्ता रहल ओ धूर्त, बेइमान आ शोषकक रहल। तँए ओइ शक्तिक संग इमानदार, मेहनती आ भलमानुस लोककेँ संगठित भऽ मुकाबला करए पड़तै। जइसँ उठा-पटक हेबे करतै मुदा अन्तिम विजय इमानदारेक होएत। किएक तँ एहेन लोकक संख्यो बेसी अछि आ काजो नीक अछि।

कर्मनाथ : तखन फेर एना किए होइ छइ?

विकास : (मुस्कियाइत) कम संख्यामे धूर्त, बेइमानकेँ रहितो, बुधि आ सम्पैत ओकरे हाथमे छइ। जे दुनू हथियारक रूपमे

काज करै छइ। कमजोर, मुर्ख अधिक रहितौं अखन धरि पछड़ैत रहल अछि।

कर्मनाथ : ऐ बातकेँ अखन छोड़ूँ। हम जइ काजसँ अहाँ लग एलौं तैपर कनी विचार कएल जाए। अपने सिरिफ गुरुए नहि, समाज निर्माता सेहो छी। हम्मर बेटी आइक मनुक्ख छी, नै कि घसल-पिटल परम्पराक। तँए, हमरा मनमे अटुट बिसवास अछि जे हमरा बेटीक बिआह हँसी-खुशीसँ हेबे करत। मुदा हम तँ समाजसँ सभ दिन अलग रहलौं , तँए कनी चिन्ता मनमे जरूर अछि।

विकास : बौआ, तोरा पितासँ हमरा मतभेद किएक अछि, से पहिने सुनि लएह। तोहर परबाबा जे रहथुन ओ नामी-गामी लोक छला। समाजो अनुकूले रहैन आ समैयो तेहने रहए। जहिना हुनका धन-सम्पैत रहैन तहिना मानो-प्रतिष्ठा। जखन ओ मुइला तँ मास दिन धरि सराधक भोज होइते रहल। हमहूँ ताबे ढेरबे रही मुदा सभ किछु मन अछि। तीस गाम नोति कऽ खुऔल गेल रहइ। एक-एक गामकेँ एक-एक दिन। गामक सभ जातिक लोक ओइ काजमे जुटल रहए। किएक तँ काजो भारी छेलइ। खेनाइक सभ वस्तुक ओरियानसँ लऽ कऽ नोत पठौनाइ आ खुऔनाइ धरिक काज रहइ।

कर्मनाथ : (मुस्कियाइत) ई बात हमरा नै बुझल छल। भने अहाँ कहि देलौं।

विकास : करीब पचास-पचपन बरख पहिलुका बात छी। ताधैर गाममे दोसर तरहक विचार चलै छेलइ। अखुनका जकाँ लोकमे दूजा-भाव नै छेलइ। ओइ समय लोकक जिनगियो छोट छेलइ। तेकर बाद, करीब पैंतीस-चालीस

बर्ख पहिने, तोहर बाबा मरलखुन, ता हमहूँ शिक्षक भऽ गेल रही। समाजमे विचारो बदलए लगल छेलइ। तोहर पिताजी भोज-ले समाजकेँ बैसौलैन। हमहूँ छेलौं। ओ कहलखिन जे नअ गामक जे सौजनियाँ अछि तेते लऽ कऽ भोज करब। किछु गोरे समर्थनो केलकैन। मुदा किछु गोरे विरोधो केलकैन, जइमे हमहूँ छेलौं।

कर्मनाथ : विरोध किए केलिऐन?

विकास : (हँसैत) हमरा सबहक–माने विरोध केनिहारक–विचार छल जे कोनो भोजमे समाजक लोककेँ छोड़ि–माने आन जातिक लोककेँ छोड़ि–अनगोंआँकेँ नोत दऽ खुआएब उचित नहि। जेते खरच कऽ भोज करए चाहै छी ओ गौंवेकेँ नोत दऽ कऽ खुआउ। गामक कोनो जाति किएक ने हुअए मुदा छी तँ ओ समाज। समाजक काज हरिदम लोककेँ होइ छइ। कोनो बेर बेगरतामे समाजे ठाढ़ होइए। अनगौंआँ तँ सिरिफ भोजे खाइए आ खुआबैए। तँए ई काज अधला छी।

कर्मनाथ : (मुड़ी डोलबैत) ई तँ वैचारिक मतभेद भेल।

विकास : सिरिफ वैचारिके मतभेद नहि, एकरा पाछू वास्तविकतो अछि। बेटा-बेटीक बिआह लोक आन गाममे करैए। जइसँ ओ समाज नहि, कुटुम होइए। जिनका संग नोत-पिहान चलिते अछि। मुदा आन गामक जातिकेँ समाज मानि खाइ-पीबैक बेवहार बनाएब, उचित नहि। हँ, उचित तखन जखन समाजक सभ जातिकेँ खुआ, आनो गामक लोककेँ खुआबी। मुदा समाज तँ जीबैतसँ लऽ कऽ मृत्यु धरि संग रहैबला होइत। तँए, आन गामक जातिसँ पैघ अपन समाज होइए। जेना केतौ आगि लगै

छै तँ समाजेक लोक, चाहे ओ कोनो जातिक किएक ने हुअए, आबि कऽ मिझबैए। तहिना कियो बिमार पड़ैए वा कोनो आफत-असमानी होइ छै तँ समाजे आगू अबैए। अही लऽ कऽ दुनू गोरेक बीच मतभेद अछि। मतभेदे नहि अछि, एक जाति रहनौं खेनाइयो-पिनाइ बन्न अछि। हमरो समाज अलग अछि आ हुनको अलग छैन। सिरिफ एक गाममे छी तँए गौंआँ छिआ।

कर्मनाथ : तखन तँ गाम दू समाजमे बँटि गेल अछि?

विकास : (दृढ़तासँ) निसचित! निसचित दू भाग मे बँटल अछि। एक-समाजक लोक गौंआँसँ जुड़ल अछि आ दोसर समाजक लोक अनगौंआँ जाति सभसँ जुड़ल अछि। तँए अहाँक ऐठाम जे कोनो भोज होइए तँ हम खाइ-ले नै जाइ छी आ ने अहाँक परिवार हमरा ऐठाम अबै छैथ।

कर्मनाथ : ई तँ जबरदस कारण अछि!

विकास : हमरा संग एहेन समस्या अछि जे जँ अहाँक ऐठाम खाइ-ले जाएब तँ अपन वैचारिक समाज टुटि जाएत। जँ वैचारिक समाज टुटि जाएत तँ फेर ओहिना बिनु जड़ि-पालोक समाजमे मिज्झर भऽ जाएब। जइ समाजमे बलात्कारकेँ धिया-पुताक खेल बुझल जाइए। गारिकेँ मजाक बुझल जाइए आ आर्थिक शोषणकेँ–माने धनक बेइमानीकेँ–परम्पराक चलैन बुझल जाइए।

कर्मनाथ : (मुड़ी डोलबैत) हँ, ई तँ होइए।

विकास : आइ धरिक जिनगीमे हम दुइए-टा काजक संकल्प कऽ करैत एलौं आ अखनो करै छी। पहिल, समाजक भोज आ दोसर बेटा-बेटीक बिआहमे दहेज, ने लेब आ न देब। जे सिरिफ हमहींटा नहि, अपन जे समाजक लोक अछि

ओ सभ करैए। अही दुनू काजे तोरा परिवारसँ हमरा मनमुटाउ बुझहक वा पार्टी बुझहक वा दू समाज बुझहक, भऽ गेल अछि। अच्छा, आब अपना काजपर आबह। तूँ तँ अफसर छह, तखन किए अफसरक समाज छोड़ि गामक समाजमे कुटुमैती करए चाहै छह?

कर्मनाथ : अफसरक समाज कहियौ वा नोकरिया, ओ अस्थाइ होइए। जहिना रबड़क बैलूनमे जाधैर हवा रहल ताधैर अकासमे उड़ैत रहैए मुदा हवा निकैलते वा बैलून फुटिते केतौ जा कऽ खसि पड़ैत अछि। तहिना नोकरियाक जिनगी सेहो अछि। जाधैर नोकरी रहल, पावरमे रहैए आ नोकरी समाप्त होइतै जिनगी केतए-सँ केतए चलि जाइ छइ। मुदा सामाजिक जिनगी से नहि, स्थायी होइत अछि। सामाजिक जिनगी बहुआयामी होइत अछि। जहिना गनगुआरिकेँ सैकड़ो पएर होइए, जइमे सँ एकाध-टा टुटनौं कोनो अन्तर नहि, तहिना। एकर अतिरिक्तो कारण सभ अछि।

विकास : आरो की कारण छइ?

कर्मनाथ : नोकरी करैबला सिरिफ एक्के इलाकाक नै होइत। जइसँ जिनगीक एहेन अनेको काज अछि जइमे एकरूपता नै आबि पबैत अछि। मुदा सामाजिक जिनगी ओइसँ विपरीत होइत। जाधैर हमरो नोकरी अछि ताधैर हमहूँ घरसँ बाहर छी, मुदा नोकरी समाप्त होइते गाम चलि आएब।

विकास : बहुत बढ़ियाँ विचार छह। आइ जे देखै छहक जे गाम घरक दशा दिनो-दिन पछुआएल जा रहल अछि, एकर की कारण? एकर कारण अछि गामक पढ़ल-लिखल

लोककेँ गाम छोड़ि कऽ चलि जाएब। जाधैर गामक सम्पैतमे बुधिक उपयोग नै हएत ताधैर गामक सम्पैत निच्चेँ-मुहेँ ससरैत जाएत। ओकरा आगू-मुहेँ बढ़बैले नव ज्ञानक जरूरत अछि। जखने नव ज्ञानक उपयोग गाममे हुअ लगत तखने नव तकनीक, नव लूरि आबि जाएत। नव तकनीक आ नव ढंग नव मनुक्ख पैदा करत। नव मनुक्ख पैदा होइते नव समाज बनि कऽ ठाढ़ भऽ जाएत। जे समैयक अनुकूल चलए लगत।

कर्मनाथ : (मुड़ी डोलबैत) हूँ-उ-उ!

विकास : एतबे नहि, अपना इलाकाक–माने मिथिलांचलक–जे अमूल्य बेवहार, अमूल्य क्रिया-कलाप अछि ओ धीरे-धीरे घटि रहल अछि। आ एहेन बुझि पड़ैए जे घटैत-घटैत मेटा जाएत। लोकक जीवन शैली बदैल रहल अछि, जइसँ सामाजिक सम्बन्ध, कला, संस्कृति सभ किछु प्रभावित भऽ रहल अछि। नान्हि-नान्हिटा काज, नान्हि-नान्हिटा बातमे लोक तेना ने दिन-राति ओझराएल रहैए जे आगू-मुहेँ ससरैक कोन बात जे पाछूए-मुहेँ ढरैक रहल अछि। जइसँ हरिदम वातावरण दूषित भेल रहैए। अनेरो लोक हरिदम चिन्ता आ तनावमे पड़ल रहैए।

कर्मनाथ : ऐ दिशामे समाजक बुद्धिजीवी लोकैनकेँ आगू आबए पड़तैन।

विकास : निसचित। कोनो समाजकेँ आगू बढ़बैले वा गलत दिशासँ सही दिशा दिस लऽ जाइले बुद्धिजीविये अगुआइ कऽ सकै छैथ। जेकरा अपने दिशाक बोध नइ छै ओ आगू-मुहेँ केना बढ़ि सकैए। ओना पढ़लो-लिखल सभकेँ दिशाक बोध होइते छैन, सेहो बात नहि। जेना कहल

गेल अछि जे पोथीए पढ़ि लोक ज्ञान अर्जित करैए आ पोथीए लोककेँ अज्ञानोक दिशामे बढ़बैए।

कर्मनाथ : (गम्भीर होइत) अपने जे बात कहि रहल छी, ओइ दिस हमरो धियान अखन धरि नै गेल छल।

विकास : (मुस्कियाइत) अखन धरि तोहर धियान, एक बेवस्थाक बीच रहलह तँए नीक-अधला बेरबैक ज्ञान नै भेलह। किएक तँ बेवस्था बेवहारक माघ्यमसँ चलैए।

कर्मनाथ : (मुड़ी डोलबैत) तखन तँ नीक-अधला बुझैले मनसँ नै विवेकसँ निर्णए..?

विकास : निसचित! ऐमे एक्को पाइ सन्देह नहि। मन निर्णए करै, बुधिक हिसाबसँ। बुधि बनै छै बेवस्थाक हिसाबसँ, तँए लोकक जे सोचैक आ बुझैक प्रक्रिया अछि ओ बेवस्थाक अनुकूल होइए। मुदा बेवस्था केहेन अछि, से ओइसँ आगूक प्रक्रिया छी। हमरा नीक हुअए, ई सभ चाहैए। मुदा अहीक भीतर प्रश्न उठैए जे अपन नीकक संग जँ दोसरकेँ अधला होइ, तखन? नीक तँ तखन ने नीक जे अपना संग-संग दोसरो-ले नीक होइ। जँ दोसरकेँ नीक नै होइ तँ अधलो नै होइ। हँ, ई बात जरूर जे किछु काज बेकतीगतो होइए, जइसँ दोसरकेँ मतलब नइ होइत अछि।

कर्मनाथ : (नमहर साँस छोड़ैत) तब तँ बिआहमे जे दहेजक चलैन अछि, सेहो ओहने अछि?

विकास : (मुस्कियाइत) निसचित! दहेज लेनिहार तीन रंगक अछि। पहिल अछि जे जेते दहेज लइए ओइसँ दोबरा-तेबरा कऽ बजैए। दोसर तरहक अछि, जे बेटा बिआहमे जेते दहेज लइए ओइसँ कम बेटीक बिआहमे दइए वा

नहियोँ दइक विचारमे रहैए। तेसर तरहक अछि जे दहेज लेलाक बादो छिपबए चाहैए। आब तोँही कहह जे एना किए अछि?

कर्मनाथ : एहेन ओझराएल सवालक हल केना होएत?

विकास : (हँसैत) यएह काज तँ हम अपना समाजमे कऽ रहल छी। ऊपरसँ नइ बुझि पड़तह मुदा समाजक भीतर समाज बनि चलि रहल अछि। जहिना बेटा तहिना पढ़ौल शिष्य। तूँ हमर पढ़ौल शिष्य छिअ, तँए तोरा हम बिसवास दइ छिअह, हम्मर जे जरूरत तोरा हुअअ, तइले तैयार छिअ। तोहर बेटी हम्मरो तँ पोतीए छी। तोरा हम शुरूहेसँ जनै छिअ जे आन नोकरिया जकाँ तूँ लेन-देनसँ परहेज केने छह। तोरा एक्को पाइ दहेज कहि खरच नइ हेतह। तखन तँ बेटा-बेटीक बिआह छी। जे बेवहार अदौसँ आबि रहल अछि ओ तँ पुरबैये पड़तह।

कर्मनाथ : आइ धरि जे समस्या माथकेँ भरियौने छल से निकैल गेल। मन हल्लुक भऽ गेल। मुदा एकटा बात कहि दइ छी काका, हम तँ नोकरिया छी। गनल दिनक छुट्टी अछि तँए दोहरा कऽ छुट्टी नै लिअ पड़ए तैपर नजैर राखब।

विकास : (मुड़ी डोलबैत) हमहूँ नोकरी कऽ चुकल छी तँए छुट्टीक महत बुझै छिऐ। काल्हियेसँ हम तोरा काजक पाछू पड़ि जाएब। परसू फेर भेँट हएब। बेटी किछु विशेष पढ़ल छह तँए काज थोड़े भरिगर जरूर अछि। किएक तँ गाम-घरमे लड़कीक कोन बात जे लड़को कम पढ़ल-लिखल अछि। बी.ए. पास लड़की-ले कम-सँ-कम एम.ए. पास लड़का चाहिये। नहि तँ इंजीनियर, डाक्टर, वकील तँ चाहबे करिऐ।

कर्मनाथ : आब हम कनी हटि कऽ एकटा सवाल पुछै छी। अखनो आ पहिनौंसँ देखैत एलौं जे नीक-सँ-नीक–बेसीसँ बेसी–पढ़ल-लिखल लड़काक संग अनपढ़ लड़कीक बिआह होइए वा होइत आएल अछि। ओ उचित बुझल जाइ छै, मुदा अधिक पढ़ल-लिखल वा पढ़ल-लिखल लड़कीक संग कम पढ़ल वा अनपढ़ लड़काक संग बिआह करब उचित वा अनुचित?

विकास : ऐ प्रश्नक उत्तर दोसर दिन देबह। अखन हमर मन तोरा काजमे ओझरा गेल अछि।

❑

शब्द संख्या : 3392

चारिम अंक

(रामविलासक घर)

रामविलास : जिनगीक साठिम बरखमे आइ बुझि पड़ैए जे निचेन भेलौं सेहो सोलहन्नी नहि, पाँच पाइ चिन्ता अखनो बाँकीए अछि। मुदा तैयो आइ अपनाकेँ निचेन मानै छी, किएक तँ जहिना एक दिन बितने पूर्वज सौंसे माध बीतब मानि लेलैन, तइ हिसाबे पाँच पाइ भार किछु ने भेल। जिनगीक साठि बरखक रग्गरघसक उपरान्त जे फल भेटल ओ तँ सुअदगर आ मीठ हेबे करत, तँए मनमे खुशी सेहो अछिए।

माधुरी : मनमे खुशी आछि तँ नाचू।

रामविलास : नाचत तँ शरीरक भीतर जे मन अछि ओ। हम कोनो नचनियाँ छी जे मंचपर नाचब। तखन हँ, एकटा बात मनमे जरूर उपकैए जे अहाँसँ भरि मन गप करी।

माधुरी : ठीके लोक कहै छै जे 'पुरुखक बात आ गाड़ीक पहिया, दुनू बरबैर!' जहिना गाड़ीक पहिया घुमैत रहैए तहिना पुरुखोक बात। कहू जे केहेन अकरहर बात बजै छी जे एते दिन दुनू गोरे संग-संग रहलौं मुदा भरि मन गप कहियो ने केलौं..!

रामविलास : (मुँह बिजकबैत) अहाँकेँ की होइए जे हम फुसिए कहलौं?

माधुरी : अपना की बुझि पड़ैए जे साँचे बजलौं?

रामविलास : सुआइत लोक कहै छै जे 'पुरुख आगू बढ़ैत-बढ़ैत चोर-डकैत, लुच्चा, लम्पट सभ बनि गेल मुदा मौगी गोबरक चोत जकाँ ठामे-के-ठामे रहि गेल!' अहींसँ पुछै छी- कहू कािल्ह धरि हम कहिया निचेन भेल छेलौं आ अहाँसँ भरि मन हँसी-खुशीक बात केलौं?

माधुरी : कोन बड़का पहाड़ उनटाबैमे छेलौं जेकरा उलटबैमे साठि बरख लागि गेल?

रामविलास : (गम्भीर होइत) बड़ सुन्नर बात कहलौं। सभसँ पहिने ई बात बुझि लिअ जे जहियासँ हम-अहाँ एकठाम भेलौं आ जाधैर नै भेल छेलौं, तँए पहिने दुनू गोरेक बिआहसँ पहिलुका बात कहि दइ छी। तेकर बाद बिआहक बादक बात कहब। जहिया अहूँ अपना गाममे रहै छेलौं आ हमहूँ अपना गाममे।

माधुरी : अहाँक अपन कोन गाम छल? हम तँ अपन गाम अपन नैहरकेँ बुझै छी।

रामविलास : एतबो ने बुझै छिऐ जे अपन गाम होइए अपना रहने। से जँ नै रहलौं तँ 'अपन गाम' केना भेल? बड़बढ़ियाँ अहाँ अपन नैहरकेँ अपन गाम कहलिऐ। मुदा हमरा तँ अपना गामसँ भगा देलक।

माधुरी : के भगा देलक?

रामविलास : गरीबी भगा देलक। जखन हम दसे-बारह बरखक छेलौं बाबू दुखित पड़ला। ती नियेँ गोरेक परिवार छल, माए-बाबू आ हम। हम ताबे खेलाइते-धुपाइते रही आ धरीए

पहिरैत रही। दुखसँ बाबूक हालत दिनो-दिन बिगैड़ते जाइत रहैन। असकरे माए बोइनो करि कऽ आनए आ बाबूओक सेवा टहल करैत रहए। दिन-राति तंग-तंग रहैत छल। बेवस भऽ एक दिन कहलक जे बौआ गाममे सभ अन्न बेतरे मरि जेबह। गाममे ने कियो काज करौनिहार अछि आ ने अपना कोनो आए-उपाए छह। तँए केतौ जा कऽ कमा आनह।

माधुरी : गामसँ माइये जाइले कहलैन?

रामविलास : हँ। मुदा ओहो वेचारी की करैत।

माधुरी : गामसँ असकरे केतए गेलिऐ?

रामविलास : असकरे कहाँ गेलिऐ। अपनो गामक आ लग-पासक आनो-आनो गामक लोक सभ साल पटुआ कटैले, धनरोपनी करैले पूभर जाइ छल। ओकरे सबहक संगे हमहूँ गेलौं। तीन दिने मोरंग पहुँचलौं। ताबे कोसी धारमे पुलो ने बनल छेलइ। नाहेपर पार भेलौं। भीमनगरसँ जगबोनी बस चलै छेलइ। कोसी पार भऽ कऽ बथनाहामे बस पकड़लौं जे नेने-नेने जगबोनी पहुँचा देलक। जगबोनीसँ पएरे मोरंग विदा भेलौं। तेसर दिन किरिण डुमैत-डुमैत मोरंग बजार पहुँचलौं। ओइ दिन हाटो रहइ। हम सभ हाटेपर रही कि एकटा थारू जे दुनू परानी हाट आएल रहए। ओ जे हमरा सभकेँ देखलक तँ बुझि गेल जे पछबरिया सभ छी। लगमे आबि कऽ कहलक जे 'ऐ देशवाली भैया, हमरा संगे चलह।' सभ कियो ओकरे संगे विदा भेलौं। जहाँ हाटसँ निकलए लगलौं कि कहलक - 'भैया तोरा सभकेँ भूख लागल हेतह, पहिने किछु खा लएह।' दू छिट्टा मुरही आ कचड़ी कीनि कऽ दऽ देलक।

सभ कियो गमछाक खोंचैड़ बना मुरही लऽ लेलौं आ खाइते विदा भेलौं। तेसर साँझमे ओकरा ऐठीम पहुँचलौं। देखैमे तँ ओ अलबटाहे जकाँ बुझि पड़ए, मुदा रहए पूजिगर। आठ जोड़ा बड़द खुट्टापर बन्हने छल।

माधुरी : केते दिन ओकरा ऐठाम रहलिऐ?

रामविलास : दू मास। एक मास पटुआक काज चललै आ एक मास धनरोपनी।

माधुरी : काजक लूरि केना भेल?

रामविलास : सभकेँ जेना-जेना करैत देखिऐ, तहिना-तहिना हमहूँ करिऐ।

माधुरी : दू मासमे केते कमेलिऐ?

रामविलास : डेढ़-डेढ़ साए रुपैआक फाँट सभकेँ भेलइ। ओइमे सँ हम सबा साए रुपैआ गाम पठा देलिऐ आ पच्चीस रुपैआ लऽ कलकत्ता चलि गेलौं। कलकत्ता तँ गेलौं मुदा कियो चिन्हारए रहबे ने करए। बस स्टैण्डमे उतैर एकटा दोकानमे खाइ-ले गेलौं। खाइते रही कि तीन-चारिटा मटिया चाह पीबैले आएल। ओ सभ अपने बोली बजइ। हम खेबो करी आ ओकरे सभ दिस तकबो करी। हमहूँ हाँइ-हाँइ कऽ खा हाथ धोइ, दोकानदारकेँ पाइ दऽ एक गोरेकेँ कहलिऐ, भाइ हमहूँ काजे करैले एलौं, केतौ जोगार लगा दएह। ओ सभ अपने संगे हमरो नेने गेल।

माधुरी : मटिया सभ काज की करइ?

रामविलास : बोरो उघै आ आनो-आनो सामान सभ उघै। ओकरे लाटमे हमहूँ काज करए लगलौं। बरख दिन ओकरे सबहक संगे रहलौं। बरख दिनक पछाइत ओहो सभ गाम आएल आ हमहूँ एलौं। बर्खे दिनमे केते गोरेसँ

चिन्हारए भऽ गेल। गाम आबि एकटा भीतघर बन्हलौं। बाबूओक मन नीक भऽ गेलैन। अपन मासुल-ले रुपैआ रखि अन-पानि कीनि कऽ घरमे दऽ देलिऐ आ डेढ़ मासक पछाइत फेर चलि गेलौं।

माधुरी : फेर मटियेबला काज करए लगलौं?

रामविलास : हँ, पाँच बरख धरि मटियाक काज करैत रहलौं। तेकर बाद अहाँक संग बिआह भेल। बिआहक पछाइत जे कलकत्ता जाइत रही कि दरभंगामे एक गोरे अपन परिवारक संगे हमरे लगमे आबि कऽ बैसलैथ। ओहो कलकत्ते जाइत रहैथ। समस्तीपुर तक हमहूँ चुप्पे-चाप बैसल रही, मुदा ओ सभ अपनामे गप-सप्प करैत रहैथ। ताबे समस्तीपुर तक छोटकीए गाड़ी चलइ। समस्तीपुरसँ बड़की गाड़ी कलकत्ता जाइ। जखन समस्तीपुर टीशन लगिचाएल कि ओ हमरा पुछलैन, 'बौआ केतए जेबह?' हम कहलयैन- 'कलकत्ता।' ओ कहलैन- 'हमहूँ कलकत्ते जाएब।' हमरा समानो सभ अछि आ दूटा बच्चो अछि, तँए कनी समस्तीपुर टीशनमे बच्चा सभकेँ सम्हारि दिहह। हमहूँ सएह केलौं।

माधुरी : समस्तीपुर टीशनमे जे गाड़ी पकड़लिऐ ओ सोझे कलकत्ता लऽ गेल, आकि बीचमे केतौ फेर बदलए पड़ल?

रामविलास : नहि। बीचमे केतौ नै बदलए पड़ल। समस्तीपुर टीशनमे जे गाड़ीपर बैसलौं, तखनसँ वएह चाहो पीआबैथ। ओ अपने इलाकाक रहैथ। हिन्द मोटर कारखानामे इंजीनियर छला। देखैमे तँ साधारणे बुझि पड़ैथ, मुदा साक्षात् देवता छला। ओ कहलैन जे बौआ तूँ हमरे संगे

चलह। हमरे ऐठाम रहिहह आ तोरा हम करखन्नेमे काज धरा देबह। तहियासँ हम हुनके ऐठाम रहए लगलौं।

माधुरी : (मुस्कियाइत) अखन धरि बिआहसँ पहुलके जिनगीक बात कहलिऐ?

रामविलास : हँ। बिआहक पछाइत तँ अहूँ आबिये गेलौं आ देखबे करैत एलिऐ जे सालमे एकबेर महिना दिनक छुट्टीमे अबै छेलौं आ तैबीच जे-जेना घरक काज रहै छल ओकरे सम्हारैमे मासो बीति जाइ छल। तखन आब अहीं कहू जे हम कहिया निचेन भेलौं?

माधुरी : अच्छा, आब अपन खिस्सा-पिहानी छोड़ू। काल्हि तँ बौआक रिजल्ट निकैलिये गेल। पढ़ाइयो ओकर समाप्ते भऽ गेलइ। आब ओकर बिआह कऽ लिअ।

रामविलास : अपनो मनमे सएह अछि। मुदा अखन धरि तँ घरक गारजन अहाँ रहलौं, हम तँ सभ दिन बाहर खटलौं। घरक तीत-मीठ तँ बुझलिऐ नहि। आब रिटायर भऽ कऽ एलौं हेन, आब जे घरक भार उठबए चाहब से हमरा बुते सम्हरत?

माधुरी : कोनो काज केनहि लोक काज सिखैए। अहाँ केतबो अनाड़ी छी तैयो तँ पुरुखे छी। हम केतबो जीवनी छी तैयो तँ स्त्रीगणे छी। घरक काज सम्हारि सकै छी, मुदा घरसँ बाहरक काज केना सम्हारल हएत।

रामविलास : अहूँक बात एकतरहक जरूर अछि। मुदा आब तँ तीन गोरे भेलौं। मदनोक पढ़ाइ समाप्ते भऽ गेल, तँए सभसँ पहिने ओकर बिआह कऽ लेब अछि।

(विकासक आगमन)

रामविलास : (हँसैत) आउ-आउ, मास्टर साहैब। अहोभाग्य हम्मर आ हमरा परिवारक! बहू दिनक पछाइत अपनेसँ भेँट भेल। शरीरसँ स्वस्थ रहै छिऐ किने?

विकास : हँ।

रामविलास : परिवारक सभ आनन्दसँ छैथ किने?

विकास : हँ। बेटा हाइ स्कूलमे मास्टरी करैए। अपने तँ आठ साल पहिनहि रिटायर भऽ गेलौं।

रामविलास : (मुस्कियाइत) वाह, वाह। हमरो मदन एम.कम. केलक। काल्हिये ओकर रिजल्ट निकललै। फस्ट डिवीजन भेलइ।

(पत्नीसँ)

अनासुरती मास्टर साहैब एला हेन, भाग्य हम्मर। किएक तँ मास्टरे साहैबक पढ़ौल मदन छिऐन, तँए सभसँ पहिने मास्टर साहैबकेँ मिठाइ खुअबियौन।

(माधुरी जाइए)

विकास : मदन कहाँ अछि? बिना असिरवाद देने मिठाइ केना खाएब!

रामविलास : ओ तँ आइये भोरुका गाड़ीसँ दरभंगा गेल, अपन संगियो-साथी आ प्रोफेसरो सभसँ भेँट करए। भऽ सकैए सौंझुका गाड़ीसँ घुमत। नहि जँ संगी सबहक संगे सिनेमा देखए लगत, तखन काल्हि कखनो औत। हमहूँ पैछला मास रिटायर कऽ गेलौं। मदनेक दुआरे घरक सभ काज जक-थक पड़ल अछि। किएक तँ जाधैर ओ पढ़ैत छल ताधैर घरक काजमे केना हाथ लगैबतौं। मुदा सोचै छी जे सभसँ पहिने ओकर बिआह कऽ ली। ओना अखन धरि घरो बनौनाइ पछुआएले अछि।

विकास : हँ, हँ, बड़बढ़ियाँ विचार अछि।

रामविलास : एकटा भार मास्टर साहैब अहूँकेँ दइ छी, किएक तँ गाम-घरक (समाजक) बात अपने बुझै छी नहि। धन्यवाद घरेवालीकेँ दी जे वेचारी स्त्रीगण रहितौं अखन धरि घर सम्हारि कऽ चलौलैन। हम तँ जिनगी भरि केवल कमेलौं, एकर अलाबा तँ किछु केलौं नहि। अपनेकेँ यएह भार दइ छी जे मदनक बिआह करा दियौ।

विकास : भार तँ बड़बढ़ियाँ देलौं, मुदा..?

रामविलास : मुदा की?

विकास : बेटा-बेटीक बिआह आब विजनेस भऽ गेल अछि। जइसँ हमरा सख्त घृणा अछि। सत्तैर बरखक जिनगीमे, सैकड़ो बिआहक अगुआइ केलौं मुदा एकोटामे लेन-देन नहि केलौं। तखन आब अहीं कहू जे ई भार हमरा उठत?

(प्लेटमे मिठाइ नेने माधुरीक प्रवेश)

रामविलास : मास्सैब, लऽ दऽ कऽ एकटा बेटा अछि, अगर जँ ओकरो बेचिये लेब तखन मुइला पछाइत एक चुरूक पानियोँ के देत। बेचलाहा बेटा जँ देबे करत तँ ओइसँ थोड़े संतोख हएत।

विकास : (मुस्कियाइत) कहलिऐ तँ बड़बढ़ियाँ, मुदा आब लोक थोड़े ई बात बुझैए। आब तँ लोककेँ रुपैआक आगि मनमे लागि गेल छइ। रुपैयेकेँ धरम-करम सभ बुझैए। समाजोक एहेन रूखि भऽ गेल छै जे जेकरा रुपैआ छै ओकरे पुछैए आ जेकरा नै छै ओकरा कियो ने पुछैए।

रामविलास : (मुस्कियाइत) मास्सैब, हम अपन बात कहै छी, जाधैर हमहूँ नै बुझै छेलिऐ ताधैर मनमे हरिदम रुपैयेक बात रहै छल। 'संतोख'केँ एकटा शब्द मात्र बुझै छेलिऐ। मुदा

धन्यवाद ओइ इंजीनियर साहैबकेँ दिऐन जे आँखिक परदा हटा देलैन। आब रुपैआकेँ एकटा साधन मात्र बुझै छी, जिनगी नहि।

विकास : ओ इंजीनियर के छला?

रामविलास : हुनकर घर अपने इलाका छैन मुदा बच्चेसँ ओ कलकत्तेमे रहला। ओतै पढ़बो केलैन आ हिन्द मोटरमे नोकरियो केलैन। बहुत दिनक बात छिऐ, हमहूँ कलकत्ता जाइत रही आ ओहो दरभंगामे गाड़ी पकैड़ कलकत्ते जाइ छला। गाड़ीए-मे भेँट भेला। अपने संगे हमरो लऽ जा पहिने तँ, उठे काजमे घरौलैन मुदा किछुए दिनक पछाइत हमरो परमानेन्ट नोकरी भऽ गेल। हरिदम ओ यएह कहैथ जे 'रामविलास! गरीबक पूजी मेहनत छिऐ, तँए मेहनतकेँ अपन दोस्त बना कऽ चली। हुनके परसादे हम हेड मिस्त्री भऽ कऽ रिटायर केलौं। मुरुख रहितौं हम कमा कऽ बुर्ज लगा देलिऐ।

विकास : की बुर्ज लगा देलिऐ?

रामविलास : जेना-जेना आमदनी बढ़ैत गेल तेना-तेना अपन कारोबार बढ़बैत गेलौं। जाबे मशीनक ज्ञान नै भेल छल ताबे एकटा सेकेण्ड हेण्ड टैक्सी किनलौं। एकटा ड्राइवरकेँ पचास रुपैआ रोजपर चलबैले दऽ देलिऐ। अपन जे दरमाहा हुअए ओइमे अदहा गाम पठाबी आ अदहा जमा करी। किछुए दिनक पछाइत पुरना टेक्सीकेँ बेच नवका कीनि लेलौं। तखन भड़ो बेसी हुअ लगल आ तैबीच अपनो मिस्त्रीक हेल्परसँ मिस्त्री बनि गेलौं।

विकास : बाह-बाह। तखन?

रामविलास : जखन मिस्त्री बनि गेलौं तखन दरमहो दोबरा गेल। आ गाड़ीकेँ बनौनाइ सेहो सीखि लेलौं। आठ घन्टा कारखानामे ड्यूटी करी बाँकी समयमे बजारक गाड़ी सभके ठीक करए लगलौं। फेर तेसर टेक्सी लेलौं। ओहो भाड़ापर लगा देलिऐ, मन पड़ैए तँ हँसी लगैए। जहिना रुपैआ-ले मन जरल रहै छेलए तहिना रुपैआक बरखा हुअ लगल...।

विकास : बाह-बाह! तेकर पछाइत?

रामविलास : आमदनी देखि मन हुअ लगल जे कलकत्तेमे जमीन कीनि मकान बना ली। मुदा जखन हुनका–माने इंजीनियर साहैबकेँ–पुछलयैन तँ ओ कहला जे विचार तँ बड़बढ़ियाँ छह मुदा मुरूखपाना हेतह। अपना इलाका सन दुनियाँमे कोनो इलाका नै अछि। खाली पाइये सभ किछु नइ छिऐ। ऐठाम ने खेत किनह आ ने मकान बनाबह। हँ, जाबे नोकरी करै छह ताबे किछु टेमप्रोरी कारोबार करै छह तँ से करह। मुदा रिटायर भेलापर गाम चलि जइहह।

विकास : किए गाम अबैले कहलैन?

रामविलास : हमहूँ ई बात पुछलयैन तँ बुझबैत कहला जे 'देखहक अपन इलाका बजारक हिसाबे बड़ पछुआएल अछि। पछुआएल इलाकामे लोकक आमदनियोँ आ जिनगियो पछुआएले रहै छइ। मुदा ऐसँ केकरो घबरेबाक नै चहिये। कोनो इलाका अगुआएल अछि ओइठामक लोकक मेहनतसँ। तँए जँ लोक मेहनत नै कऽ अपन इलाक्केकेँ छोड़ि देत तखन ओ इलाका अगुएतै?

विकास : (गम्भीर होइत) बड़ पैघ बात कहलैन।

रामविलास : तैबीच मदन चिट्ठी लिखलक जे बाबू अपने गाम होइत 'राष्ट्रीय राज पथ' (एन.एच.डब्ल्यू) बनि रहल अछि। अपने तँ चिट्ठियो ने पढ़ल होइए हुनके–इंजीनियरे साहैबकेँ–पढ़ैले देलिऐन। चिट्ठी पढ़ि मने-मन खूब हँसला। कहलैन- 'रामविलास, अहाँ मिस्त्री छिहे, आब अहाँले कलकत्ता गामे भऽ जाएत।' हमरा कोनो अर्थे ने लागल। तखन ओ बुझा कऽ कहलैन जे 'नोकरियो लगिचाएले अछि आ बड़का सड़को बनियेँ रहल अछि। ठाठसँ ऐठामक सभ गाड़ी बेच एकटा नमहरका बस कीनि लेब। ताबे बेटोक पढ़ाइ समाप्ते भऽ जाएत। बेटाकेँ बस दऽ देबै आ अपने एकटा लेथ मशीन कीनि कऽ रोडे-साइडमे बैसा देबइ।' हमहूँ खेत-पथार नै किनलौं। सिरिफ घर लग तीन कट्ठा कीनि लेलौं।

विकास : बड़ सुन्नर विचार अछि।

रामविलास : ओना अखन सभ काज पछुआएले अछि। ने घर बनेलौं हेन आ ने बस किनलौं। मुदा तीस लाख रुपैआ हाथमे रखने छी। तहीसँ सभ काज भऽ जाएत। अपनो नोकरीए करै छेलौं आ बेटो पढ़िते छल, तँए केना करितौं। आब पाइक भूख मेटा गेल आ दुनियाँकेँ देखैक ढंग सेहो बदैल गेल।

विकास : दुनियाँ देखैक की ढंग बदैल गेल?

रामविलास : जाबे मिस्त्री नइ बनल छेलौं आ कम आमदनी छल ताबे जे लोकक हाय-फाय देखिऐ तँ हुअए जे कोन दरिदराहा भगवान हमरा सभकेँ जनम देने छैथ जे सभ दिन सभ चीजक अभावे रहैए। मुदा जखन मिस्त्री बनलौं आ आमदनी बढ़ल तहियासँ बुझि पड़ए लगल जे हमरा सन-

सन दरिद्र तँ सौंसे दुनियेँ भरल अछि। जइसँ मनमे संतोषक अंकुर जनमए लगल। आब ओ अंकुर विशाल गाछक रूपमे भऽ गेल अछि। जइसँ आँखिक इजोत सुन्नर होइत गेल। आब बुझि पड़ैए जे दुनियाँ बड़ सुन्नर अछि।

विकास : की सुन्नर?

रामविलास : आब देखै छी जे दुनियाँ, स्वर्गोसँ सुन्नर आ हजारो तीर्थ स्थान मिलौलासँ जेहेन होइत तहूसँ पवित्र आ पैघ अछि। कोनो देव स्थानमे गनल-गूथल देवताक बास अछि मुदा दुनियाँ रूपी तीर्थ स्थानमे अरबो-अरब देवता बास करैए। किए लोक ऐ देवस्थानसँ हटए चाहत। मनमे संकल्प शक्तिक जन्म भेल। जे संकल्प शक्ति विचारक रस्ता बदैल देलक। जइसँ जिनगी फूलोसँ हल्लुक बनि गेल अछि।

विकास : ई तँ दुनियाँ देखैक नजैर भेल, मुदा अपना जिनगीमे की सभ आएल?

रामविलास : जाधैर जिनगी नै बदलल छल ताधैर कमेनाइ-खेनाइ मात्र बुझै छेलौं। मुदा आब दोसरकेँ मदैत करब सेहो बुझए लगलौं। अनका हाथे जे अपन मेहनत बेचै छेलौं ओ मेहनत आब अपना काजमे लगबए लगलौं। जइसँ मनक गुलामी मेटा गेल।

विकास : आब अपना काज दिस आउ। जहिना अहाँक लड़का पढ़ल-लिखल छैथ तेहने एकटा लड़की हमरो नजैरमे अछि। बी.ए. पास ओ लड़की अछि। शील-सोभाव आ गुणक भण्डार अछि। शुद्ध लक्ष्मी पात्र। ओहेन लड़की भागमन्ते घरमे जन्म लइए।

रामविलास : मास्सैब, हम मदनक पिता जरूर छिऐन मुदा ज्ञान दइबला गुरु तँ अहीं छिऐन। तँए, मदनकेँ अहाँ अपन बेटा बुझि जेतए बिआह करा देबैन, हमरा दिससँ एको-पाइ आपैत नहि। पाइ-कौड़ीक हमरा एकोअना लोभ नै अछि।

विकास : (मने-मन खुश होइत) देखियो ओ लड़की एकटा पैघ अफसरक छिऐन। ओ अपनो साक्षात् देवता छैथ। ओना ओहो हमरे पढ़ौल छैथ, तँए हमरापर हुनको अटुट बिसवास छैन। जे कहबैन से ओ जरूर करता। मुदा आइ-काल्हि देखै छिऐ जे झूठ-फूसक शादी-बिआहमे झगड़ा-झंझट भऽ जाइ छइ। खास कऽ स्त्रीगणक चलैत। जँ से सभ नै हुअए तँ हम ऐ काजमे पड़ब।

रामविलास : मदन तँ अखन नै अछि, नहि तँ अहाँकेँ संगे लगा दैतौं। ओना हम कन्यागत नहि, बरपक्ष छी तँए पहिने पएर केना उठाएब। मुदा अहाँ ऐठाम जेबामे तँ कोनो असोकर्ज नै अछि। चलू हम अहींक संग चलै छी आ कन्यागतसँ गप-सप्प करा दिअ।

माधुरी : माहटरबाबू, बेटा तँ हमरो छी आ पुतोहुओ हेती, तँए, एकटा बात हमहूँ कहै छी। लोक सभ बजैए जे दुनियाँ बड़ आगू बढ़ि गेलै, ई तँ नीक बात। किएक तँ जेतेक आगू दुनियाँ बढ़तै तेते आगू सभ बढ़त। मुदा हम सभ तँ मिथिलाक गाममे रहै छी, जैठाम अखनो लोक पएरे नैहर-सासुर करैए। कोनो सौखे तँ नै करैए, अभावमे करैए। शहर-बजारक लोक हवाइ-जहाजपर उड़ैए आ हमरा सबहक सबारी अखनो नाहे अछि। तँए, ऐ सभकेँ नजैरमे राखब जरूरी अछि।

विकास : (ठहाका दैत) ई सभ कहैक जरूरत नै अछि। पहिनहि कहि देलौं जे कन्या लक्ष्मी पात्र छैथ। साक्षात् लक्ष्मीक आगमन परिवारमे हाएत।

रामविलास : मास्सैब, शुभ काजमे बिलम नै करक चाही। हमरो कपार परहक अन्तिम भार उतैर जाएत। जेहो पाँच पाइ चिन्ता अछि ओहो मेटा जाएत, तँए हम्मर विचार अछि जे अखने अहाँक संग चलि कऽ सभ बात आइये फरिछा लेब।

❑

शब्द संख्या : 2652

पाँचम अंक

(विकासक दरबज्जा। विकास, रामविलास आ तीन चारि गोरे बैसल)

विकास : राधेश्याम, कनी कर्मनाथ बाबूकेँ बजौने आबह?
(राधेश्याम जाइए)

रामविलास : केते दूरपर हुनकर घर छैन?

विकास : थोड़बे दूरपर, लगले चलि औता।

रामविलास : मास्सैब, जखन ऐठाम धरि आबिये गेलौं तखन कहुना काजकेँ सलटियाइये देबइ।

विकास : देखियौ, हम तँ अपना भरि परियास करबे करब तखन तँ...।
(राधेश्यामक संग कर्मनाथ अबैत)

विकास : आउ, आउ कर्मनाथ बाबू। हमरा तँ होइ छल जे अहाँ गाममे छी कि नहि। मुदा संयोग नीक अछि।

कर्मनाथ : अखने हमहूँ मात्रिकसँ एलौं। ममो संगे एला हेन।

विकास : हुनको किए ने संगे नेने एलिऐन?

कर्मनाथ : केना नेने अबितिऐन। राधेश्याम सोझे कहलक जे विकास काका बजौलैन अछि।

विकास : (रामविलासकेँ देखबैत) हिनका तँ अहाँ नै चिन्हैत हेबैन। हिनकर घर सुन्दरपुर छिऐन। हिनका एकटा लड़का छैन

जे ऐबेर एम.कम. केलैन अछि। काल्हिये रिजल्ट निकललैन। ओना ओ लड़का हमरे पढ़ौल छी मुदा किछु दिन पहुलका देखल अछि। मुदा लड़का दिब हेबे करत। (कर्मनाथ मुस्कियाइए)

रामविलास : रिजल्ट सुनि बौआ पराते भिनसुरका गाड़ी पकैड़ संगी-साथी सभसँ भेँट करए चलि गेल। भऽ सकैए जे रौतुका गाड़ीसँ आबि जाए, नहि जँ संगी साथीक संग सिनेमा देखए लगए तँ काल्हि औत।

विकास : रामविलासजी, कर्मनाथ बाबूकेँ तँ अहूँ नहियेँ चिन्हैत हेबैन। ईहो हमरे पढ़ौल छैथ। मुदा हमरा गामक रत्न छैथ। गामक पहिल फूल। बड़का अफसर छैथ। भगवान एहेन बेटा सभकेँ देथुन। जेहने पैघ अफसर तेहने इमानदार। सज्जनक तँ चरचे नहि। ओना जिनगी भरि हमहूँ गुरुआइये केलौं। मुदा औझुका शिक्षक सभ जकाँ नहि, जे अपनो पढ़ौल विद्यार्थी सोझहेमे सिगरेट, बीड़ी पीबैत रहत आ शिक्षक मुड़ी निच्चाँ केने रहता। आजुक जे छौड़ा-माड़े सभ भऽ गेल अछि ओ ने माए-बापकेँ आदर करैए आ ने शिक्षककेँ।

रामविलास : (हड़बड़ा कऽ कर्मनाथकेँ प्रणाम करैत, मने-मन सोचैत जे कहुना कुटुमैती भऽ जाए।) मास्सैब, अहाँकेँ तँ हम कहि देलौं जे भलेँ मदन हम्मर बेटा छी मुदा शिष्य तँ अहींक छी। तँए, मदनपर जेते अधिकार हमर अछि ओइसँ मिसियो भरि कम अहूँकेँ नै अछि। माए-बाप जन्म दइए मुदा जिनगीक रस्ता तँ गुरुए बतबै छथिन।

विकास : (मुस्कियाइत) अहाँ दुनू गोरे सोझामे छी, तँए हमरा किछु बजैत असोकर्ज नहियेँ भऽ रहल अछि। कर्मनाथ बाबू,

अपने तँ बड़ ज्ञानी लोक छी तँए हम किछु बाजी से हमरा उचित नहि बुझि पड़ैए। मुदा दू परिवारक बीचक स म्बन्ध अछि तँए चुप्पो रहब उचित नहि।

(कर्मनाथो आ रामविलासो ठहाका मारि हँसैत)

हम दुनू गोरेकेँ परिचय करा देलौं। आब एकटा बात औझुका समैयक सम्बन्धमे कहि दइ छी।

रामविलास : अबस्स, अबस्स अपने कहि देल जाओ।

विकास : अखुनका समैयक सम्बन्धमे कहि रहल छी। कर्मनाथ अहाँ जेठरैयैत परिवारक छी जे आब निच्चाँ-मुहेँ भऽ रहल अछि। ऊपरसँ निच्चाँ उतरैत आ निच्चाँसँ ऊपर चढ़ैत सामाजिको, आर्थिको आ शैक्षणिको स्तरक एक सिमानपर दुनू गोरे पहुँच गेल छी, तँए, दुनूक बीचमे सम्बन्ध बनब समयानुकूल अछि। रहल बात लड़का-लड़कीक। अपना ऐठामक जे सामाजिक ढर्रा बनि गेल अछि, ओकरा हम झूस बुझै छी। किएक तँ मुरुख लड़कीक संग पढ़ल-लिखल लड़काक बिआहक चलैन अछि। जेकरा सभ कियो नीक बुझि अंगीकारो कऽ नेने छी। मुदा ऐठाम एकटा प्रश्न उठैए जे मुरुख लड़काक संग पढ़ल-लिखल लड़कीक बिआहकेँ नीक मानल जाए वा अधला? मुदा अहाँ दुनूक सम्बन्धमे तँ से बात नहियेँ अछि। तँए, ऐ सम्बन्धमे किछु कहैक जरूरते ने अछि। हृदैसँ असिरवाद बुझिऐ वा धन्यवाद से हम मदन आ चम्पा–दुनू गोरेकेँ दइ छिऐन।

रामविलास : (हँसैत) से की?

विकास : जहिना अहाँक मदन बोनिहार परिवारक दुआरे स्तरपर रत्न भेला तहिना हम नारी शिक्षाक स्तरपर चम्पाकेँ रत्न

बुझै छिऐन। तँए, चाहे रत्नक हाड़ होइ वा फुलक, एकोटाक माला बनैए आ सैयोक, मुदा दुनू पहिरल जाइ छै गरदैनेमे। भलैं एकक डोरा सबहक नजैरपर पड़इ आ दोसराक झँपाएल होइ।

रामविलास : (हँसैत) मास्सैब, हम तँ मुरुख छी तँए अहाँक सभ बात बुझियो ने रहल छी, मुदा एते बिसवास मनमे जरूर अछि जे अहाँ हमर अधला करबनो नहि सोचब।

विकास : देखियौ, दुनू गोरेक विचार एक रस्ताक अछि, तँए ऐ सम्बन्धमे किछु अटकलबाजी करब उचित नहि। आब काजक गपकेँ आगू बढ़ाउ।

कर्मनाथ : हमरा मनमे एक्को पाइ ई शंका नै अछि जे हम लड़काकेँ नहि देखलौं। मुदा जखन ऐठाम पहुँच गेल छी तँ कनी हम अपन दुनू भाँइयोकेँ बजा लइ छिऐन। ऐ दुआरे नहि कि हुनकासँ पुछब जरूरी अछि, बल्कि ऐ दुआरे जे हुनको सबहक मनमे ई ने होनि जे भैया हमरा सभकेँ कहबो ने केलाह। तेतबे नहि, हम तँ चाहब जे अपना बेटियोकेँ देखा दी।

रामविलास : आइ अहाँक बेटी छी तँए सभ भार अहाँ ऊपरमे अछि। मुदा बिआहक उपरान्त तँ हमरो पुतोहुए हेती। तँए, जखन ऐठाम धरि आबिये गेल छी तँ असिरवादो देनै जेबैन।

विकास : (हँसैत) बड़बढ़ियाँ। राधेश्याम, तूँ कनी फेर दोहरा कऽ कर्मनाथ बाबू ऐठाम जा दुनू भाँइयो–माने लालबाबू आ नूनूकेँ–आ चम्पोकेँ सेहो बजौने आबह।

(राधेश्याम बजबैले जाइत)

कर्मनाथ : काका, हम्मर बेटी आइक मनुक्ख छी। सिरिफ पढ़ले-लिखल अछि तेतबे नहि। कम्प्यूटरक ज्ञान सेहो छइ। परिवार चलबैक सभ लूरि छइ। आ सभसँ पैघ गुण ई छै जे मिथिलाक सभ बेवहार, जे नारी-ले अछि, तेकर ज्ञाने नै बेवहारमे सेहो छइ। ओ सिरिफ कुशल गृहिणियेँ नहि, अपना पैरपर ठाढ़ भऽ जीवन-यापन करैक लूरिसँ सेहो सम्पन्न अछि।

रामविलास : कर्मनाथ बाबू, हम मुरुख रहितौं ओहन विचारवान आदमी लग रहि जिनगी बितेलौं, जिनका हम देवता बुझै छिऐन। ओ हमरा अपना पैरपर ठाढ़ भऽ जीबैक लूरि सिखा देलैन। हरिदम ओ कहैथ जे श्रमिक अपन श्रम पूजीपतिक हाथे बेच लइए, जे उचित नहि। तँए, अपन श्रमकेँ अपना काजमे लगेबाक सतत प्रयास करैक चेष्टा करी। ओना हमहूँ जिनगी भरि नोकरीए केलौं किएक तँ एहेन मजबूर परिवारमे जन्म भेल जे दोसर चारा नइ छल। मुदा आब हम एते कमा लेलौं जे अपना परिवारकेँ कहियो नोकरी-ले मुहताज नै हुअ पड़त।

(लालबाबू, नूनू आ चम्पाक प्रवेश)

विकास : रामविलासजी यएह बच्चिया छी।

(एकटकसँ रामविलास चम्पाकेँ देखैत)

रामविलास : मास्सैब, हमरा पाइक भूख नहि, मनुक्खक भूख अछि। (हँसैत) हम अपन बेटेटा नहि देब, बिआहोक खरच करब!

कर्मनाथ : (मुस्कियाइत) बौआ तोरा दुनू भाँइ (लालबाबू आ नूनू) केँ हम ऐ दुआरे बजौलियह जे जहिना बेटी तहिना भतीजी, तँए तोहूँ दुनू भाँइ अपन विचार दएह।

दुनू भाँइ : (लालबाबू आ नूनू) भैया, जैठाम अहाँ आ विकास काका छी, तैठाम हम सभ की बाजब। अहाँ लोकैनक पसिन हमरो पसिन।

कर्मनाथ : (चम्पासँ) बाउ, गोड़ लगहुन।
(सभसँ पहिने चम्पा विकासकेँ, तेकर बाद अपन पिता कर्मनाथकेँ तेकर बाद रामविलासकेँ गोड़ लगलकैन)

रामविलास : (हजारी नोट दैत) भगवान जिनगी दैथ। मास्सैब, भलेँ हम बेटाबला छी मुदा कर्मनाथ बाबूक आगूमे किछु नै छी। धन्यवाद अहाँकेँ (विकासबाबू) दइ छी जे कीचड़सँ निकालि सिंहासनपर पहुँचा दे लौं।

विकास : रामविलासजी, हम दुनू गोरेसँ आग्रह करब जे शुरूहेक लगनमे वैवाहिक काजकेँ निपटा जइ जाउ।

रामविलास : हमरा दिससँ कोनो आपैत नहि।

विकास : एकटा बात आरो। अखन जे लोकक रूखि भऽ गेलैए जे खूब लाम-झामसँ बिआह करैए से नै हेबाक चाही। जेते खरच–चाहे कन्यागतक होइ वा बरक बर पक्षक–फूसमे करब, ओ बेकार। ओ पइसा जँ बँचा कऽ कोनो काज कऽ लेब तँ ओ जिनगी-ले हएत। हम अपने बात कहै छी, हम्मर जे बिआह भेल छल ओइमे सिरिफ पितेजीटा बरियाती गेल रहैथ। तैयो काज भेलइ। तँए, कौआसँ खइर लूटाएब कोनो नीक बात नहि।

रामविलास : अपनेक विचारसँ हमहूँ सहमत छी। जेना कर्मनाथ बाबू कहता तहिना करब।

कर्मनाथ : हम्मर कोनो विचार नहि, जेना विकास काका कहता, तहिना करब।

विकास : बिआहक बात तँ समपन्ने जकाँ भऽ गेल। आब जँ किनको मनमे किछु बात बाँकी हुअए से अखने बाजि चलू।

कर्मनाथ : हम जइ समाजमे अखन धरि छी ओइ समाजक बीच तँ बेटीक बिआह नहियेँ कऽ रहल छी, मुदा ओइ समाजमे तँ बहुत अधिक सम्बन्ध लेन-देनक बनि चुकल अछि। तँए, हम आग्रह करब जे एकबेर, बिआहक पछाइत, बेटीकेँ अपना संगे लऽ जाएब। ओकरो सखी-बहिनपा छै तेकरो सभसँ भेँट-घाँट कऽ लेत। तेकर बाद तँ अहाँ ऐठाम रहत आ वएह अपन घर हेतइ।

विकास : हम नीक जकाँति अहाँक बात बुझि नै सकलौं, कर्मनाथ बाबू।

कर्मनाथ : काकाजी, जइ समाजमे हम रहै छी–माने अफसरक समाजमे–ओहू समाजक बीच पच्चीसो-पच्चास काज, जेना बिआह, मूड़न इत्यादि सभ साल होइते छइ। जइमे हमहूँ आमंत्रित होइत रहलौं। हम तँ सिरिफ भोजने करै छी मुदा प्रति काज पाँच साएसँ दू हजार धरि खरच होइए। मुदा हम तँ ओइ समाजसँ अलग भऽ कऽ अपन काज कऽ रहल छी। तँए, ओइ समाजमे रहैले हमरो किछु करए पड़त किने।

विकास : ओऽऽऽ! हँ ई तँ उचिते छी। की यौ रामविलासजी अहूँकेँ किछु समस्या अछि?

रामविलास : हँ। समस्या तँ हमरो अछि। मुदा हम्मर समस्या दोसर तरहक अछि।

विकास : की?

रामविलास : अपनेकेँ कहिये देने छी जे किछुए दिन पहिने नोकरीसँ निवृत्त भेलौं आ मदनो पढ़िते छल। मरदा -मरदी कियो घरमे छेलौं नहि, जइसँ घरक सभ काज पछुआएले अछि। जेना, घर बनौनाइ, काज सभ ठाढ़ केनाइ, जइकेँ पुरबैमे कम-सँ-कम छह मास जरूर लागत। अखन घरो ने अछि, जइमे रहब। तँए हमरो किछु समय चाही। ओना, बिआह अखन कैयो लेब, मुदा जहाँ धरि बिदागरीक सवाल अछि से ऐगला साल करब।

विकास : की सभ काज करैक अछि?

रामविलास : (हँसैत) मास्सैब, जाधैर कमाइ छेलौं ताधैर अपनो अनके घरमे रहै छेलौं आ बेटो होस्टलेमे रहै छल। सिरिफ पत्नीए-टा घरमे रहै छेली, तँए ने बेसी घरक जरूरत छल आ ने बनबैक समय भेटल। आब दुनू बापूत निचेनो भेलौं आ दुनू काजो सम्पन्न भऽ गेल। तँए, दुनूठाम–रहैयो-ले आ कारोबार करैले–पहिने मकान बनबैक अछि।

विकास : की सभ कारोबार करैक विचार अछि?

रामविलास : सभसँ पहिने रहैले चौघारा घर बनाएब। तीन अलंग आँगन मे रहत आ एक अलंग दरबज्जा रहत। तेकर बाद चौकपर–एन.एच.क बगलमे–तीनटा कोठरी बनाएब, जइमे एकटा कोठरीमे लेथ मशीन बैसाएब। दोसरमे अपन मिस्त्रीआइक कारोबार रहत आ तेसरमे बच्चाकेँ ऑफिसनुमा बना देबै, जइमे ओ अपन कारोबारक हिसाब-किताब राखत।

विकास : वाह, बड़ सुन्नर योजना अछि। तेकर बाद की करब?

रामविलास : घर बनौला पछाइत दुनू बापूत कलकत्ता जाएब। ओतुक्के बैंकमे रुपैयो अछि। रुपैआ उठा इंजीनियर साहैबकेँ संग कऽ एकटा बस बेटा-ले कीनब। अपना-ले मशीन आ जखन पुतोहु कम्प्यूटर सीखने छैथ तँ हिनका-ले एकटा कम्प्यूटर कीनब। तेकर बाद जे रुपैआ उगड़त ओहो आ सभ सामानो बसेमे लादि कऽ लऽ आनब। ऐ सभ काज करैमे छह माससँ बेसीए समय लागि जाएत।

विकास : काज तँ बहुत अछि। बड़बढ़ियाँ, नहि छह मास तँ साल भरिमे सभ काज भाइये जाएत।

रामविलास : हँ, से किए ने हएत।

विकास : भने दुनू गोरे, ऐ साल भरिमे अपन-अपन काज सम्हारि कऽ लेब। बिआह तँ अखन काइये लिअ, विदागरी ऐगला साल करब। मुदा दुरागमनोक विधि समपन्ने कऽ लेब। अखन कनियाँकेँ अपन सीमा पार कऽ घुमा लेब। बिआहक काज तँ समपन्ने बुझू।

❑

शब्द संख्या : 1667

समाप्त।

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक ‘पंगु’ उपन्यासक बादक गद्य लेखन-क्रम

पंगु- (उपन्यास) लेखन तिथि: 11 मई 2018 सँ 6 जून 2018

749. ठका गेलौं- शब्द संख्या: 2052, तिथि: 18 जून 2018

750. हारि-जीत- शब्द संख्या: 3190, तिथि: 24 जून 2018

751. पनचैती पनपना गेल- शब्द संख्या: 1095, तिथि: 27 जून 2018

752. कुघाटक मृत्यु- शब्द संख्या: 1608, तिथि: 01 जुलाई 2018

753. एक तम्मा सिदहा- शब्द संख्या: 2014, तिथि: 5 जुलाई 2018

754. कियो ने पुछैए- शब्द संख्या: 1584, तिथि: 9 जुलाई 2018

755. केकरो कियो ने- शब्द संख्या: 718, तिथि: 11 जुलाई 2018

756. गपक पियाहुल लोक- शब्द संख्या: 1420, तिथि: 13 जुलाई 2018

757. उदय-प्रलय- शब्द संख्या: 1574, तिथि: 15 जुलाई 2018

758. हमरा नीक नहि लगैए- शब्द संख्या: 1458, तिथि: 19 जुलाई 2018

759. भारीपन भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1471, तिथि: 21 जुलाई 2018

760. मानसरोवरक यात्रा- शब्द संख्या: 2576, तिथि: 31 जुलाई 2018

761. करतब- शब्द संख्या: 2132, तिथि: 04 अगस्त 2018

762. आमक गाछी- एक : शब्द संख्या: 3068, तिथि: 10 अगस्त 2018

763. आमक गाछी- दू : शब्द संख्या: 3553, तिथि: 17 अगस्त 2018

764. आमक गाछी- तीन : शब्द संख्या: 2484, तिथि: 22 अगस्त 2018

765. आमक गाछी- चारि : शब्द संख्या: 2291, तिथि: 28 अगस्त 2018

766. आमक गाछी- पाँच : शब्द संख्या: 2185, तिथि: 02 सितम्बर 2018

767. आमक गाछी- छह : शब्द संख्या: 4701, चोरा चान 12 सितम्बर 2018

768. आमक गाछी- सात : शब्द संख्या: 1805, तिथि: 15 सितम्बर 2018

769. अनचोकक अन्हार- शब्द संख्या: 924, तिथि: 19 सितम्बर 2018

770. आमक गाछी, आठ- शब्द संख्या: 1917, तिथि: 25 सितम्बर 2018

771. अपन बुधियारी अपने खेलक- शब्द संख्या: 1897, ति.: 23 सितम्बर 2018

772. आमक गाछी, नअ- शब्द संख्या: 1914, तिथि: 30 सितम्बर 2018

773. चटवाह- शब्द संख्या- 2134, तिथि: 4 अक्टूबर 2018

774. भगैतिया- शब्द संख्या: 2177, तिथि: 8 अक्टूबर 2018

775. अधमरू साँपक फुफकार- शब्द संख्या: 2196, तिथि: 12 अक्टूबर 2018

776. यादास्त- शब्द संख्या: 1870, तिथि: 15 अक्टूबर 2018

777. हमर मेला चोरि भS गेल- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 19 अक्टूबर 2018

778. गरदैन हलैल गेल- शब्द संख्या: 1922, तिथि: 23 अक्टूबर 2018

779. दिवालीक दीप- शब्द संख्या: 2422, तिथि: 29 अक्टूबर 2018

780. हारि केना मानब- शब्द संख्या: 2054, तिथि: 02 नवम्बर 2018

781. अप्पन गाम- शब्द संख्या: 1940, तिथि: 06 नवम्बर 2018

782. परिछन- शब्द संख्या: 2661, तिथि: 11 नवम्बर 2018

783. झूठ सपना- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 15 नवम्बर 2018

784. जिनगीक अन्तिम फल- शब्द संख्या: 2530, तिथि: 19 नवम्बर 2018

785. चरणबाबूक टैक्सी- शब्द संख्या: 2381, तिथि: 24 नवम्बर 2018

786. पुस्तकालय- शब्द संख्या: 2333, तिथि: 29 नवम्बर 2018

787. विचारभेद- शब्द संख्या: 2553, तिथि: 04 दिसम्बर 2018

788. एकरवा बानर- शब्द संख्या: 2793, तिथि: 09 दिसम्बर 2018

789. फकीरबा स्थान- शब्द संख्या: 2759, तिथि: 14 दिसम्बर 2018

790. रंगमे भंग- शब्द संख्या: 2237, तिथि: 20 दिसम्बर 2018

791. खिलतोड़ भूमि- शब्द संख्या: 2590, तिथि: 17 जनवरी 2019

792. बैगनक बगान बनरा गेल, तूँ मुँह तकै छह- श. 2590, ति. 22 जनवरी 2019

793. मटरक अजोह दाना- शब्द संख्या: 3473, तिथि: 03 फरवरी 2019

794. फुइसिक रग्गड़- शब्द संख्या: 2225, तिथि: 07 फरवरी 2019

795. उखमज- शब्द संख्या: 3964, तिथि: 16 फरवरी 2019

796. एकभग्गू बेटा- शब्द संख्या: 2286, तिथि: 19 फरवरी 2019

797. अगुताइ भेल- शब्द संख्या: 1054, तिथि: 22 फरवरी 2019

798. थैंक्यू पापा- शब्द संख्या: 965, तिथि: 24 फरवरी 2019

799. किसुनपुराक हाट- शब्द संख्या: 995, तिथि: 25 फरवरी 2019

800. धनखेतीक बैगन- शब्द संख्या: 1051, तिथि: 28 फरवरी 2019

801. चितवनक शिकार- शब्द संख्या: 1071, तिथि: 02 मार्च 2019

802. बुढ़ भेलौं तँ दुइर गेलौं- शब्द संख्या: 1086, तिथि: 04 मार्च 2019

803. धुआ साड़ी- शब्द संख्या: 1132, तिथि: 06 मार्च 2019

804. राजरोग- शब्द संख्या: 1274, तिथि: 10 मार्च 2019

805. संकल्प- शब्द संख्या: 1520, तिथि: 12 मार्च 2019

806. एकटा नमहर दुख मेटा गेल- शब्द संख्या: 1349, तिथि: 15 मार्च 2019

807. काजक मोल- शब्द संख्या: 1090, तिथि: 16 मार्च 2019

808. एतए बसव कठिन अछि- शब्द संख्या: 1010, तिथि: 19 मार्च 2019

809. स्वनिर्मित जिनगी- शब्द संख्या: 1091, तिथि: 22 मार्च 2019

810. कपटलालक मृत्यु- शब्द संख्या: 987, तिथि: 25 मार्च 2019

811. गामक ढहल समाज- शब्द संख्या: 966, तिथि: 27 मार्च 2019

812. लजगर लोक- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 29 मार्च 2019

813. खरिहाँन उपैट गेल- शब्द संख्या: 1218, तिथि: 02 अप्रैल 2019

814. पगलपन- शब्द संख्या: 1113, तिथि: 04 अप्रैल 2019

815. छलाननक सराध- शब्द संख्या: 996, तिथि: 06 अप्रैल 2019

816. छाती बज्जर केलौं- शब्द संख्या: 1402, तिथि: 08 अप्रैल 2019

817. नाँहकमे दोख- शब्द संख्या: 1463, तिथि: 16 अप्रैल 2019

818. सग्गा पिऔज- शब्द संख्या: 1530, तिथि: 20 अप्रैल 2019

819. गाछसँ नमहर फड़- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 22 अप्रैल 2019

820. जिनगीमे जान आएल- शब्द संख्या: 1198, तिथि: 25 अप्रैल 2019

821. जे संग नइ औत ओकरा संग नइ जेबै- श.सं.: 1080, ति.: 26 अप्रैल 2019

822. चौरस खेतक चौरस उपज- शब्द संख्या: 998, तिथि: 29 अप्रैल 2019

823. सिकिया नेता- शब्द संख्या: 1023, तिथि: मजदूर दिवस, 2019

824. मुँह खुजिते नाक कटि गेल- शब्द संख्या: 1475, तिथि: 04 मई 2019

825. जेकरे भर तेकरे डर- शब्द संख्या: 1214, तिथि: 06 मई 2019

826. ललियाएल चेहरा करियाएल मन- शब्द संख्या: 1194, तिथि: 09 मई 2019

827. पुरुखक भर- शब्द संख्या: 1109, तिथि: 12 मई 2019

828. भकमोड़मे पड़ि गेलौं- शब्द संख्या: 1411, तिथि: 15 मई 2019

829. अपन इमान मरि गेल- शब्द संख्या: 1071, तिथि: 17 मई 2019

830. गामक रूप बदैल देब- शब्द संख्या: 1004, तिथि: 19 मई 2019

831. कुभेला- शब्द संख्या: 992, तिथि: 21 मई 2019

832. देखौंस- शब्द संख्या: 945, तिथि: 23 मई 2019

833. समयसँ पहिने चेत किसान- शब्द संख्या: 1326, तिथि: 25 मई 2019

834. काजक मेहपन- शब्द संख्या: 947, तिथि: 27 मई 2019

835. पनरह किलोक कदीमा- शब्द संख्या: 941, तिथि: 29 मई 2019

836. फेर नढ़रो बेल तर जेती- शब्द संख्या: 1553, तिथि: 01 जून 2019

837. काजक धुनि- शब्द संख्या: 1065, तिथि: 03 जून 2019

838. सोरहामे सुर्रा लगि गेल- शब्द संख्या: 1618, तिथि: 06 जून 2019

839. अगराही- शब्द संख्या: 944, तिथि: 08 जून 2019

840. जेकरे-ले चोरि केलौं सएह कहैए चोरा- श.सं.: 1556, तिथि: 11 जून 2019

841. भौक- शब्द संख्या: 1403, तिथि: 14 जून 2019

842. मनतरक पावर- शब्द संख्या: 1598, तिथि: 17 जून 2019

843. हाल-चाल- शब्द संख्या: 1519, तिथि: 20 जून 2019

844. अधमरु साँपक डँस- शब्द संख्या: 1525, तिथि: 23 जून 2019

845. के मानत?- शब्द संख्या: 1721, तिथि: 29 जून 2019

846. दियादीक फेड़- शब्द संख्या: 1412, तिथि: 03 जुलाई 2019

847. वाह रे आदत- शब्द संख्या: 1455, तिथि: 06 जुलाई 2019

848. कटबी सुइद- शब्द संख्या: 1435, तिथि: 09 जुलाई 2019

849. तिलकौआ छत्ता- शब्द संख्या: 1948, तिथि: 13 जुलाई 2019

850. अपने जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1539, तिथि: 16 जुलाई 2019

851. कलेश- शब्द संख्या: 1509, तिथि: 20 जुलाई 2019

852. गामक आशा टुटि गेल- शब्द संख्या: 2338, तिथि: 24 जुलाई 2019

853. आब इज्जत नइ बँचत- शब्द संख्या: 2046, तिथि: 28 जुलाई 2019

854. अँगनाक बीरार- शब्द संख्या: 1856, तिथि: 31 जुलाई 2019

855. भेँट-घाँट- शब्द संख्या: 1884, तिथि: 03 अगस्त 2019

856. कोसा- शब्द संख्या: 1999, तिथि: 07 अगस्त 2019

857. दहेजक गाए- शब्द संख्या: 2076, तिथि: 15 अगस्त 2019

858. चलती- शब्द संख्या: 1770, तिथि: 18 अगस्त 2019

859. तीन बुड़िवान- शब्द संख्या: 1901, तिथि: 21 अगस्त 2019

860. एकाधिकारी जाति- शब्द संख्या: 2198, तिथि: 24 अगस्त 2019

861. अपन करखन्ना- शब्द संख्या: 1704, तिथि: 28 अगस्त 2019

862. लड़कपन- शब्द संख्या: 2150, तिथि: 03 अक्टूबर 2019

863. कुदृष्टि- शब्द संख्या: 2435, तिथि: 08 अक्टूबर 2019

864. हकार- शब्द संख्या: 2012, तिथि: 16 अक्टूबर 2019

865. दलखिच्चड़मे घी- शब्द संख्या: 2286, तिथि: 25 अक्टूबर 2019

866. दोहरी दहार- शब्द संख्या: 2154, तिथि: 02 नवम्बर 2019

867. पसेनाक मोल- शब्द संख्या: 1748, तिथि: 06 नवम्बर 2019

868. बुढ़ापा- शब्द संख्या: 2122, तिथि: 10 नवम्बर 2019

869. पुरना घराड़ी- शब्द संख्या: 2092, तिथि: 14 नवम्बर 2019

870. जगरनथिया भोज- शब्द संख्या: 2416, तिथि: 18 नवम्बर 2019

871. कृषियोग- शब्द संख्या- शब्द संख्या: 2010, तिथि: 22 नवम्बर 2019

872. काजक रोप- शब्द संख्या: 2679, तिथि: 21 दिसम्बर 2019

873. खटसमाद- शब्द संख्या: 2909, तिथि: 27 दिसम्बर 2019

874. जीबठपन- शब्द संख्या: 2577, तिथि: 02 जनवरी 2020

875. गोटी लाल- शब्द संख्या: 2364, तिथि: 06 जनवरी 2020

876. अपनाकेँ चिन्हैत चलिहह- शब्द संख्या: 2361, तिथि: 11 जनवरी 2020

877. दहेज- शब्द संख्या: 2431, तिथि: 15 जनवरी 2020

878. जेहेन मति तेहेन गति- शब्द संख्या: 2630, तिथि: 21 जनवरी 2020

879. केते लग केते दूर- शब्द संख्या: 2660, तिथि: 31 जनवरी 2020

880. अपन कर्तव्य आकि उपकार- शब्द संख्या: 2410, तिथि: 05 फरवरी 2020

881. जिनगी भौर भेलह हेन- शब्द संख्या: 2789, तिथि: 10 फरवरी 2020

882. वसन्त पंचमी- शब्द संख्या: 2767, तिथि: 16 फरवरी 2020

883. चुटका सुतरल- शब्द संख्या: 2445, तिथि: 21 फरवरी 2020

884. हारल चेहरा जीतल रूप- शब्द संख्या: 2255, तिथि: 25 फरवरी 2020

885. अग्नि परीछा- शब्द संख्या: 3097, तिथि: 01 मार्च 2020

886. आसीरवचन- शब्द संख्या: 2564, तिथि: 06 मार्च 2020

887. दहिबरी- शब्द संख्या: 2560, तिथि: 12 मार्च 2020

888. सघन बन- शब्द संख्या: 2697, तिथि: 17 मार्च 2020

889. हुसैत लोक- शब्द संख्या: 2602, तिथि: 23 मार्च 2020

890. हुसि गेलौं- शब्द संख्या: 2574, तिथि: 28 मार्च 2020

891. झूठक झालि- शब्द संख्या: 2352, तिथि: 01 अप्रैल 2020

892. दुष्टपन- शब्द संख्या: 2317, तिथि: 06 अप्रैल 2020

893. रहै जोकर परिवार- शब्द संख्या: 2297, तिथि: 15 अप्रैल 2020

894. परिपक्व निरलज- शब्द संख्या: 2232, तिथि: 20 अप्रैल 2020

895. अप्पन काज अपने चिन्हू- शब्द संख्या: 2278, तिथि: 24 अप्रैल 2020

896. लजाउ काज- शब्द संख्या: 2394, तिथि: 02 मई 2020

897. सुचिता- एक : शब्द संख्या: 4352, तिथि: 30 मई 2020

898. सुचिता- दू : शब्द संख्या: 4459, तिथि: 08 जून 2020

899. सुचिता- तीन : शब्द संख्या: 4672, तिथि: 15 जून 2020

900. सुचिता- चारि : शब्द संख्या: 4022, तिथि: 02 जुलाई 2020

901. सुचिता- पाँच : शब्द संख्या: 2757, तिथि: 08 जुलाई 2020

902. सुचिता- छह : शब्द संख्या: 3188, तिथि: 14 जुलाई 2020

903. सुचिता- सात : शब्द संख्या: 4483, तिथि: 24 जुलाई 2020

904. सीमावद्ध जीवन- शब्द संख्या: 2420, तिथि: 01 अगस्त 2020

905. कर्ताक रंग कर्मक संग- शब्द संख्या: 2757, तिथि: 06 अगस्त 2020

906. जिनगीक हिसाब- शब्द संख्या: 2711, तिथि: 11 अगस्त 2020

907. अपना जनैत- शब्द संख्या: 2881, तिथि: 16 अगस्त 2020

908. सुदृढ़ जिनगी- शब्द संख्या: 3460, तिथि: 23 अगस्त 2020

908. मुराम जगह- शब्द संख्या: 3575, तिथि: 31 अगस्त 2020

909. गामक सूरत बदैल गेल : शब्द संख्या: 3340, तिथि: 07 सितम्बर 2020

910. दोसर रस्ता नहि- शब्द संख्या: 2808, तिथि: 13 सितम्बर 2020

911. विचारधाराक भथान- शब्द संख्या: 2659, तिथि: 19 सितम्बर 2020

912. परिवार बिलैट गेल- शब्द संख्या: 3132, तिथि: 26 सितम्बर 2020

913. अनचोकक इजोत- शब्द संख्या: 3339, तिथि: 03 अक्टूबर 2020

914. केलहा सभ पानिमे गेल- शब्द संख्या: 3199, तिथि: 09 अक्टूबर 2020

915. पएर तरक धरती डोलि गेल- शब्द संख्या: 2346, तिथि: 15 अक्टूबर 2020

916. जबुरिया कागज- शब्द संख्या: 3366, तिथि: 22 अक्टूबर 2020

917. बेटाक बिआह- शब्द संख्या: 3734, तिथि: 30 अक्टूबर 2020

918. जीवनमे जान आएल- शब्द संख्या: 3325, तिथि: 06 नवम्बर 2020

919. पोसलाक फल- शब्द संख्या: 3039, तिथि: 12 नवम्बर 2020

920. अन्तिम परीक्षा- शब्द संख्या: 2933, तिथि: 18 नवम्बर 2020

921. गाम आब ओ गाम रहल! - शब्द संख्या: 3038, तिथि: 24 नवम्बर 2020

922. जिनकर जीत तिनकर माला- शब्द सं.: 3025, तिथि: 30 नवम्बर 2020

923. नवका लोक : शब्द संख्या- 3215, तिथि: 06 दिसम्बर 2020

924. काजक उत्तर काज- शब्द संख्या: 3366, तिथि: 12 दिसम्बर 2020

925. घरक खर्च- शब्द संख्या: 3731, तिथि: 19 दिसम्बर 2020

926. समाजक भागे- शब्द संख्या: 3338, तिथि: 25 दिसम्बर 2020

927. बाबा हाथक कोदारि हल्लुक- शब्द संख्या: 4091, तिथि: 02 जनवरी 2021

928. परिवारक विघटन- शब्द संख्या: 2143, तिथि: 07 जनवरी 2021

929. हारल विचार- शब्द संख्या: 3657, तिथि: 14 जनवरी 2021

930. मोड़पर- एक : शब्द संख्या: 4422, तिथि: 25 जनवरी 2021

931. मोड़पर- दू : शब्द संख्या: 3734, तिथि: 01 फरवरी 2021

932. मोड़पर- तीन : शब्द संख्या: 3157, तिथि: 08 फरवरी 2021

933. मोड़पर- चारि : शब्द संख्या: 4844, तिथि: 19 फरवरी 2021

934. मोड़पर- पाँच : शब्द संख्या: 6382, तिथि: 06 मार्च 2021

935. मोड़पर- छह : शब्द संख्या: 2150, तिथि: 10 मार्च 2021

936. मोड़पर- सात : शब्द संख्या: 788, तिथि: 11 मार्च 2021

937. मोड़पर- आठ : शब्द संख्या: 927, तिथि: 12 मार्च 2021

938. मोड़पर- नअ : शब्द संख्या: 1127, तिथि: 14 मार्च 2021

939. मोड़पर- दस : शब्द संख्या: 585, तिथि: 15 मार्च 2021

940. मोड़पर- एगारह : शब्द संख्या: 265, तिथि: 16 मार्च 2021

941. संकल्प- एक : शब्द संख्या: 2988, तिथि: 25 मार्च 2021

942. संकल्प- दू : शब्द संख्या: 1903, तिथि: 29 मार्च 2021

943. संकल्प- तीन : शब्द संख्या: 3101, तिथि: 04 अप्रैल 2021

944. संकल्प- चारि : शब्द संख्या: 3197, तिथि: 10 अप्रैल 2021

945. संकल्प- पाँच : शब्द संख्या: 3202, तिथि: 17 अप्रैल 2021

946. संकल्प- छह : शब्द संख्या: 2026, तिथि: 21 अप्रैल 2021

947. संकल्प- सात : शब्द संख्या: 3139, तिथि: 29 अप्रैल 2021

948. संकल्प- आठ : शब्द संख्या: 2440, तिथि: 04 मई 2021

949. संकल्प- नअ : शब्द संख्या: 2368, तिथि: 08 मई 2021

950. संकल्प- दस : शब्द संख्या: 3977, तिथि: 15 मई 2021

951. अन्तिम क्षण- एक : शब्द संख्या: 2874, तिथि: 20 मई 2021

952. अन्तिम क्षण- दू : शब्द संख्या: 6126, तिथि: 04 जून 2021

953. अन्तिम क्षण- तीन : शब्द संख्या: 3669, तिथि: 12 जून 2021

954. अन्तिम क्षण- चारि : शब्द संख्या: 5817, तिथि: 24 जून 2021

955. अन्तिम क्षण- पाँच : शब्द संख्या: 4916, तिथि: 04 जुलाई 2021

956. परिवारे गजपटा गेल : शब्द संख्या: 1881, तिथि: 09 जुलाई 2021

957. समयक थपेड़मे- शब्द संख्या: 1798, तिथि: 14 जुलाई 2021

958. की सत्त की फुइस?- शब्द संख्या: 1793, तिथि: 17 जुलाई 2021

959. कुभाँज समयक भाँजमे- शब्द संख्या: 1671, तिथि: 21 जुलाई 2021

960. देखल गाम- शब्द संख्या: 1737, तिथि: 25 जुलाई 2021

961. अपना ले- शब्द संख्या: 1903, तिथि: 03 अगस्त 2021

962. तीन धक्का- शब्द संख्या: 1759, तिथि: 06 अगस्त 2021

963. अजीब खेल- शब्द संख्या: 2362, तिथि: 20 अगस्त 2021

964. नीक ठकान ठकेलौं- शब्द संख्या: 2798, तिथि: 25 अगस्त 2021

965. केकरो भरोस- शब्द संख्या: 2237, तिथि: 31 अगस्त 2021

966. बाड़ी भेल धनहर- शब्द संख्या: 1820, तिथि: 04 सितम्बर 2021

967. कुण्ठा- एक : शब्द संख्या: 2284, तिथि: 15 सितम्बर 2021

968. कुण्ठा- दू : शब्द संख्या: 2150, तिथि: 23 सितम्बर 2021

969. कुण्ठा- तीन : शब्द संख्या: 1324, तिथि: 29 सितम्बर 2021

970. कुण्ठा- चारि : शब्द संख्या: 4458, तिथि: 10 अक्टूबर 2021

971. कुण्ठा- पाँच : शब्द संख्या: 2673, तिथि: 18 अक्टूबर 2021

972. कुण्ठा- छह : शब्द संख्या: 2852, तिथि: 24 अक्टूबर 2021

973. कुण्ठा- सात : शब्द संख्या: 1901, तिथि: 18 अक्टूबर 2021

974. कुण्ठा- आठ : शब्द संख्या: 1948, तिथि: 01 नवम्बर 2021

975. कुण्ठा- नअ : शब्द संख्या: 1901, तिथि: 05 नवम्बर 2021

976. कुण्ठा- दस : शब्द संख्या: 2022, तिथि: 09 नवम्बर 2021

977. सुदृढ़ जीवन- शब्द संख्या: 2587, तिथि: 14 नवम्बर 2021

978. सागवानक बागवानी- शब्द संख्या: 2369, तिथि: 05 दिसम्बर 2021

979. बिनु खुट्टाक गाए- शब्द संख्या: 2191, तिथि: 10 दिसम्बर 2021

980. जीवनक कर्म जीवनक मर्म- शब्द संख्या: 2893, तिथि: 16 दिसम्बर 2021

981. घरैया मूस- शब्द संख्या: 2791, तिथि: 22 दिसम्बर 2021

982. टुटि कऽ खसि पड़लैन- शब्द संख्या: 2182, तिथि: 29 दिसम्बर 2021

983. मृत्युसजियापर पड़ल विवेक बाबा- शब्द सं.: 2294, ति. : 03 जनवरी 2022

984. संचरण- शब्द संख्या: 2477, तिथि: 08 जनवरी 2022

985. जिनगीसँ प्रेम- शब्द संख्या: 2278, तिथि: 14 जनवरी 2022

986. परिवारे बगैद गेल- शब्द संख्या: 2299, तिथि: 21 फरवरी 2022

987. जिनगी पिछैड़ गेल- शब्द संख्या: 2859, तिथि: 02 मार्च 2022

988. श्रमहीन- शब्द संख्या: 3105, तिथि: 08 मार्च 2022

989. समुद्रलंघन- शब्द संख्या: 3274, तिथि: 21 मार्च 2022

990. परिवारक भार- शब्द संख्या: 2402, तिथि: 28 मार्च 2022

991. हीन-हीनाइत विवेक- शब्द संख्या: 2347, तिथि: 02 अप्रैल 2022

992. चेहराक निखार- शब्द संख्या: 2496, तिथि: 06 अप्रैल 2022

993. भरि मन काज- शब्द संख्या: 2281, तिथि: 12 अप्रैल 2022

994. विचारे मरि गेल- शब्द संख्या: 2302, तिथि: 21 अप्रैल 2022

995. मृत्युक भय मेटा गेल- शब्द संख्या: 2536, तिथि: 26 अप्रैल 2022

996. घरक बात- शब्द संख्या: 2686, तिथि: 01 मई (मजदूर दिवस) 2022

997. अप्पन दलान- शब्द संख्या: 2480, तिथि: 06 मई 2022

998. कंजूसपन- शब्द संख्या: 2589, तिथि: 11 मई 2022

999. आएल आशा चलि गेल- शब्द संख्या: 1478, तिथि: 15 मई 2022

1000. अकारण- शब्द संख्या: 1918, तिथि: 18 मई 2022

1001. अछोप- शब्द संख्या: 1590, तिथि: 21 मई 2022

1002. अप्पन बेइमानी- शब्द संख्या: 1560, तिथि: 24 मई 2022

1003. उनटन- शब्द संख्या: 1581, तिथि: 24 मई 2022

1004. अर्द्धांगिनी- शब्द संख्या: 1511, तिथि: 30 मई 2022

995. बहवाँइर- शब्द संख्या: 1538, तिथि: 04 जून 2022

1006. पाक मास्टर- शब्द संख्या: 1387, तिथि: 07 जून 2022

1007. साइंस टीचर- शब्द संख्या: 1301, तिथि: 10 जून 2022

1008. इज्जत लS लेलक- शब्द संख्या: 1367, तिथि: 13 जून 2022

1009. निसगर पान- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 15 जून 2022

1010. विरोध- शब्द संख्या: 1452, तिथि: 19 जून 2022

1011. जीवन दान- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 26 जून 2022

1012. बाग-बगिया- शब्द संख्या: 1272, तिथि: 30 जून 2022

1013. विश्वास पात्र- शब्द संख्या: 1374, तिथि: 02 जुलाई 2022

1014. विचारक टिटकारी- शब्द संख्या: 1335, तिथि: 05 जुलाई 2022

1015. लत- शब्द संख्या: 1375, तिथि: 08 जुलाई 2022

1016. जीवन खटाइमे पड़ि गेल- शब्द संख्या: 1220, तिथि: 11 जुलाई 2022

1017. कर्ज- शब्द संख्या: 1256, तिथि: 13 जुलाई 2022

1018. बहादुरी- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 16 जुलाई 2022

1019. हमरो खगता छै- शब्द संख्या: 1178, तिथि: 20 जुलाई 2022

1020. सपना- शब्द संख्या: 1241, तिथि: 23 जुलाई 2022

1021. संगे-संग एलौं संगिया मरि गेल हम भुतिआइ छी- श.: 1303, 26.7.2022

1022. उवाणि- शब्द संख्या: 1264, तिथि: 29 जुलाई 2022

1023. विचारक प्रबलता- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 01 अगस्त 2022

1024. अपन रचित रचना- शब्द संख्या: 1481, तिथि: 07 अगस्त 2022

1025. थाहल संगी- शब्द संख्या: 1331, तिथि: 10 अगस्त 2022

1026. आत्मबल- शब्द संख्या: 1267, तिथि: 13 अगस्त 2022

1027. विश्वासहीन- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 16 अगस्त 2022

1028. बुलन्दी- शब्द संख्या: 1329, तिथि: 19 अगस्त 2022

1029. अप्पन साती- शब्द संख्या: 1287, तिथि: 22 अगस्त 2022

1030. खिच्चड़ि- शब्द संख्या: 1624, तिथि: 26 अगस्त 2022

1031. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1364, तिथि: 01 सितम्बर 2022

1032. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1357, तिथि: 01 सितम्बर 2022

1033. कनियेँ-मनियेँ पूँजी- शब्द संख्या: 1315, तिथि: शिक्षक दिवस 2022

1034. पुरुखढौह- शब्द संख्या: 1263, तिथि: 08 सितम्बर 2022

1035. सिमानक झगड़ा- शब्द संख्या: 1232, तिथि: 13 सितम्बर 2022

1036. जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1312, तिथि: 16 सितम्बर 2022

1037. परिवारक योग- शब्द संख्या: 1295, तिथि: 19 सितम्बर 2022

1038. मनुक्ख खौक- शब्द संख्या: 1183, तिथि: 25 सितम्बर 2022

1039. साहित्यकारक विवेक- शब्द संख्या: 1141, तिथि: 28 सितम्बर 2022

1040. भाषाक बेथा- शब्द संख्या: 1231, तिथि: 01 अक्टूबर 2022

1041. बुझबे ने केलिऐ- शब्द संख्या: 1227, तिथि: 05 अक्टूबर 2022

1042. जीवनक सम्बन्ध- शब्द संख्या: 1187, तिथि: 08 अक्टूबर 2022

1043. गैंचाह लोक- शब्द संख्या: 1113, तिथि: 11 अक्टूबर 2022

1044. जिनगीकेँ पटैक भगलौं- शब्द संख्या: 1258, तिथि: 14 अक्टूबर 2022

1045. अन्तिम आशा- शब्द संख्या: 1365, तिथि: 17 अक्टूबर 2022

1046. गजपट मारि- शब्द संख्या: 1327, तिथि: 20 अक्टूबर 2022

1047. कन्हजोड़- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 23 अक्टूबर 2022

1048. अनहोनी- शब्द संख्या: 1308, तिथि: 26 अक्टूबर 2022

1049. होनी- शब्द संख्या: 1236, तिथि: 29 अक्टूबर 2022

1050. भवितव्य- शब्द संख्या: 1130, तिथि: 02 नवम्बर 2022

1051. ओसचट बीमारी : शब्द संख्या: 1260, तिथि: 05 नवम्बर 2022

1052. पुत्र परीक्षा : शब्द संख्या: 1286, तिथि: 09 नवम्बर 2022

1053. अप्पन मन बुझाएब- शब्द संख्या: 1294, तिथि: 12 नवम्बर 2022

1054. जड़ौर- शब्द संख्या: 1304, तिथि: 15 नवम्बर 2022

1055. अलोपित- शब्द संख्या: 1360, तिथि: 18 नवम्बर 2022

1046. कुमहरक बतिया- शब्द संख्या: 1240, तिथि: 21 नवम्बर 2022

1057. सिमानक आड़ि- शब्द संख्या: 1289, तिथि: 26 नवम्बर 2022

1058. नब बनक नब फल- शब्द संख्या: 1412, तिथि: 30 नवम्बर 2022

1059. सुमारक- शब्द संख्या: 1246, तिथि: 04 दिसम्बर 2022

1060. अन्तिम भेँट- शब्द संख्या: 1277, तिथि: 08 दिसम्बर 2022

1061. अनहरिया- शब्द संख्या: 1356, तिथि: 12 दिसम्बर 2022

1062. निरन्तर- शब्द संख्या: 3025, तिथि: 21 दिसम्बर 2022

1063. शॉर्टकट रास्ता- शब्द संख्या: 1620, तिथि: 26 दिसम्बर 2022

1064. अपेछा टुटि गेल- शब्द संख्या: 1739, तिथि: 30 दिसम्बर 2022

1065. सुनयना बेटी : 01- शब्द संख्या: 1728, तिथि: 05 जनवरी 2023

1066. सुनयना बेटी : 02- शब्द संख्या: 3540, तिथि: 14 जनवरी 2023

1067. सुनयना बेटी : 03- शब्द संख्या: 3722, तिथि: 25 जनवरी 2023

1068. सुनयना बेटी : 04- शब्द संख्या: 1987, तिथि: 30 जनवरी 2023

1069. सुनयना बेटी : 05- शब्द संख्या: 3802, तिथि: 06 फरवरी 2023

1070. सुनयना बेटी : 06- शब्द संख्या: 1821, तिथि: 10 फरवरी 2023

1071. सुनयना बेटी : 07- शब्द संख्या: 925, तिथि: 12 फरवरी 2023

1072. सुनयना बेटी : 08- शब्द संख्या: 2999, तिथि: 18 फरवरी 2023

1073. सुनयना बेटी : 19- शब्द संख्या: 1926, तिथि: 22 फरवरी 2023

1074. सुनयना बेटी : 10- शब्द संख्या: 1953, तिथि: 26 फरवरी 2023

1075. आब नइ जीब- शब्द संख्या: 2097, तिथि: 2 मार्च 2023

1076. सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल- शब्द संख्या: 2013, तिथि: 06 मार्च 2023

1077. धुरफन्ना लोक- शब्द संख्या: 1891, तिथि: 10 मार्च 2023

1078. घरदेखी- शब्द संख्या: 1846, तिथि: 14 मार्च 2023

1079. बासभूमि- शब्द संख्या: 2639, तिथि: 31 मार्च 2023

1080. इज्जत पर पड़ि गेल- शब्द संख्या: 2698, तिथि: 07 अप्रैल 2023

1081. अहीं जीतलौं- शब्द संख्या: 2884, तिथि: 13 अप्रैल 2023

1082. गामसँ गाए उपैट गेल- शब्द संख्या: 2454, तिथि: 20 अप्रैल 2023

1083. भारक बड़बड़िया- शब्द संख्या: 1727, तिथि: 24 अप्रैल 2023

1084. रूपैँ बदैल गेल- शब्द संख्या: 1736, तिथि: 28 अप्रैल 2023

1085. वंशक धर्म- शब्द संख्या: 1881, तिथि: 02 मई 2023

1086. उपराग- शब्द संख्या: 1358, तिथि: 05 मई 2023

1087. केकरा भगाउ आ केकरा बसाउ- शब्द संख्या: 1390, तिथि: 08 मई 2023

1088. खीरा लत्तीमे रोजगार- शब्द संख्या: 1377, तिथि: 11 मई 2023

1089. टकुआटान- शब्द संख्या: 2302, तिथि: 19 मई 2023

1090. पोस्टमार्टम- शब्द संख्या: 1852, तिथि: 23 मई 2023

1091. ऐ सालक नाह बुड़ि गेल- शब्द संख्या: 1761, तिथि: 27 मई 2023

1092. सामंजस्य- शब्द संख्या: 1868, तिथि: 01 जून 2023
1093. महींसवारक गाम- शब्द संख्या: 1337, तिथि: 04 जून 2023
1094. दसअना छहअना- शब्द संख्या: 1243, तिथि: 07 जून 2023
1095. वाह रे हम- शब्द संख्या: 1291, तिथि: 10 जून 2023
1096. एक जूम तमाकुल- शब्द संख्या: 1290, तिथि: 13 जून 2023
1097. चपरासी गाम- शब्द संख्या: 1201, तिथि: 17 जून 2023
1098. बनरफाँस- शब्द संख्या: 1279, तिथि: 19 जून 2023
1099. हँस्सा ठक- शब्द संख्या: 1889, तिथि: 26 जून 2023
1100. विश्वासू मन- शब्द संख्या: 1724, तिथि: 30 जून 2023
1101. चोरनी पिल्ली- शब्द संख्या: 1883, तिथि: 04 जुलाई 2023
1102. गामक जमीने पथरा गेल- शब्द संख्या: 1837, तिथि: 08 जुलाई 2023
1103. एकलव्यपन- शब्द संख्या: 2087, तिथि: 14 जुलाई 2023
1104. केलहा साफल- शब्द संख्या: 2102, तिथि: 19 जुलाई 2023
1105. त्रिशुलपर लटकल गाम- शब्द संख्या: 2007, तिथि: 23 जुलाई 2023
1106. त्रिशंकु गाम- शब्द संख्या: 2151, तिथि: 28 जुलाई 2023
1107. चारिम कनियाँ- शब्द संख्या: 1995, तिथि: 01 अगस्त 2023
1108. वंश नाश- शब्द संख्या: 1988, तिथि: 06 अगस्त 2023
1109. लोक लाज- शब्द संख्या: 1781, तिथि : 10 अगस्त 2023
1110. धानक कमठौन- शब्द संख्या: 1580, तिथि : 30 अगस्त 2023
1111. एक चुटकी खुशी- शब्द संख्या: 2053, तिथि : 02 सितम्बर 2023
1112. अनका सिर- शब्द संख्या: 1801, तिथि: शिक्षक दिसव 2023
1113. समयक फेड़- शब्द संख्या: 1531, तिथि: 08 सितम्बर 2023
1114. कोढ़ि- शब्द संख्या: 1511, तिथि: 11 सितम्बर 2023
1115. मुहाँ-ठुठ्ठी- शब्द संख्या: 1167, तिथि: 13 सितम्बर 2023
1116. औनाकऽ मरए लगलौं- शब्द संख्या: 1060, तिथि: 13 सितम्बर 2023
1117. जेहेन आँखि तेहेन पाँखि- शब्द संख्या: 1077, तिथि: 17 सितम्बर 2023
1118. चौरचनक केरा- शब्द संख्या: 1185, तिथि: 19 सितम्बर 2023

1119. सुख-दुख- शब्द संख्या: 1708, तिथि: 04 अक्टूबर 2023

1120. दुख-सुख- शब्द संख्या: 1629, तिथि: 07 अक्टूबर 2023

1121. जीवन की आ जीवनक उद्देश्य की- श. सं.: 1571, ति.: 10 अक्टूबर 2023

1122. अंधविश्वास- शब्द संख्या: 1509, तिथि: 13 अक्टूबर 2023

1123. बखेरिया लोक- शब्द संख्या: 1528, तिथि: 16 अक्टूबर 2023

1124. नव जीवन- शब्द संख्या: 1620, तिथि: 19 अक्टूबर 2023

1125. प्रीति- शब्द संख्या: 1610, तिथि: 19 अक्टूबर 2023

1126. पुरुषार्थ- शब्द संख्या: 1667, तिथि: 25 अक्टूबर 2023

1127. मन टँगि गेल- शब्द संख्या: 1702, तिथि: 28 अक्टूबर 2023

1128. नियति आ पुरुषार्थ- शब्द संख्या: 1714, तिथि: 31 अक्टूबर 2023

1129. जे ननू से गर्भहि ननू- शब्द संख्या: 1639, तिथि: 03 नवम्बर 2023

1130. पुरुखक डीह- शब्द संख्या: 1666, तिथि: 06 नवम्बर 2023

1131. पाशापर- शब्द संख्या: 1707, तिथि: 09 नवम्बर 2023

1132. संचरण- शब्द संख्या: 1743, तिथि: 14 नवम्बर 2023

1133. कंजूस- शब्द संख्या: 1636, तिथि: 17 नवम्बर 2023

1134. बाबाक पौती- शब्द संख्या: 1640, तिथि: 20 नवम्बर 2023

1135. भँसिया गेलौं- शब्द संख्या: 1614, तिथि: 23 नवम्बर 2023

1136. उबारि देलौं- शब्द संख्या: 1645, तिथि: 28 नवम्बर 2023

1137. श्रद्धा- शब्द संख्या: 1619, तिथि: 01 दिसम्बर 2023

1138. केकरोपर आश्रित- शब्द संख्या: 1641, तिथि: 04 दिसम्बर 2023

1139. समैया लुच्चा- जारी...

❑❑❑
❑❑
❑

Notes